राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

*

राजस्थान सरकार द्वारा प्रस्थापित

राजस्थानमें प्राचीन साहित्यके संग्रह, संरक्षण, संशोधन और प्रकाशन कार्यका महत् प्रतिष्ठान

*

राजस्थानका सुविशाल प्रदेश, अनेकानेक शताब्दियोंसे भारतका एक हृदयस्वरूप स्थान वना हुआ होनेसे विभिन्न जनपदीय संस्कृतियोंका यह एक केन्द्रीय एवं समन्वय भूमि सा संस्थान बना हुआ है। प्राचीनतम आदिकालीन वनवासी भिल्लादि जातियोंके साथ, इतिहासयुगीन आर्य जातिके भिन्न भिन्न जनसमूहोंका यह प्रिय प्रदेश वना हुआ है। वैदिक, जैन, बौद्ध, शैव, भागवत एवं शाक्त आदि नाना प्रकारके धार्मिक तथा दार्शनिक सप्रदायोंके अनुयायी जनोंका यहा स्वस्थ और सहिष्णुतापूर्ण सन्निवेश हुआ है। कालक्रमानुसार मौर्य, शक, क्षत्रप, गुप्त, हूण, प्रतिहार, गुहिलोत, परमार, चालुक्य, चाहमान, राष्ट्रकूट आदि भिन्न भिन्न राजवंशोंकी राज्यसत्ताएं इस प्रदेशमें स्थापित होती गईं और उनके शासनकालमें यहाकी जनसंस्कृति और राष्ट्रसम्पत्ति यथेष्ट रूपमें विकसित और समुन्नत वनती रही। लोगोंकी सुख-समृद्धिके साथ विद्यावानोंकी विद्योपासना भी वैसी ही प्रगतिशील बनी रही, जिसके परिणाममें, समयानुसार, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और देश्य भाषाओंमें असंख्य ग्रन्थोंकी रचनारूप साहित्यिक समृद्धि भी इस प्रदेशमे विपुल प्रमाणमे निर्मित होती गई।

इस प्रदेशमें रहनेवाली जनताका सांस्कृतिक और आध्यात्मिक अनुराग अद्भुत रहा है, और इसके कारण राजस्थानके गाव-गावमे आज भी नाना प्रकारके पुरातन देवस्थानों और धर्मस्थानोंका गौरवोत्पादक अस्तित्व हमें दृष्टिगोचर हो रहा है। राजस्थानीय जनताके इस प्रकारके उत्तम सांस्कृतिक-आध्यात्मिक अनुरागके कारण विद्योपासक वर्गद्वारा स्थान-स्थान पर विद्यामठों, उपाश्रयों, आश्रमों और देवमन्दिरोंमे वाङ्मयात्मक साहित्यके संग्रहरूप ज्ञानभण्डार–सरस्वतीभण्डार भी यथेष्ट परिमाणमें स्थापित थे। ऐतिहासिक उल्लेखोंके आधारसे ज्ञात होता है कि राजस्थानके अनेकानेक प्राचीन नगर–जैसे आघाट, भिन्नमाल, जावालिपुर, सत्यपुर, सीरोही, वाहडमेर, नागौर, मेडता, जैसलमेर, सोजत, पाली फलोधी, जोधपुर, बीकानेर, सुजानगढ, भटिंडा, रणथंभोर, माडल, चितौड, अजमेर, नराना, आमेर, सागानेर, किशनगढ, चूरू, फतेहपुर, सीकर आदि सैकडों स्थानोंमें, अच्छे अच्छे ग्रन्थभण्डार विद्यमान थे। इन भण्डारोंमे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और देश्य भाषाओंमें रचे गये हजारों ग्रन्थोंकी हस्तलिखित, मूल्यवान पोथिया संगृहीत थी। इनमें से अब केवल जैसलमेर जैसे कुछ-एक स्थानोंके ग्रन्थभण्डार ही किसी प्रकार सुरक्षित रह पाये हैं। मुसलमानों और अंग्रेजो जैसे विदेशीय राज्यलोलुपोंके संहारात्मक आक्रमणोंके कारण, हमारी वह प्राचीन साहित्य-सम्पत्ति बहुत कुछ नष्ट हो गई। जो कुछ बची-खुची थी वह भी पिछले १००–१५० वर्षोंके अन्दर, राजस्थानसे बहार–काशी, कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, बंगलोर, पूना, बडौदा, अहमदाबाद आदि स्थानोंमे स्थापित नूतन साहित्यिक संस्थाओंके संग्रहोंमे बडी तादादमें जाती रही है। और तदुपरान्त युरोप एवं अमेरिकाके भिन्न भिन्न ग्रन्थालयोंमें भी हजारों ग्रन्थ राजस्थानसे पहुंचते रहे हैं। इस प्रकार यद्यपि राजस्थानका प्राचीन साहित्य भण्डार एक प्रकारसे अब खाली हो गया है, तथापि, खोज करने पर, अब भी हजारों ग्रन्थ यत्रतत्र उपलब्ध हो रहे हैं जो राजस्थानके लिये नितान्त अमूल्य निधि स्वरूप हो कर अत्यन्त ही सुरक्षणीय एवं संग्रहणीय हैं।

हर्ष और सन्तोषका विषय है कि राजस्थान सरकारने हमारी विनम्र प्रेरणासे प्रेरित हो कर, इस **राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर** (राजस्थान ओरिएन्टल रिसर्च इन्स्टीटयूट) की स्थापना की है और इसके द्वारा राजस्थानके अवशिष्ट प्राचीन ज्ञानभण्डारकी सुरक्षा करनेका समुचित कार्य प्रारंभ किया है। इस कार्यालय द्वारा राजस्थानके गाव-गात्रमें ज्ञात होने वाले ग्रंथोकी खोज की जा रही है और जहा कहींसे एवं जिस किसीके पास उपयोगी ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं उनको खरीद कर सुरक्षित रखनेका प्रवन्ध किया जा रहा है। सन् १९५० में इस प्रतिष्ठानकी प्रायोगिक स्थापना की गई थी, और अब पिछले वर्ष, १९५६ के प्रारंभसे, सरकारने इसको स्थायी रूप दे दिया है और इसका कार्यक्षेत्र भी कुछ विस्तृत बनाया गया है। अब तकके प्रायोगिक कार्यके परिणाममें भी इस प्रतिष्ठानमें प्राय. १०००० जितने पुरातन हस्तलिखित ग्रन्थोंका एक अच्छा मूल्यवान संग्रह संचित हो चुका है। आशा है कि भविष्यमें यह कार्य और भी अधिक वेग धारण करता जायगा और दिन-प्रति-दिन अधिकाधिक उन्नति करता जायगा।

४

जिस प्रकार उक्त रूपसे इस प्रतिष्ठानके प्रस्थापित करनेका एक उद्देश्य राजस्थानकी प्राचीन साहित्यिक संपत्तिका सरक्षण करनेका है वैसा ही अन्य उद्देश्य इस साहित्यनिधिके बहुमूल्य रत्नस्वरूप ग्रन्थोको प्रकाशमें लानेका भी है। राजस्थानमे उक्त रूपमे जो प्राचीन ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं, उनमे सैकडो ग्रन्थ तो ऐसे है जो अभी तक प्रकाशमें नहीं आये हैं; और सैकडो ही ऐसे हैं जिनके नाम तक भी अभी तक विद्वानोको ज्ञात नही है। यह सब कोई जानते है कि इन ग्रन्थोंमे हमारे राष्ट्रके प्राचीन सास्कृतिक इतिहासकी विपुल साधन-सामग्री छिपी पडी है। हमारे पूर्वज हजारो वर्षो तक जो ज्ञानार्जन करते रहे उसका निष्कर्ष और नवनीत नीकाल नीकाल कर, वे अपनी भावी सन्ततिके उपयोगके लिये इन ग्रन्थात्मक कृतियोंमे सचित करते गये। व्याकरण, कोष, काव्य, नाटक, अलंकार, छन्द, ज्योतिष, वैद्यक, कामविज्ञान, अर्थशास्त्र, शिल्पकला आदि लौकिक विद्याओके ज्ञानके साथ श्रुति, स्मृति, पुराण, धर्मसूत्र, न्याय, वैशेषिक, साख्य, योग, मीमासा, जैन, बौद्ध, शाक्त, तंत्र, मंत्र आदि धार्मिक, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक विद्याओके रहस्य भी इन ग्रन्थोमें नाना स्वरूपोंमे ग्रथित किये हुए हैं। इसी प्रकार, युग युगमें होने वाले अनेक शूर-वीर, दानी-ज्ञानी, सन्त-महन्त, त्यागी-वैरागी, भक्त-विरक्त आदि गुण विशिष्ट नर-नारी जनोके जीवन और कार्योंके विविध वर्णन – चित्रण भी इन्ही ग्रन्थोंमें अन्तर्निहित हैं। अर्थात् हमारे राष्ट्रकी सर्व प्रकारकी गौरव-गरिमाविषयक कथा-गाथाकी रक्षा करने वाला हमारा यही एकमात्र प्राचीन साहित्यसंग्रह है। इसीके प्रकाशसे संसारमें भारतका गुरुपद ज्ञात हुआ और स्थापित हुआ है। यद्यपि आज तक इनमेंसे हजारो ही प्राचीन ग्रन्थ; प्रकाशमें आ चुके हैं, फिर भी हजारों ही ऐसे ग्रन्थ और बाकी हैं जो अन्धकारके तलघरमें दटे पडे हैं। इनका उद्धार करना और इन्हे प्रकाशमें रखना यह अब इस नूतन जीवन प्राप्त नव्य भारतके प्रत्येक व्यक्ति और सस्थाका परम कर्तव्य है। इसी कर्तव्यको लक्ष्य कर, इस संस्था द्वारा **'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला'** के प्रकाशनका आयोजन भी किया गया है। इसके द्वारा सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और देश्य भाषाओंमें निबद्ध विविध विषयोके प्राचीन ग्रन्थ, तज्ज्ञ एवं सुयोग्य विद्वानोंसे सशोधित और संपादित हो कर प्रकाशित किये जा रहे हैं। अब तक कोई छोटे बडे २० ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं और प्राय ३० से अधिक ग्रन्थ प्रेसोंमें छप रहे हैं। राजस्थान सरकार वर्तमानमें, इस कार्यके लिये प्रतिवर्ष २०००० रुपये खर्च कर रही है–पर हमारी कामना है कि भविष्यमें यह रकम बढाई जाय और तदनुसार अधिक संख्यामें इन प्राचीन ग्रन्थोका समुद्धार और प्रकाशन कार्य किया जाय।

साहित्यका प्रकाश ही प्रजाके अज्ञानान्धकारको नष्ट कर, उसे दिव्यताका दर्शन कराता है।

माघ शुक्ला १४, वि० सं० २०१३.
(जीवनके ७० वें वर्षका प्रथम दिन)

मुनि जिनविजय

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके कुछ ग्रन्थ

प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृत

१ **प्रमाण मञ्जरी** – तार्किक चूडामणि सर्वदेवाचार्य प्रणीत। तीन व्याख्याओंसे समलंकृत।
२ **यन्त्रराजरचना** – जयपुर नरेश महाराज सवाई जयसिंह समारचित।
३ **महर्षिकुलवैभवम्** – विद्यावाचस्पति स्व० श्रीमधुसूदन ओझाविरचित।
४ **तर्कसंग्रह-फक्किका** – पं० क्षमाकल्याणकृत।
५ **कारकसंबन्धोद्योत** – पं० रभसनन्दिकृत।
६ **वृत्तिदीपिका** – पं० मौलिकृष्णभट्ट कृत।
७ **शब्दरत्नप्रदीप** – संक्षिप्त संस्कृत शब्दकोष।
८ **कृष्णगीति** – कवि सोमनाथकृत गीतिकाव्य।
९ **शृंगारहारावलि** – हर्षकवि विरचित।
१० **चक्रपाणिविजयमहाकाव्य** – पं० लक्ष्मीधरभट्ट रचित।
११ **राजविनोद काव्य** – कवि उदयराज रचित।
१२ **नृत्तसंग्रह** – नाट्यविषयक पठनीय ग्रन्थ।
१३ **नृत्यरत्नकोश** – महाराणा कुम्भकर्ण प्रणीत।
१४ **उक्तिरत्नाकर** – पण्डित साधुसुन्दरगणी कृत।
१५ **कविदर्पण** – प्राकृत छन्दोरचनात्मक ग्रन्थ।
१६ **वृत्तजातिसमुच्चय** – विरहाङ्क कवि कृत।
१७ **ईश्वरविलास महाकाव्य** – पं० कृष्णभट्टकविकृत।

राजस्थानी भाषा ग्रन्थ

१ **कान्हड दे प्रबन्ध** – कवि पद्मनाभ रचित।
२ **क्यामखां रासा** – मुस्लिम कवि जानकृत।
३ **लावारासा** – चारणकविया गोपालदानकृत।

प्रेसोंमें छप रहे ग्रन्थ

(क) संस्कृत ग्रन्थ

१ **त्रिपुराभारती** – लघुपंडित
२ **शकुनप्रदीप** – लावण्य शर्मा
३ **करुणामृतप्रपा** – ठक्कुर सोमेश्वर
४ **बालशिक्षाव्याकरण** – ठक्कुर संग्रामसिंह
५ **पदार्थरत्नमञ्जूषा** – पं० कृष्णमिश्र
६ **काव्यप्रकाश, संकेत** – भट्ट सोमेश्वर
७ **वसन्तविलास** – फागु काव्य
८ **नृत्यरत्नकोश** – राजाधिराज कुंभकर्ण देव
९ **नन्दोपाख्यान** – संस्कृत और राजस्थानी
१० **रत्नकोश** – विविधवस्तुसंग्रह विचारात्मक
११ **चान्द्रव्याकरणम्** – आचार्य चन्द्रगोमि
१२ **स्वयंभू छंद** – स्वयंभू कवि
१३ **प्राकृतानन्द** – कवि रघुनाथ
१४ **मुग्धावबोध आदि औक्तिक संग्रह**
१५ **कविकौस्तुभ** – पं० रघुनाथ मनोहर
१६ **दुर्गापुष्पांजलि** – पं० दुर्गाप्रसादजी
१७ **दशकण्ठवधम्** – ,,
१८ **कर्णकुतूहल** नाटक
१९ **कृष्णलीलामृत** काव्य

राज्यस्थानी भाषाग्रन्थ

१ **बांकीदासरी वातां** – चारणकवि बांकीदास
२ **मुंहता नैणसीरी ख्यात** – जोधपुरके मुंहता नेणसी लिखित
३ **गोरा बादल-पदमिणी चउपई** – जैन यति कवि हेमरतन कृत
४ **राठोड वंशरी विगत** – राठोडोंके इतिहासकी कथाएं।
५ **राजस्थानी साहित्य संग्रह** – राजस्थानी भाषा मे लिखित विविध वृत्तान्त।
६ **दाढाला एकल गिडरी वात** – राजस्थानी भाषाकी एक सरस प्रहसनात्मक रचना।
७ **सुजान संवत** – कवि उदयराम रचित
८ **चन्द्रवंशावलि** – कवि मतिराम कृत
९ **राजस्थानी दूहा संग्रह**

इन ग्रन्थोंके अतिरिक्त अनेकानेक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी-हिन्दी भाषामें रचे गये ग्रन्थोंका संशोधन-संपादन आदि कार्य किया जा रहा है।

*

इसी तरह राष्ट्र-भाषा हिन्दीमें भी उच्च कोटिके ग्रन्थोंके प्रकाशनका आयोजन चल रहा है।



राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला
प्रधान संपादक—पुरातत्त्वाचार्य, जिनविजय मुनि
[सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर]

साधुसुन्दर गणी विरचित

उक्तिरत्नाकर



प्रकाशक
राजस्थान राज्य संस्थापित
राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर
जयपुर (राजस्थान)

उक्तिरत्नाकर – अनुक्रम



प्रस्तावना

✱

स्व-संपादित 'सिंघी जैन ग्रन्थमाला'में हमने एक 'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण' नामक ग्रन्थ प्रकाशित किया है, जिसकी भूमिकामें निम्न प्रकारका उल्लेख किया है – "महात्मा गांधीजीके मुख्य नेतृत्वमें स्थापित अहमदावादके राष्ट्रीय गुजरात विद्यापीठके 'पुरातत्त्व मन्दिर' नामक विशिष्ट विभागके आचार्यपद पर, सर्व प्रथम, जब मेरी विशिष्ट नियुक्ति हुई, तभीसे मैंने औक्तिक प्रकारके साहित्यका संकलन करना निश्चित किया था और यथाशक्य उसको प्रकाशमें लानेका प्रयत्न चलाया था। ई. स. १९२३-२४ के अरसेमें, मैं एक वार पाटण गया और वहाँसे कुछ अन्यान्य औक्तिक प्रकरणोंके प्राचीन आदर्श प्राप्त किये। उक्त गुजरात पुरातत्त्व मन्दिर के तत्त्वावधानमें संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश आदि भारतीय प्राचीन भाषाओंके, उच्चकोटीय अध्ययनके साथ, गुजराती भाषाके प्राचीन इतिहास और साहित्यके अध्ययनकी भी विशेष व्यवस्था की गई थी। उसके पाठ्यक्रममें आवश्यक ऐसे एक सन्दर्भ ग्रन्थका संकलन करनेकी दृष्टिसे 'प्राचीन गुजराती गद्य संदर्भ' के नामसे एक संग्रहात्मक ग्रन्थ मैंने तैयार करना प्रारंभ किया, जिसमें वि. सं. १३०० से ले कर १६०० तकके ३०० वर्षोंमें लिखे गये, प्राचीन गुजराती (अर्थात् पश्चिमी-राजस्थानी) भाषाके चुने हुए उद्धरणोंका एक अच्छा प्रमाणभूत संग्रह संकलित करनेका उद्देश्य रखा था। इसके लिये मैंने बहुत कुछ आधारभूत सामग्री एकत्र करनी शुरू की। पाटण, अहमदाबाद आदिके भण्डारोंमें प्राप्त प्राचीन ताडपत्रीय एवं वैसी ही प्राचीन कागजीय पुस्तकोंमे, यत्र तत्र उपलब्ध फुटकल गद्य उद्धरणोंके साथ, कुछ स्वतंत्र प्रकरणरूप कृतियोंका भी मैंने संग्रह किया।"–इत्यादि।

इन प्रकरणरूप कृतियोंमें, प्रस्तुत 'उ क्ति र त्ना क र' भी एक थी, जो अब इस प्रकार, **'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला'** द्वारा प्रकाशित हो रही है।

इस ग्रन्थकी सर्वप्रथम प्रतिलिपि पाटणके भण्डारमेंसे प्राप्त प्राचीन पोथी परसे उसी समय कराई गई थी[1]। इसका मुद्रण कार्य प्रारंभ करनेका निश्चय होने पर बीकानेरके जैन भण्डारमेंसे भी एक अन्य प्रति, श्रीयुत अगर चन्दजी नाहटा द्वारा प्राप्त हुई। अन्यान्य ग्रन्थसंग्रहोंमें भी इस ग्रन्थकी प्रतियां उपलब्ध होती हैं, अतः ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक प्रसिद्ध एवं पठनोपयोगी ग्रन्थ रहा है।

इस ग्रन्थके कर्ता साधुसुन्दर नामक जैन यतिजन हैं जो बहुत करके राजस्थान निवासी थे। इनके गुरु साधुकीर्ति पाठक–पदधारी यतिवर्य्य थे जो बहुत बडे पण्डित और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। प्रस्तुत ग्रन्थकारने अपने गुरुके विषयमें, ग्रन्थान्तकी प्रशस्तिमें कहा है कि 'इनने यवनपति (बादशाह अकबर) की सभामें, अन्यान्य पन्थोंके पंडितोंके

---

1 इस प्रतिके अन्तमें निम्न प्रकार लिपिकारका परिचायक उल्लेख किया हुआ है– 'संवत् १७५० वर्षे आषाढ सुदि ८ दिने बुधवारे पं. कनकवल्लभ लिपीकृतम्। शिष्य अमीचन्द शिष्य कृष्णानै लिपिकृत दत्तम्। श्रीरस्तु लेखकपाठकयोः।'

*

साथ वाद-विवाद करनेमें खूब ख्याति प्राप्त की थी; इस लिये वादशाहने इनको 'वादिसिंह'-का इल्काब प्रदान किया था। ये हज़ारों शास्त्रोंका सार जानने वाले असाधारण विद्वान् थे'- इत्यादि। ग्रन्थकार साधुसुन्दरका बनाया हुआ 'धातुरत्नाकर' नामका एक अन्य वहुत वडा संस्कृत ग्रन्थ उपलब्ध होता है जिसमे संस्कृतके प्रायः सब धातुओंका संग्रह किया गया है और उनके रूपाख्यानोंका विशद आलेखन किया गया है। वह धातुरत्नाकर वि० सं० १६८० में वन कर पूर्ण हुआ था। इनकी बनाई हुई एक संस्कृत स्तुति भी प्राप्त होती है जिसमें जैसलमेरके किलेमें प्रतिष्ठित पार्श्वनाथ जैन तीर्थंकरकी स्तवना की गई है। यह स्तुति वि० सं० १६८३ में वनी है। इससे साधुसुन्दर गणिका जीवन-समय विक्रमकी १७ वीं शताब्दीकी अन्तिम पचीसी निश्चित होता है।

इन्हीं साधुसुन्दरके एक शिष्य उदयकीर्ति नामक यति थे जिनने विमल-कीर्तिकी बनाई हुई 'पदव्यवस्था' नामक ग्रन्थकृति पर वि. सं. १६८१ में, व्याख्या की है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि ग्रन्थकर्ताकी गुरु-परंपरा एवं शिष्य-परंपरा दोनों ही विद्याकी उपासनामें दत्तचित्त थीं।

*

ग्रन्थगत विषयका अवलोकन करनेसे विद्वानोंको ज्ञात होगा कि ग्रन्थकारने, अपनी देश-भाषामे प्रचलित, देश्य-स्वरूपवाले शब्दोंके संस्कृत प्रतिरूपोंका ज्ञान करानेकी दृष्टिसे इसका संकलन किया है। भारत महाराष्ट्रकी सर्व काल एवं सर्व देश व्यापिनी प्रधान साहित्यिक भाषा संस्कृत रही है। भारतीय वाङ्मयके इतिहासके आदि युगसे ले कर वर्त-मान समय तक, संस्कृतकी प्रतिष्ठा और प्रभुता अक्षुण्ण रही है। वीच-वीचमे कालक्रमानु-सार, संस्कृतके सन्तत प्रवाहके साथ साथ, उससे उत्पन्न एवं उससे सहकारप्राप्त मागधी, शौरसेनी, पैशाची, महाराष्ट्री आदि अनेक प्राकृत भाषाओंका प्रादुर्भाव हो कर धीरे धीरे उनका विकास होता गया। फिर वादमे उनका स्वरूपान्तर हो कर, उनके स्थानमे तत्तत् देशीय अपभ्रंश भाषाओंका- जिनको मध्यकालीन वैयाकरणोंने 'देश्यभाषा' के सर्व-सामान्य नामसे उल्लिखित किया है-आविर्भाव हुआ। भारतके समग्र उत्तरापथकी वर्तमान प्रादेशिक भाषाएं-हिन्दी, वंगाली, मराठी, पंजावी, सिंधी, राजस्थानी (-गुजराती, मारवाडी, मालवी) आदि लोकभाषाएं उसी अपभ्रंशके नूतनस्वरूपप्राप्त-विकसित भाषा विभाग हैं। इन भाषाओंमे, सेंकडों ही संस्कृत मूल शब्द, भिन्न भिन्न देश और जातिके लोगोंके पारस्परिक संपर्कके कारण, उच्चारण-भेद एवं व्यवहार-भेद द्वारा, अन्याकार स्वरूपको प्राप्त होते गये। खास करके संस्कृतके जिन मूल शब्दोंमे संयुक्ताक्षर अधिक होते हैं उन शब्दोंके प्राकृत-अपभ्रष्ट रूप विशेष रूपमें परिवर्तित होते रहे। स्वयं 'संस्कृत' शब्दका रूपान्तर 'संखय' 'सक्कय' 'संगड' आदि और प्राकृत शब्दका रूपान्तर 'पागय' 'पाइय' 'पायड' आदिके रूपमें परिवर्तित हो गया। 'उपाध्याय' शब्दका अपभ्रष्ट रूप, 'ओझा' 'झा' 'वझे' आदि वन गया। संस्कृत शब्दोंके ये प्राकृत-अपभ्रष्ट रूप, किस प्रक्रिया द्वारा वनते गये, इसका विचार प्राकृत-अपभ्रंशके व्याकरण ग्रन्थोंमे वहुत कुछ किया गया

है। जिन व्यक्तियोंको संस्कृत एवं प्राकृत भाषा-साहित्यका विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करना अपेक्षित होता है वे तो इन भाषाओंके व्याकरण ग्रंथोंका यथायोग्य अध्ययन द्वारा ही उसे प्राप्त करनेका प्रयत्न करते रहते हैं। पर जो व्यक्ति सामान्य रूपसे, देश्य भाषा और संस्कृत भाषाका, व्याकरणकी दृष्टिसे परस्पर कितना साम्य है और कितना विभेद है; तथा जो शब्द देश्य रूपमें लोकप्रचलित हो कर, संस्कृत रूपसे भिन्नाकार दिखाई देते हैं, उनका संस्कृत प्रतिरूप कैसा होता है—यह बात जानना चाहते हैं उनके लिये, संक्षेपमे कुछ अवबोध करने करानेकी दृष्टिसे, पूर्व कालीन विद्वानोंने औक्तिक संज्ञावाले ग्रन्थों—प्रकरणोंकी फुटकर रचनाएं की हैं।

इन रचनाओंमें सबसे प्राचीन कृति जो हमे उपलब्ध हुई है, वह उक्त सिंघी जैन ग्रन्थमालामें प्रकाशित 'उक्तिव्यक्ति प्रकरण' है। हमारे मतानुसार विक्रमकी १२ वीं शताब्दीके अन्त भागमें उसकी रचना हुई होगी। उस ग्रन्थका कर्ता दामोदर पण्डित उत्तर प्रदेशके बनारस नगरका रहने वाला था। उसने बनारसके बाल विद्यार्थियोंको, अपने समयमें प्रचलित बनारसकी देश्य भाषाका अर्थात् तत्कालीन जनपदीय भाषाका, व्याकरणकी दृष्टिसे संस्कृत भाषाके साथ कैसा संबन्ध है और किस प्रकार देश्य शब्दोंका संस्कार करनेसे संस्कृतका शुद्ध रूप बनता है—यह बतानेके लिये, उस ग्रन्थकी रचना की है। बनारसकी गणना उस समय कोशल देशकी राजधानीके रूपमें होती थी, अतः विद्वानोंने वहांकी लोकभाषाका नाम कोशली रखना उचित समझा है। उस ग्रन्थकी प्रस्तावनामें इस विषयके बारेमें हमने जो उल्लेख किया है, उसे यहां संबन्धित समझ कर, उद्धृत किया जाता है—

"इस ग्रन्थमें इस प्रकार केवल प्राचीन कोशली भाषाका नमूना ही हमें नहीं मिल रहा है—परंतु उसके साथ, व्याकरण शास्त्र विषयक कई अन्य महत्त्वकी बातोंका भी इसमें उल्लेख है। ग्रन्थकार इसमें प्रयुक्त देश भाषाका कोई विशिष्ट नाम निर्देश नहीं करता है। वह इसे केवल, सामान्य रूपसे 'अपभ्रंश' के नामसे उल्लिखित करता है। उस समय, संस्कृत एवं प्रौढ प्राकृतके सिवा लोकव्यवहारकी प्रचलित देशभाषाके लिये विद्वान् जन अपभ्रंश नामका व्यवहार करते थे। अपने समयमें—अपने देशमें प्रचलित, लोकव्यवहृत अपभ्रंश भाषाका, संस्कृत व्याकरणकी पद्धतिसे किस प्रकारका संबन्ध है और किस प्रकार लोकभाषाके लोकरूढ उक्तियों=शब्दप्रयोंगो द्वारा संस्कृतके व्याकरणका आधारभूत स्थूल ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है—इसका विचार पण्डित दामोदरने इस ग्रन्थमें निबद्ध किया है। इसमे प्रयुक्त 'उक्ति' शब्दका अर्थ है 'लोकोक्ति' अर्थात् लोकव्यवहारमें प्रयुक्त भाषापद्धति; जिसे हम हिन्दीमें 'बोली' कह सकते हैं। लोकभाषात्मक 'उक्ति'की जो 'व्यक्ति' अर्थात् व्यक्तता=स्पष्टीकरण—तत्संबन्धी विचारका विवेचन—इस ग्रन्थमे किया गया है अतः इसका नाम 'उक्तिव्यक्तिशास्त्र' रखा गया है।"

"लोकभाषामें प्रचलित अधिक शब्द, वास्तवमें तो प्रायः संस्कृत भाषाके ही मूल शब्द हैं, परंतु पामरजन अर्थात् अपठित एवं अशिक्षित जनोंके अशुद्ध वाग्व्यापारके कारणसे, उन शब्दोंके वर्णों, अक्षरों आदिमें परिवर्तन हो हो कर, उनके मूल स्वरूपका भ्रंश हो गया अर्थात् वे शब्द अपने असली रूपसे भ्रष्ट हो गये। इसलिये इस लोक-व्यवहारमें प्रचलित शब्दस्वरूपवाली भाषाको पण्डित दामोदरने अपभ्रंश या अपभ्रष्ट नामसे उल्लिखित किया है, और किस तरह इन अपभ्रष्ट शब्दप्रयोगोंका, संस्कृतके व्याकरणनिबद्ध क्रिया, कारक, कर्म आदि उक्ति प्रकारोंके साथ, संबन्ध रहा है, उसका स्वरूपप्रदर्शन, इस ग्रन्थमें किया है। इसीलिये इसका दूसरा नाम **'प्रयोग प्रकाश'** ऐसा भी रखा गया है।"

"ग्रन्थमें प्रतिपादित इस महत्त्वके विषय पर यहां अधिक लिखनेका अवकाश नहीं है। सद्भाग्यसे इस विषयके प्रतिपादक, इसी शैलिमें लिखे गये, अनेक छोटे बडे ग्रन्थ, हमे राजस्थान एवं गुजरातके प्राचीन ग्रन्थभण्डारोंमें से प्राप्त हुए हैं और उनके संग्रहात्मक ऐसे दो-तीन संग्रह–ग्रन्थ हम और प्रकाशित करना चाहते है। इनमेंसे, 'उक्तिरत्नाकर' आदि, ऐसी ही ४–५ कृतियोंका संग्रहस्वरूप, एक ग्रन्थ तो, राजस्थान सरकार द्वारा प्रस्थापित एवं प्रकाशित तथा हमारे द्वारा संचालित एवं संपादित **'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला'**में शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है।"

"इस प्रकारकी उक्तिव्यक्ति विषयक भिन्न भिन्न कृतियोंका और उनमें ग्रथित भाषा विषयक सामग्रीका विस्तृत विचार, हम किसी अन्यतम ग्रन्थमें करना चाहते हैं। हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, बंगाली आदि भारतीय-आर्यकुलीन-देशभाषाओंके विकास-क्रमके अध्ययनकी दृष्टिसे यह औक्तिक-साहित्य-संग्रह बहुत उपयोगी सामग्री प्रस्तुत करेगा।" – इत्यादि

उपर दिये गये उद्धरणमें जिन ४–५ कृतियोंका निर्देश सूचित किया गया है उनमें से प्रस्तुत संग्रहमें तो मुख्यतया साधुसुन्दर रचित 'उक्तिरत्नाकर' ही मुद्रित है। अन्य मुख्य रचनाएं, इसके द्वितीय भागके रूपमे छप रही हैं, जिनमें कुलमण्डन सूरिका बनाया हुआ 'मुग्धावबोध-औक्तिक' आदि संगृहीत हैं।

साधुसुन्दर गणीने अपनी प्रस्तुत रचनामे, प्रारंभमें संस्कृत व्याकरणके षट्कारक विषयक प्रकरणका निरूपण किया है। संस्कृत भाषाका प्रारंभिक परिचय प्राप्त करने-वालेके लिये यह जानकारी प्रथम आवश्यक होती है कि कौन सी विभक्तिका प्रयोग किस अर्थमें किया जाता है। अतः प्राथमिक विद्यार्थियोंको विभक्तिके ज्ञानके साथ ही कारक अर्थोंका ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक रहता है। इस लिये इस प्रकारके जो औक्तिक प्रकरण रचे गये हैं उनमे प्रायः प्रथम कारक अर्थोंका निरूपण किया हुआ होता है। प्रस्तुत उक्तिरत्नाकरमे भी उसी शैली अनुसार प्रारंभमे कारक प्रकरण लिखा

गया है। बादमें प्रायः २४०० जितने देश्य शब्द और उनके संस्कृत प्रतिरूप बतलाने वाले शब्दोंका विशाल शब्दसंग्रह दिया गया है।

प्रस्तुत संग्रहमें उक्तिरत्नाकरके बाद दो अन्य ऐसी ही पुरातन रचनाएं दी गई हैं। इनमें पहली रचनाका नाम सामान्य रूपसे 'उक्तीयक' ऐसा लिखा मिला है और दूसरी रचनाका नाम 'औक्तिकपदानि' ऐसा लिखा मिला है। इन रचनाओंके कर्ता या संग्राहकके नाम नहीं उपलब्ध हुए। जिन प्राचीन प्रतियों परसे इनका मुद्रण किया गया है वे प्रतियां विशेष प्राचीन हैं। अर्थात् उक्तिरत्नाकरके कर्ताके समयसे भी पूर्व लिखी गई ज्ञात होती हैं। इस प्रकारके और भी अनेक फुटकर संग्रह हमें प्राप्त हुए हैं जिनका प्रकाशन द्वितीय भागमें करना सोचा गया है। इन रचनाओंमें प्रतिपाद्य विषय तो एक ही प्रकारका होता है पर संकलन करनेकी शैली पृथक् पृथक् होती है।

इसमें दी गई 'उक्तीयक'नामक रचनामें प्रारंभमें 'वर्तमानकालिक' धातुरूप दिये हैं। उसके बाद कृदन्तसाधित शब्द दिये हैं। तदनन्तर 'तव्य' प्रत्ययान्त शब्दरूप दिये गये हैं। बादमें सर्वनाम आदि शब्दोंका संग्रह दिया गया है। इसमें 'कारकविचार' प्रकरण नहीं दिया गया।

'औक्तिकपदानि' नामक रचनामें, प्रारंभमें 'कारकविचार' आलेखित किया गया है। साधुसुन्दर गणीने अपनी रचनामें 'कारकविचार' शुद्ध संस्कृतमें लिखा है तब इस रचनामें यह प्रकरण अपनी देश्य भाषामें लिखा गया है। कारकविचारके बाद, इसमें वर्तमान, भूत, भविष्य आदि 'कालविचार' दिया गया है। बादमें शब्दसंग्रह है। तदनन्तर 'क्रियावचन' दिये गये हैं। फिर 'कर्मणिवाक्य' प्रयोग हैं। इसके अनन्तर विभक्ति-अर्थ और उनके वाक्य-प्रयोग दिये हैं। फिर 'समासप्रकरण' दिया गया है और इसके बाद तद्धित शब्दोंका विचार किया गया है। अन्तमें क्रियाओंके प्रेरक रूप और सनन्त रूपोंका दिग्दर्शन कराया गया है। इस प्रकार इस रचनामे व्याकरणके मुख्य मुख्य सभी विषयोंका विवेचन दिया गया है।

*

हमारे राष्ट्रके किसी भी प्रदेशकी मातृभाषा संस्कृत नहीं है। मातृभाषाएं तो तत्तत् प्रादेशिक भाषाएं हैं, जिनका स्वरूप वर्तमानमें संस्कृतसे बहुत कुछ भिन्न मालूम होता है। मनुष्यके ज्ञानके विकासका क्रम सर्व प्रथम मातृभाषा द्वारा शुरू होता है। मातृभाषा द्वारा ही प्राप्त शब्दज्ञानके आधार पर, मनुष्य अन्यान्य भाषाओंका ज्ञान प्राप्त करता रहता है, और उनके द्वारा वह अपनी ज्ञानसमृद्धि बढाता जाता है। हमारे देशकी सर्व प्रकारकी प्राचीन ज्ञानसमृद्धि, संस्कृत वाङ्मयरूप भंडारमें निहित है। हजारों वर्षोंसे हमारे पूर्वज अपने अनुभव और बुद्धिबलसे प्राप्त समग्र ज्ञानसमृद्धिको, इसी संस्कृत वाङ्मयके भण्डारमें अर्पण करते रहे हैं और इस लिये हमारा यह वाङ्मय भण्डार, संसारके अन्यान्य भाषाकीय प्राचीन ज्ञानभण्डारोंकी अपेक्षा, सबसे

अधिक समृद्ध रहा है। आज भी इस भण्डारकी महत्ता और प्रतिष्ठा कम नहीं हुई है। अतः भारतके प्रत्येक विकासोन्मुख और संस्काराभिलाषी मनुष्यके लिये संस्कृत भाषाका ज्ञान प्राप्त करना परापूर्व कालसे, परम कर्तव्यरूप माना गया है। अन्य किसी प्रकारके विशेष ज्ञानके लिये न सही, पर, केवल वाणीकी शुद्धिके लिये – जिह्वाके सुसंस्कारके लिये – सुशब्द और कुशब्दका भेद समझनेके लिये ही, संस्कृत भाषाका अल्पस्वल्प भी परिचय प्राप्त करना परम आवश्यक माना गया है। इसी लिये हमारे पूर्वज यह एक अमूल्य शिक्षासूत्र बना गये हैं कि–

यद्यपि बहु नाधीषे तथापि पठ पुत्र व्याकरणम्।
मा भूत् स्वजनः श्वजनः, स्वराज्यमपि च श्वराज्यं यत्॥

हमारे पूर्वज हमें कह रहे हैं कि – हे पुत्रो! यदि तुम कुछ अधिक न पढ सको, तो खैर, पर थोडा सा व्याकरण तो अवश्य ही पढना, जिससे तुम 'स्वजन'को 'श्वजन' और 'स्वराज्य' को 'श्वराज्य' कह कर अपशब्दभाषी मूर्ख नर बनने से बच सको।' जिनको थोडा सा भी शुद्ध भाषा ज्ञानका परिचय होगा, वे इस कथनके मर्मको ठीक समझ ही गये होंगे।

इस प्रकार वाणीकी शुद्धि एवं ज्ञानकी वृद्धिके निमित्त संस्कृत भाषाका स्वल्पज्ञान प्राप्त करना भी परम हितावह है। इसी हितको उद्देश्य करके पूर्वकालीन विद्वानोंने प्रस्तुत कृतिके समान सामान्य मुग्धजनोंके बोधके लिये अपनी रचनाएं की हैं–

'उक्तीनां संग्रहं वक्ष्ये स्वान्ययोर्हितहेतवे।'

उपर हमने सूचित किया है कि हमारी देश्य भाषाओंमें हजारों ही मूल संस्कृत शब्दोंके, देश एवं काल आदिकी भिन्न भिन्न परिस्थितियोंके कारण, विचित्र रूपान्तर हो गये हैं। कुछके अक्षर बदल गये, कुछके अर्थ बदल गये और कुछके उच्चार ध्वनि ही बदल गये हैं। ऐसे रूपान्तरित देश्य शब्दोंके संस्कृत प्रतिरूप क्या हैं, मुख्य तया यही प्रदर्शित करनेके लिये साधुसुन्दर गणीने इस रचनामें प्रयत्न किया है। जैसा कि हमने उपर सूचित किया है ग्रन्थकार प्रायः राजस्थान निवासी हैं अतः इन शब्दोंमे राजस्थान एवं उसके समीपवर्ति गुजरात, सौराष्ट्र, मालवा, सिंध, पंजाब आदि प्रदेशोंमें प्रचलित देश्य शब्दोंका अधिक संग्रह होना स्वाभाविक ही है। पर इनमें सेंकडों शब्द ऐसे भी मिलेंगे जो सुदूर पूर्वके एवं दक्षिणके देशोंमे भी प्रचलित होंगे। अतः हम आशा करते हैं कि यह संग्रह, भारतकी प्रादेशिक भाषाओंके तुलनात्मक अध्ययन करने वालोंकी दृष्टिसे, तथा राष्ट्र भाषाके पद पर प्रतिष्ठित नूतन भारतकी राष्ट्र-भारती हिन्दीके विकास एवं विस्तारके ज्ञानकी दृष्टिसे भी उपयोगी सिद्ध होगा।

भारतीय विद्याभवन, बंबई
ता. १-२-५७

मुनि जिनविजय

——०——

साधुसुन्दर गणी कृत

उक्तिरत्नाकर

—— ० ——

पण्डितप्रवर-श्रीसाधुसुन्दरगणि-कृत

उक्तिरत्नाकर

*

卐 ऐँनमः 卐

स्मृत्वा श्रीभारतीं देवीं गुरुपादांश्च भक्तितः ।
उक्तीनां सङ्ग्रहं वक्ष्ये स्वान्ययोर्हितहेतवे ॥ १ ॥

तावत् तदुपयोगिविभक्तिस्वरूपं निरूप्यते । तत्र कर्तृ[1]कर्म[2]करण[3]-सम्प्रदाना[4]पादाना[5]धार[6]रूपाणि षट् कारकाणि । सप्तमः सम्बन्धः । उक्तानुक्तभेदेन द्विधा षट् कारकाणि । तत्रोक्तेषु प्रथमैव विभक्तिः । अनुक्तेष्वनुक्रमेणैताः स्युः । कर्मणि द्वितीया । कर्तृ-करणयोस्तृतीया । सम्प्रदाने चतुर्थी । अपादाने पञ्चमी । आधारे सप्तमी । सम्बन्धे षष्ठी । इति संक्षेपेण विभक्तयः कथिताः । विस्तरोऽग्रेऽभिधास्यते ।

करोतीति कर्त्ता । स त्रिविधः – स्वतन्त्रः, हेतुकर्त्ता, कर्मकर्त्ता च । यो न परैः प्रेर्यते स स्वतन्त्रकर्त्ता । यथा गौर्गच्छति । योऽन्यं कारयति स हेतुकर्तोच्यते । अनेककर्तृके मुख्यं कर्तारं प्रत्ययो वक्ति । यथा – राजा सूपकारेणौदनं पाचयति । यो नापरैः प्रयुक्तः परान् प्रेरयति स मुख्यः । यथा – राजा चैत्रेण श्रियं पोषयति । हेतुकर्ता त्रिधा – प्रेषकः, अध्येषकः, आनुकूल्यभागी च । यः प्रभुत्वेन प्रेरयति स प्रेषकः । यथा – राजा सेवकैः संग्रामं कारयति । यः सत्कारपूर्वकं प्रेरयति सोऽध्येषकः । यथा – श्रद्धावान् पुमान् गुरुं भोजयति । यो न प्रेषते नाध्येषते सोऽनुकूलभागी । चेतनाचेतनत्वेनानुकूलभागी द्विधा । चेतनो यथा – पुत्रो जनकं हर्षयति । अचेतनो यथा – कारीषोऽग्निर्ब्राह्मणमध्यापयति । यदा कर्ता स्वव्यापारं कर्मण्यारोपयति तदा कर्मकर्ता । यथा – पच्यते शालयः स्वयमेव । अत्र प्रस्तावादनुक्तभेदोऽपि कथ्यते । यथा – छात्रवृन्देन सरस्वती वन्द्यते ।

यत् क्रियते तत् कर्म । एतदनेकधा । निर्वर्त्य-विकार्य-प्राप्यभेदेन त्रिधा । इष्टानिष्टानुभयभेदात् पुनस्त्रिधा । तथा अकथितं कर्म कर्तृकर्म च । यत्पूर्वमसज्जायते जन्मना वा प्रकाश्यते तन्निर्वर्त्यम् । असज्जायते यथा कारुः कटं करोति । जन्मना प्रकाश्यते यथा – माता सुतं सूते । यत् सतो गुणान्तराधानात् प्रकृत्युच्छेदतो वा विकारं प्रतिपद्यते तद्विकार्यम् ।

गुणान्तराधानात् यथा—स्वर्णकारः स्वर्णं कुण्डली कुरुते। प्रकृत्युच्छेदतो यथा—अग्निः काष्ठं दहति। यत्र क्रियाकृतो विशेषो नास्ति तत् प्राप्यम्। यथा—चाक्षुषः सूर्यं पश्यति। यदीप्सितं तदिष्टम्। यथा—बालो मृष्टान्नमत्ति। यद् द्विष्टं सत् प्राप्यते तदनिष्टम्। यथा—अन्धः सर्वं लङ्घयति। यद्वा कण्टकान् मृद्नाति। यत्रेच्छाद्वेषौ न स्तस्तदनुभयम्। यथा—पान्थो ग्रामं गच्छंस्तरोर्मूलान्युपसर्पति। दुहादीनां धातूनां प्रयोगे यद् द्वितीयं कर्म तदकथितम्। तच्च यथा—गोपो गां पयो दोग्धि। मुख्य-गौणकर्मभेदमाह—यच्चोपज्युयमानं पयःप्रभृति तन्मुख्यं कर्म। यत्र निमित्तमपरं तद्गौणं कर्म। तच्च गोप्रभृति नीयमानं भारादि। नीवह्यादेर्धातुगणस्य प्रधानं कर्म। तत् तव्यादौ प्रत्यये उक्तसञ्ज्ञम्। यथा—देवदत्तेन भारो ग्रामं नेयः। दुहि याचि रुधि प्रच्छि भिक्षि ब्रुवि शासि चिञर्थाः, नी वहि जि मोषि दण्डि मोदि कृषि मन्थि हृञ् प्रभृतयश्च धातवोऽपादानादिविधिं बाधित्वा द्विकर्मका भवन्ति। यथा—मुनिः कृतकोपं शमं याचति। अविनीतं विनयं याचति। अत्र याचिरनुनयार्थो ग्राह्यस्तेनास्य भिक्ष्यर्थाद् भेदः। सत्ता शुद्धि समृद्धि वृद्धि शयन स्थानासन दीप्ति लज्जा जीवन रोदन हदन नृत्य प्रलाप क्रोध सन्तोष रुचि शोक दोष मरण स्पर्द्धा विहार भय मदोन्माद प्रमादाद्यर्था अकर्मका धातवः। यदुक्तम्

> सत्ताशुद्धिसमृद्धिवृद्धिशयनस्थानासने भासने,
> लज्जा जीवनरोदने च हदने नृत्ये प्रलापे क्रुधि।
> सन्तुष्टौ रुचिशोकदोषमरणस्पर्धाविहारेषु च,
> ज्ञेयो धातुरकर्मको भयमदोन्मादप्रमादेषु च ॥ १ ॥

सकर्मकाकर्मकयोर्लक्षणमिदम्—यदा कर्तृक्रियारूपपदद्वन्द्वात् पृथक् किमपेक्षा स्यात् तदा सकर्मको धातुरन्यथा अकर्मकः। यदुक्तम्—

> कर्तृक्रियापदद्वन्द्वात् किमपेक्षा यदा पृथक्।
> तदा सकर्मको धातुर्विपरीतस्त्वकर्मकः ॥ १ ॥

अण्यन्तकर्ता ण्यन्तेषु कर्म स्यात् तत् कर्तृकर्म ज्ञेयम्। पुनरेष्वेव नीखाद्यदिह्वाशब्दायक्रन्दिवर्जितेषु बोधाहारगतिशब्दकर्मनित्याकर्मकधातुष्वेतद् भवति। यथा—आचार्यः शिष्यं तत्त्वं बोधयति। बोधार्थाः सामान्येन ज्ञानार्थाः। इन्द्रियगम्यार्था अपि दृश् घ्रा स्पृश् ध्यै स्मृ तुल्याश्च। मैत्रो

भर्तारं रमणीं गमयति। अत्र गमिर्भजनार्थस्तेन न कर्तृकर्मत्वम्। विष्णुः पार्थं समरं गमयति। अत्र गत्यर्थ एव। नयत्यादिवर्जनम्। नयतेः प्रापणोपसर्जनप्राप्त्यर्थत्वेन गत्यर्थत्वात्, खाद्यद्योराहारार्थत्वात्, ह्वाशब्दायक्रन्दां च शब्दकर्मकत्वात् प्राप्ते कर्तृकर्मत्वे प्रतिषेधार्थम्। नयति भारं चैत्रः। नाययति भारं चैत्रेण मैत्रः। खादयति पिता पुत्रेण खाद्यम्। आदयत्यन्नं चैत्रेण मैत्रः। ह्वाययति चैत्रं मैत्रेण देवदत्तः। शब्दाययति चैत्रं मैत्रेण देवदत्तः। क्रन्दयति चैत्रं मैत्रेण देवदत्तः। कर्मसंज्ञाप्रतिषेधात् स्वव्यापाराश्रयं कर्तृत्वमेव। वहेरसारथिकर्तृत्वे तथा भक्षेरहिंसायां च न कर्तृकर्मत्वम्। यथा—भूपतिर्भृत्येन भारं ग्रामं वाहयति। सारथिकर्तृत्वे तु कर्तृकर्मत्वमेव। यथा—सारथिरुक्षाणं सस्यं ग्रामं वाहयति। चैत्रौ मैत्रेण मोदकान् भक्षयति। हिंसायां तु कर्तृकर्मत्वमेव। यथा—व्याधो गृहकुक्कुटं कीटकान् भक्षयते। हृक्रोः कर्ता णिगि वा कर्म भवति। यथा—स्वामी भृत्यं भृत्येन वा भारं ग्रामं हारयते। वणिक् कारुं कारुणा वा कटं कारयते। दृश्यभिवाद्योः कर्ता आत्मनेपदे वा कर्म भवति। यथा—राजा लोकं लोकेन वाऽऽत्मानं दर्शयते। पिता पुत्रं पुत्रेण वा पूज्यमभिवादयते। केचिच्चौरादिकस्याप्यभिवादेः कर्म वेच्छन्ति। अविवक्षितकर्मधातोरणि कर्तुर्णौ वा कर्मत्वम्। यथा—मैत्रश्चैत्रं चैत्रेण वा पाचयते। पिता पुत्रेण पाचयति। आख्यात-समास-तद्धित-कृद्भिः कर्मण उक्तत्वं स्यात्। आख्यातेन यथा—कुम्भकारेण कुम्भः क्रियते। समासेन यथा—आरूढवानरो वृक्षः। तद्धितेन यथा—शत्यः शतिकश्च पटः। शतेन क्रीतः शत्यः शतिकश्च। कृता यथा—तैः कटः कृतः। अथवा एकस्य द्विकर्मणो धातोरुभयत्राप्युक्तत्वम्। बोधाहारार्थशब्दकर्मवतां णिगि सति पर्यायेणोभयत्राप्युक्तत्वम्। बोधार्थादीनां यथा—गुरुणा शिष्यो धर्मं बोध्यते, शिष्यं वा धर्मो बोध्यते। दात्रा अतिथिः ओदनं भोज्यते, अतिथिं वा ओदनो भोज्यते। गुरुणा शिष्यो ग्रन्थं पाठ्यते, शिष्यं वा ग्रन्थः पाठ्यते। गत्यर्थाकर्मणां णिगि मुख्यं कर्म उक्तं स्यात्। यथा—तैर्मैत्रो ग्रामं गम्यः, तैर्मैत्रो मासमास्यते। षट् कारके तु णिगि प्रोक्तमन्यद्वा कर्म कर्मजः प्रत्ययो वक्ति। यथा—स तैर्मैत्रं ग्रामो गम्यः। तैर्मैत्रं मास आस्यते। क्रियाविशेषणस्यापि सकर्मकधातुषु नपुंसकत्वमेकत्वं कर्मत्वं च प्रयुज्यते। यथा—एषा ब्राह्मणी स्तोकं पचति सर्वं खादयति च। कुम्भः शीघ्रमुत्पद्यते। गलिगौः सुखं जीवति। कर्मोपसंहारः कथ्यते। इत्येतत् प्राप्यं निर्वर्त्यं विकार्यं चेति त्रिधा इष्टानिष्टानुभयभेदैर्नवधा स्यात्। तत्पुनः प्रधानेतरभेदाभ्यामष्टादशधा। इति संक्षेपेण कर्मप्रपञ्चो दर्शितः।

अथ करणम्। येन क्रियते तत् करणम्। तद् द्विधा–बाह्यमाभ्यन्तरं च। बाह्यं यथा–दात्रेण व्रीहीन् लुनाति। आभ्यन्तरं यथा–मनसा मेरुं गच्छति। अस्य करणस्य कारकान्तरतः स्वकाङ्क्षया प्रकर्षो न। यथा–दात्रैः शस्त्रैर्नखैर्व्रीहयो लूनाः। तद्बहुधाऽपि। एष रुद्राय पशुं ददातीत्यर्थे कर्मणः करणसंज्ञा संप्रदानं च कर्म स्यात्। एष पशुना रुद्रं यजति। तथा समविषमयोः कर्मत्वे करणं भवति। यथा समेन धावत्यश्वः। विषमेण धावत्यश्वः।

अथ संप्रदानम्। तत् संप्रदानं यस्मै पूजानुग्रहकाम्यया दित्सा। संप्रदानं त्रिधा–अनुमन्तृ प्रेरकं अनिराकर्तृ चेति। ददामीति वचनं श्रुत्वा एवं कुर्वित्यनुमन्यते तदनुमन्तृ। यथा–यजमानो गुरवे गां ददाति। यच्च देहीत्युक्त्वा दातारं प्रेरयति तत् प्रेरकम्। यथा–द्विजाय गां देहि। यन्नानुमन्यते नापि प्रेरयति किन्तु मूकवदास्ते तद् अनिराकर्तृ। यथा–देवाय हेम दत्ते, राज्ञो दण्डं दत्ते, व्रतः पृष्ठिं दत्ते। अत्र दित्सा नास्ति। भट्टस्य शतं दत्ते। अत्र च नार्चानुग्रहकाम्यया दानं तेन न सम्प्रदानम्। तदेव संप्रदानं यत् त्यागभावयुक्तं स्यात्। दीयमानेन संयोगाद् यदि स्वामित्वं लभते। रजकस्य वस्त्रं दत्ते। अत्र त्यागाभावस्तेन न सम्प्रदानम्। द्विजस्य भाटकेन गृहं दत्ते। अत्र स्वामिता न। गृहस्य स्वामी द्विजो न भवतीति न सम्प्रदानम्।

अथापादानम्। यस्मादपायस्तदपादानम्। तदचलं चलं च। अचलं यथा–वृक्षात् पर्णं पतति। चलं यथा–धावतोऽश्वादपतदश्ववारः।

अथाधिकरणम्। आधारोऽधिकरणम्। तत् षट्प्रकारम्। वैषयिकम् १, औपश्लेषिकम् २, आभिव्यापकम् ३, नैमित्तिकम् ४ सामीप्यकम् ५, औपचारिकम् ६, चेति। विषयो नान्यत्र भावः। यथा–दिवि देवाः सन्ति। यत्रैकदेशसंयोगः स उपश्लेषः। यथा–चैत्रः कटे आस्ते; गृही गृहे तिष्ठति। यत्र सर्वाङ्गसंयोगस्तदभिव्यापकम्। यथा–तिलेषु तैलम्, दध्नि घृतम्। यस्य यन्निमित्तं तन्नैमित्तिकम्। यथा–शूरो युद्धे संनह्यते, व्याधो दन्तयोः कुञ्जरं हन्ति। समीपमेव सामीप्यम्। यथा–गङ्गायां घोषः, गङ्गासमीपे घोष इत्यर्थः। शकुनिराकाशे याति, भक्तिमान् गुरौ नमति। यदुपचाराद्भवेत्तदौपचारिकम्। यथा–अङ्गुल्यग्रे करिशतमास्ते।

अस्यायमिति सम्बन्धः। षष्ठ्युत्पत्तिस्तु मुख्यात्। तस्माद्विवक्षया सर्वाणि कारकाणि भवन्ति। स्वस्वामित्वादिभेदेन षष्ठ्यधिकशतमर्थाः

सन्ति। स्वस्वामित्वे यथा—राजा भूमेः पतिः, अयं गवां स्वामी। जन्यजनकसम्बन्धे यथा—पार्वतीपरमेश्वरौ जगतः पितरौ।

वध्यवधकभावे यथा—हरिः कंसस्य हिंसकः।

भोज्यभोजकभावे यथा—मयूरोऽहेर्भोक्ता।

धार्यधारकभावे यथा—भृत्यश्छत्रस्य धारकः।

उक्ता अनुक्तविभक्तयः।

अथोक्तविभक्तीराह। तत्रोक्तः कर्त्ता यथा—जिनो जयति। कारको देवदत्तः। वैयाकरणः पुरुषः। कृतप्रणामो जनः। एवमादिष्वाख्यात-कृत्-तद्धितप्रत्ययानां समासस्य च कर्त्तरि विहितत्वादुक्तः कर्त्तेत्युच्यते। उक्ते कर्त्तरि प्रथमैवेति न्यायात्, प्रथमा। १।

'जैनेन जीवदया क्रियते' इत्युक्तं कर्म। २।

'स्नात्यनेनेति स्नानीयं चूर्णम्' इत्युक्तं करणम्। ३।

'दीयतेऽस्मै इति दानीयो ब्राह्मणः, एवं दक्षिणीयो ब्राह्मणः' इह संप्रदाने ईयप्रत्ययः, एवं 'दत्तभोजनोऽतिथिः' समासोऽत्र संप्रदाने। एवमादिषूक्तत्वात् संप्रदाने प्रथमा। ४।

उक्तमपादानं यथा—'बिभेत्यस्मादसौ भीमो राक्षसः', एवं 'उच्छिन्न-जनपदो देशः' समासोऽत्रापादाने। एवमादिषूक्तत्वादपादाने प्रथमा। ५।

उक्तमधिकरणं यथा—'आस्यतेऽस्मिन् तदासनम्' करणाधिकरण-योश्चेत्यधिकरणे युट्। एवं 'वटकिनी पौर्णमासी' प्रायेण वटकानि भुज्यन्तेऽस्यामित्यधिकरणे तद्धितेऽन् प्रत्ययः। एवं 'मत्तबहुमातङ्गं वनम्' समासोऽत्राधिकरणे। एवमादिषूक्तत्वादधिकरणे प्रथमा। ६।

उक्तसम्बन्धो यथा—गावो विद्यन्तेऽस्य गोमान् देवदत्तः, एवं चित्र-गुर्देवदत्तः। समासोऽत्र सम्बन्धे। एवमादिषूक्तत्वात्सम्बन्धे प्रथमा। ७।

इत्युक्तविभक्तयः।

अथोक्त्युपयोगिनस्तदक्षरशब्दसंस्काराः केचित्तदर्थशब्दसंस्कारा अपि दर्श्यन्ते—

[देश्यशब्दाः तेषां संस्कृतरूपाणि च।]

अरिहंत अर्हन्।	सूरिज सूर्यः।
सुहगुरु शुभगुरुः।	मगसिरनषत्र मृगशिरोनक्षत्रम्।
ओझउ उपाध्यायः।	आदरा आर्द्रा।
आचारिज आचार्यः।	असलेस अश्लेषा।
ठवणारी स्थापनाचार्यः।	सनीचर शनैश्चरः।
साध साधुः।	राह राहुः।

केत केतुः ।
सुषमाअरउ सुषमारकः ।
दुषमाअरउ दुःषमारकः ।
मुहूरत मुहूर्त्तः ।
अंधारउ अन्धकारम् ।
अमावस अमावास्या ।
पोस पौषः ।
माह माघः ।
फागुण फाल्गुनः ।
चेत चैत्रः ।
वइसाख वैशाखः ।
जेठ ज्येष्ठः ।
आसाढ आषाढः ।
सावण श्रावणः ।
भाद्रवउ भाद्रपदः ।
आसू आश्विनः ।
काती कार्त्तिकः ।
छ रितु षड् ऋतवः ।
सरतकाल शरत्कालः ।
वरसालउ वर्षाकालः ।
वरस वर्षम् ।
अहोरात अहोरात्रः ।
ततकाल तत्कालम् ।
आगास आकाशम् ।
मेह मेघः ।
करा करकाः ।
पूरव दिश पूर्वा दिक् ।
दक्खिण दक्षिणा ।
पच्छिम पश्चिमा ।
उत्तर उत्तरा ।
विदिस विदिक् ।
अपछर अप्सरसः ।
जउराणउ यमराजः ।
भइरव भैरवः ।
गोरी गौरी ।
चाउंडा चामुण्डा ।
श्रीवच्छ श्रीवत्सः ।
लखमी लक्ष्मीः ।
सरसती सरस्वती ।
सारद शारदा ।
सूगडांग सूत्रकृताङ्गम् ।
ठाणांग स्थानाङ्गम् ।
सज्झाय स्वाध्याय ।
पहेली प्रहेलिका ।
वातचीत वार्त्ताचिन्ता ।
ऊतर उत्तरम् ।
असोई उपश्रुतिः ।
चाटुकारिया वचन चाटुकारिकाणि वचनानि ।
साच सत्यम् ।
कूड कूटम् ।
ऑलंभउ उपालम्भः ।
आण आज्ञा ।
वाजित्र वादित्रम् ।
वाजउ वाद्यम् ।
अवाज आतोद्यम् ।
पडहउ पटहः ।
आशंक आशङ्का ।
चोज चोद्यम् ।
अचरिज आश्चर्यम् ।
आंसू अश्रुः ।
नींद निद्रा ।
स्वस्थपणउ स्वास्थ्यम् ।
उच्छुकपणउ औत्सुक्यम् ।
आलस आलस्यम् ।
जिणचंदभट्टारक जिनचन्द्रभट्टारकाः ।
छावडउ श्रावकः ।

कुंअर कुमारः ।
जोवन यौवनम् ।
वूढउ वृद्धः ।
वडपण वार्द्धकम् ।
सीख्यउ शिक्षितः ।
विन्यानी वैज्ञानिकः ।
कुच्छित कुत्सितः ।
कायर कातरः ।
घातकू घातुकः ।
चोरी चौरिका ।
वणीमग वनीपकः ।
रीसालू ईर्ष्यालुः ।
भूखियउ बुभुक्षितः ।
भूख बुभुक्षा ।
त्रिसियउ तृषितः ।
भात भक्तम् ।
मांड मण्डः ।
तीमण तेमनम् ।
घेवर घृतवरः ।
दूध दुग्धम् ।
दही दधि ।
खीरि क्षैरेयी ।
मांखण म्रक्षणम् ।
रांध्यउ राद्धम् ।
सीधउ सिद्धम् ।
कांजी काञ्जिकम् ।
वेसवार वेषवारः ।
चूक चुक्रम् ।
आमलवेतस आम्लवेतसः ।
राई राजिका ।
धाणा धान्यकम् ।
पीपलि पिप्पली ।
त्रिगडू त्रिकटु ।
जीरउ जीरकः ।
हींग हिङ्गु ।
चावण चर्वणम् ।
कलेवउ कल्यवर्त्तः ।
धायउ घ्रातः ।
आपणी धायउ आत्मीयघ्रातः ।
धेठउ धृष्टः ।
विलखउ विलक्षः ।
खास कासः ।
खाज खर्जूः ।
गड गडुः ।
कोढ कुष्ठः
हिडकी हिक्का ।
फोडउ स्फोटकः ।
व्याऊ विपादिका ।
लेहउ लेखकः ।
मसि मषी मसी वा ।
सेठि श्रेष्ठी ।
जूआरउ द्यूतकारकः ।
पासउ पाशकः ।
सुआसणी सुवासिनी ।
वहू वधू ।
जानी जन्याः ।
पणीहारि पानीयहारिका ।
डोहलउ दोहदम् ।
पूत पुत्रः ।
भात्रीजउ भ्रात्रीयः ।
भाणेजउ भागिनेयः ।
पोत्रउ पौत्रः ।
दोहीत्रउ दौहित्रः ।
गोलउ गोलकः ।
भाई भ्राता ।
पीतरियउ पितृव्यः ।

सालउ श्यालः ।
साली श्याली ।
माउलउ मातुलः ।
बहिणि भगिनी ।
नणंद ननान्दा ।
बाप बप्पः ।
माइ माता ।
धाई धात्री ।
सासू श्वश्रूः ।
सुसरउ श्वशुरः ।
पितर पितरः ।
सयणाचार स्वजनाचारः ।
आपणउ आत्मीयः ।
सगउ स्वकः ।
सयर शरीरम् ।
मडउ मृतकः ।
मुंड मुण्डः ।
माथइ भमरउ मस्तके भ्रमरकः ।
सिमथउ सीमंतः ।
पली पलितम् ।
मुहडउ मुखकम् ।
निलाड ललाटः ।
कान कर्णः ।
आंखि अक्षि ।
कीकी कीका ।
भिउडी भ्रूकुटिः ।
नाक नक्रम् ।
होठ ओष्ठः ।
गाल गल्लः ।
मूंछ श्मश्रु ।
दाढी दाढिका ।
दाढ दाढा ।
जीभ जिह्वा ।
तालुयउ तालुकम् ।
घांटी घण्टिका ।
गावडि ग्रीवा ।
खांधउ स्कन्धः ।
काख कक्षा ।
पासउ पार्श्वम् ।
कुहणी कफणिः ।
कलाई कलाचिका ।
हाथ हस्तः ।
आंगुली अङ्गुलिः ।
अंगूठउ अङ्गुष्ठः ।
विहथि वितस्तिः ।
ताली तालिका ।
मूठि मुष्टिः ।
चलू चलुकः ।
वाम व्यामः ।
पुरस पौरुषम् ।
पूठउ पृष्ठम् ।
उच्छंग उत्सङ्गः ।
कालिजउ कालेयम् ।
तिली तिलकः ।
प्लीह प्लीहा ।
आंत्र अन्त्राणि ।
कडि कटिः ।
पूंद पुतौ ।
चूति च्युतिः ।
आंड अण्डम् ।
साथलि सक्थि ।
जांघ जङ्घा ।
पींडी पिण्डिका ।
घूंटी घुण्टकः ।
पान्ही पार्ष्णिः ।
लोही लोहितम् ।

हाड हड्डम् ।
पांसुली पर्शुका ।
मींजी मज्जा ।
चांमडी चर्मिका ।
नस स्नसा ।
लाल लाला ।
वीठ विष्ठा ।
गूह गूथम् ।
वेस वेषः ।
मांडणउ मण्डनम् ।
पडवास पटवासकः ।
कपूर कर्पूरः ।
अगर अगुरु ।
जाइफल जातिफलम् ।
कुंकू कुङ्कुमम् ।
लवंग लवङ्गम् ।
मउड मुकुटम् ।
गुंथिवउ ग्रन्थनम् ।
सेहरउ शेखरः ।
वाली वालिका ।
कडउ कटकः ।
नेउर नूपुरम् ।
तंत्र तन्त्रकम् ।
चलणी चलनी ।
कांचली कञ्चुलिका ।
साडी शाटी ।
कच्छोटउ कच्छापटः ।
काछडी कच्छाटिका ।
नातणउ नक्तकः ।
पछेवडउ प्रच्छदपटः ।
गूणि गोणी ।
पालथी पर्यस्तिका ।
नउद नवतः ।
उ० र० २
आथर आस्तरः ।
चंद्रूयउ चन्द्रोदयः ।
गुलणी गुणलयनिका ।
मांचउ मञ्चकः ।
खाटि खट्वा ।
उसीसउ उच्छीर्षकम् ।
आरीसउ आदर्शः ।
अलतउ अलक्तकः ।
लाख लाक्षा ।
काजल कज्जलम् ।
दीवउ दीपः ।
दसी दशा ।
वीझणउ व्यजनकम् ।
कांकसी कङ्कतिका ।
तंबोलरी थई ताम्बूलस्य स्थगी ।
महतउ महामात्यः ।
सुंक शुल्कः ।
अंतेउर अन्तःपुरम् ।
बइरी वैरी ।
मित्राई मैत्री ।
हेरू हैरिकः ।
लांच लञ्चा ।
गूझ गुह्यम् ।
असवार अश्ववारः ।
अंगरखी अङ्गरक्षी ।
धनुष धनुः ।
वेझ वेध्यम् ।
खयडउ खेटकः ।
मोगर मुद्गरः ।
प्रयाणउ प्रयाणकम् ।
राडि राटिः ।
धाडि धाटी ।
सराध श्राद्धम् ।

दीख दीक्षा ।
ईंधण इन्धनम् ।
राख रक्षा ।
छार क्षारः ।
जनोई यज्ञोपवीतम् ।
वणिज वाणिज्यम् ।
मूल मूल्यम् ।
संचकार सत्यङ्कारः ।
नाव नौः ।
वेडी वेडा ।
उधार उद्धारः ।
पडहू प्रतिभूः ।
साखी साक्षी ।
गाउ गव्यूतम् ।
कोस क्रोशः ।
जोअण योजनम् ।
गोवाल गोपालः ।
आहीर आभीरः ।
करसउ कर्षकः ।
खेती क्षेत्री ।
हलरी ईस हलस्य ईषा ।
मई मत्यम् ।
कोदालउ कुद्दालः ।
खणेत्रउ खनित्रम् ।
पराणी प्राजनम् ।
जोत्र योत्रम् ।
मेढी मेधी ।
कारू कारुः ।
माली मालिकः ।
कलाल कल्यपालः ।
मद मद्यम् ।
सूई सूची ।
सूईउ सौचिकः ।
कातरि कर्त्तरी ।
कातरणी कर्त्तनिका ।
त्राकलउ तर्कुः ।
पींजणउ पिञ्जनम् ।
वरता वरत्रा ।
आर आरी ।
सूत्रहार (सूथार) सूत्रधारः ।
वांसोली वासी ।
करवत करपत्रकम् ।
टांकुलउ टङ्कः ।
लोहार लोहकारः ।
कंदोई कान्दविकः ।
नावी नापितः ।
आहेडउ आखेटकः ।
आहेडी आखेटिकः ।
वागुर वागुरा ।
वागुरी वागुरिकः ।
पासी पाशिका ।
भील भिल्लः ।
भूइ भूः ।
धरती धरित्री ।
सींधव सैन्धवम् ।
विडलूण विडलवणम् ।
जवखार यवक्षारः ।
साजी स्वर्जिका ।
खलहाण खलधानम् ।
खलउ खलम् ।
खेड खेटम् ।
खंधार स्कन्धावारः ।
कोट कोट्टः ।
वाणारसी वाराणसी ।
अउज अयोध्या ।
ऊजयणी उज्जयिनी ।

हथिणाउर हस्तिनापुरम् ।
आगरउ अर्गलापुरम् ।
लाहउर लाभपुरम् ।
सरसउपाटण सरस्वतीपत्तनम् ।
वीकानयर विक्रमनगरम् ।
जालउर जावाल्पुरम् ।
साचउर सत्यपुरम् ।
भरुअच्छ भृगुकच्छपुरम् ।
सुरंग सुरङ्गा ।
मसाण श्मशानम् ।
सीहदार सिंहद्वारम् ।
मढ मठः ।
परव प्रपा ।
बार द्वारम् ।
घर गृहम् ।
आगल अर्गला ।
कुंची कुञ्चिका ।
तालउ तालकम् ।
कवाड कपाटम् ।
छावति छदिः ।
मतवारणउ मत्तवारणम् ।
पूतली पुत्रिका पुत्रिला वा ।
सउगडउ समुद्गकः ।
मंजूस मञ्जूषा ।
बुहारी बहुकरी ।
ऊखलउ उदूखलः ।
किडउ कटः ।
मूसल मुशलः ।
चूल्ही चुल्लिः ।
घडउ घटः ।
अंगारसगडी अङ्गारशकटी ।
भाठ भ्राष्ट्राः ।
कडाहउ कटाहः ।

मउणि मणिकः ।
गागरी गर्गरी ।
मंथाणउ मन्थानकः ।
हिमालउ हिमालयः ।
सेत्रुंजउ शत्रुञ्जयः ।
सोवनगिरि सुवर्णगिरिः ।
पाहाण पाषाणः ।
पाथर प्रस्तरः ।
आगर आकरः ।
खाणि खानिः ।
गेरू गैरिकम् ।
सोनागेरू सुवर्णगैरिकम् ।
खडी खटी ।
सिंघाण सिंहानः ।
काटी कट्टिका ।
काट कट्टः ।
तांबउ ताम्रम् ।
त्रउअउ त्रपुकम् ।
कथीर कस्तीरम् ।
रूपउ रूप्यम् ।
पीतल पित्तलम् ।
कांसउ कांस्यम् ।
पारउ पारतः (दः) ।
सोरठी सौराष्ट्री ।
तूरी तुवरी ।
हरियाल हरितालम् ।
हींगलू हिंगुलुः ।
रावटउ राजावर्तः ।
परवाली=प्रवाली प्रवालम् ।
मोती मौक्तिकम् ।
अथाह अस्थाघम् ।
आछउ अच्छम् ।
ओस अवश्यायः ।

पालउ प्रालेयम् ।
हीम हिमम् ।
धूअरि धूमरी ।
फीण फेनः ।
घाट घट्टः ।
वेरा विदारकाः ।
परनालि प्रणाली ।
कूल्ह कुल्या ।
कादम कर्दमः ।
उमाड उल्मुकम् ।
धूअउ धूमः ।
वीजली विद्युत् ।
वाउ वायुः ।
वाडी वाटी ।
वेलि वल्ली ।
जड जटा ।
छालि छल्ली ।
काठ काष्ठम् ।
मांजरि मञ्जरिः ।
पान पर्णम् ।
कली कलिका ।
गोछउ गुच्छः ।
विकस्यउ विकसितम् ।
गांठि ग्रन्थिः ।
पीपल पिप्पलः ।
वड वटः ।
उंवर उदुम्बरः ।
आंवउ आम्रः ।
वील विल्वः ।
केसू किंशुकः ।
कपास कर्पासः ।
वोरि वदरी ।
महूअउ मधूकः ।

वहेडउ विभीतकः ।
हरडइ हरीतकी ।
चांपउ चंपकः ।
जाइ जातिः ।
बीजोरउ वीजपूरकः ।
कयर करीरः ।
धाहडी धातकी ।
कउछ कपिकच्छूः ।
धत्तूरउ धत्तूरकः ।
कउठ कपित्थः ।
नालेर नालिकेरः ।
वांस वँशः ।
नागरवेलि नागवल्ली ।
द्राख द्राक्षा ।
वालउ वालकम् ।
साठी षष्टिकः ।
चणउ चणकः ।
मूंग मुद्गः ।
मउठ मकुष्ठः ।
गोहू गोधूमः ।
वाल वल्लः ।
कुलथ कुलत्थः ।
कुलथी कुलत्थिका ।
तूंअरि तुंवरी ।
सामउ श्यामकः ।
कांग कङ्गुः ।
चीणउ चीनकः ।
सरिसव सर्षपः ।
वथूअउ वास्तुकम् ।
कारेलउ कारवेल्लः ।
कोहलउ कूष्माण्डः ।
चीभडी चीर्भिटी ।
कंकोडउ कर्कोटकः ।

मूलउ मूलकम् ।
रोहीस रोहिषः ।
डाभ दर्भः ।
ध्रोव दूर्वा ।
मोथ मुस्ता ।
त्रिणउ तृणम् ।
खड खटः ।
विस विषः ।
वच्छनाग वत्सनागः ।
कीडउ कीटः ।
जलो जलौकाः ।
कवडउ कपर्दः ।
कउडी कपर्दिका ।
बांभणी ब्राह्मणी ।
घीवेलि घृतेली ।
उदेही उपदेहिका ।
लीख लिक्षा ।
जू यूका ।
छप्पई षट्पदी ।
माकण मत्कुणः ।
वीछू वृश्चिकः ।
भमरउ भ्रमरः ।
खजूअउ खद्योतः ।
मयण मदनम् ।
माखी मक्षिका ।
तिर्यंच तिर्यङ् ।
हाथी हस्ती ।
सूंड शुण्डा ।
आंकुस अङ्कुशः ।
घोडउ घोटकः ।
पूछ पुच्छम् ।
दामण दामाञ्चनम् ।
पाखर प्रक्षरः ।
वाग वल्गा ।
पलाण पल्ययनम्, पर्याणं वा ।
ऊंट उष्ट्रः ।
करहउ करभः ।
गद्दहउ गर्दभः ।
बलद बलीवर्दः ।
सांड षण्डः, षण्ढः ।
धोरी धौरेयः ।
पोठीयउ पृष्ठ्यः ।
सींग श्रृङ्गम् ।
वांझ गाइ वन्ध्या गौः ।
ऊहाडउ ऊधः ।
छाणउ छगणम् ।
गोउल गोकुलम् ।
खीलउ कीलकः ।
छालउ छगलः ।
बाकरउ बर्करः ।
मींढउ मेण्ढकः ।
कूकर कुक्कुरः ।
सीह सिंहः ।
वाघ व्याघ्रः ।
सादूल शार्दूलः ।
चीत्रउ चित्रकः ।
गइंडउ गण्डकः ।
सूअर सूकरः ।
रीछ ऋच्छः, ऋक्षो वा ।
स्याल श्रृगालः ।
लउंकडी लोमटिका ।
सिसलउ शशः ।
गोह गोधा ।
गोहीरउ गोधेरः ।
मूसउ मूषकः ।
ऊंदिरउ उन्दुरः ।

जाहउ जाहकः ।
नउल नकुलः ।
विसहर विषधरः ।
सउण शकुनः ।
पंखी पक्षी ।
चांच चञ्चुः ।
पींछ पिच्छम् ।
पांख पक्षः ।
मोर मयूरः, मोरो वा ।
चांदलउ चन्द्रकः ।
कोइल कोकिलः ।
कोइली कोकिला ।
घूघू घूकः ।
कूकडउ कुक्कुटः ।
चास चाषः ।
वावीहउ बप्पीहः ।
टींटोहडी टिट्टिभः ।
चिडउ चटकः ।
चिडी चटका ।
बगलउ बकः ।
चील्ह चिल्लः ।
सूडउ शुकः ।
सारी शारिका ।
चामाचेड चर्मचटका ।
वागुलि वल्गुलिका ।
आडि आटिः ।
पारेवउ पारापतः ।
तीतिर तित्तिरिः ।
माछलउ मत्स्यः ।
तन्तुअउ तन्तुः ।
काछवउ कच्छपः ।
दादुर दर्दुरः ।
जनम जन्म ।

सास श्वासः ।
आउषउ आयुः ।
कुंअलउ कोमलः ।
सूंआलउ सुकुमालः ।
नीठुर निष्ठुरः ।
महुरउ मधुरः ।
मीठउ मृष्टम् (मिष्टम्)।
पांडरउ पाण्डुरः ।
कविलउ कपिलः ।
सामलउ श्यामलः ।
कावरउ कर्बुरम् ।
पांति पङ्क्तिः ।
थोडउ स्तोकम् ।
ऊजलउ उज्ज्वलम् ।
चोखउ चोक्षम् ।
नयडउ निकटम् ।
सासतउ शाश्वतम् ।
माझ मध्यम् ।
विचालउ विचालम् ।
सारीखउ सदृक्षम्
झांप झम्पा ।
भर्यउ भरितम् (भृतम्)।
वींट्यउ वेष्टितम् ।
दाधउ दग्धम् ।
वीध्यउ विद्धम् ।
फाडियउ पाटितम् ।
छेदियउ छेदितम् ।
लाधउ लब्धम् ।
पठावियउ प्रस्थापितम् ।
कामण कार्मणम् ।
सांकडउ संकटम् ।
उच्छव उत्सवः ।
मेलउ मेलकः ।

विघन विघ्नः ।
परिचउ परिचयः ।
काज कार्यम् ।
ऊपरि उपरि ।
आगइ अग्रतः ।
सांप्रत सांप्रतम् ।
अरिहंतभणी नमो अर्हते नमः ।
सद्दहियउ श्रद्धितम् ।
वांकउ वक्रम् ।
कूंपल कुड्मलम् ।
मणसिल मनःशिला ।
सुमिणउ स्वप्नः ।
पीहर पितृगृहम् ।
आलउ आर्द्रम् ।
सिढिल शिथिलम् ।
करीस करीषः ।
गुहिरउ गम्भीरम् ।
विहूणउ विहीनः ।
पीठ पीठम् ।
मउर मुकुरम् ।
गरुयउ गुरुकम् ।
भिंगार भृङ्गारः ।
वींट वृन्तम् ।
सिंगार शृङ्गारः ।
रिणउ ऋणम् ।
गारवउ गौरवम् ।
गउरवान गौरं गौरवर्णं च ।
सांकलउ शृङ्खलम् ।
छांह छाया ।
नीमी नीवी ।
झीणउ क्षीणम् ।
खोडउ क्षो(क्षौ?) टकः ।
\ **जट्ट** जर्त्तः ।
भसम भस्म ।
दाहिणउ-दक्षिणः ।
कोहली कूष्माण्डी ।
सलाह श्लाघा ।
हलुअउ लघुकः ।
सीप शुक्तिः ।
मइलउ मलिनम् ।
छोति छुप्तिः ।
अछूतउ अच्छुप्तः ।
हेठइ अधः ।
तुम्ह केरउ युष्मदीयः ।
अम्ह केरउ अस्मदीयः ।
एकलउ एकः (एककः) ।
नवलउ नवः ।
पीलउ पीतम् ।
काठउ गाढम् ।
जेवडउ यावान् ।
तेवडउ तावान् ।
वीच वर्त्म ।
वहिलउ शीघ्रम् ।
झगडउ झगटकः ।
कोड कौतुकम् ।
जुआ जुआ पृथक् पृथक् ।
समधात समधातुः ।
गीत धातइ गायउ गीतं धातुना गीतम् ।
आगइ वाघ अग्रे व्याघ्रः ।
पाछइ दोतडि पश्चाद्दुस्तटी ।
वरतरकाटिवउ वरत्राकर्त्तनम् ।
सड्यउ शटितम् ।
मांडी मण्डिका ।
लापसी लपनश्रीः ।
गुलमंडा गुडमण्डका ।
वीनती विज्ञप्तिः ।

कच्चोलउ कच्चोलकः ।
डोइलउ दारुहस्तकः ।
कुघाट कुघाटः ।
कावडि कावाकृतिः ।
चूकउ चुक्कितः ।
आरती आरात्रिकम् ।
मंगलेवउ मङ्गलदीपकः ।
धत्तूरियउ धत्तूरितः ।
बूंब बुम्बा ।
सार सारा ।
गलणउ गलनकम् ।
दंतसूकट दन्तशकटः ।
खीचडउ क्षिप्रचटः ।
राव रव्वा ।
कणहतउ कणभक्तम् ।
वेगउ वेगवान् ।
ऊधारइ उद्धारके ।
वाहरू व्याहारकः ।
हेडाऊ हेडावित्तः ।
धरणइ धरणके ।
कूचउ कूर्चकः ।
पोटली पोट्टलिका ।
पोटलिया पोट्टलिकाः ।
नीसाण निःस्वानः ।
कांठलउ कण्ठकः ।
पाहरू प्राहरिकः ।
पीठी पिष्टिका ।
अखत्र अक्षत्रम् ।
औंलग अवलगा ।
संधूख्यउ संधुक्षितः ।
पहुरइ प्रहरके ।
लालि लल्लिः ।
किलकिलाट किलकिलायितम् ।

बीह बिभीषिका ।
तलार तलारक्षः ।
सेल शल्यः ।
साल शल्यम् ।
चूणि चूर्णिः ।
फाटउ स्फाटितम् ।
गोफणि गोफणी ।
ओठी औष्ट्रिकः ।
कापडी कार्पटिकः ।
विसोआ विंशोपकाः ।
सींगडी श्रृङ्गिका ।
चाकी चक्रिका ।
चकरडी चक्रिका ।
दोहणी दोहिनी ।
पूत्रेलउ पुत्रकः ।
गूजर गूर्जरः ।
गूजरी गूर्जरी ।
नाथियउ नस्तितः ।
अखाडउ अक्षपाटकः ।
दाणमंडही दानमण्डपिका ।
मूली मूलिका ।
सूली शूलिका ।
ध्रुवउ ध्रुवकः ।
मढी मठिका ।
भमरडउ भ्रमरकः ।
गोमूत्री गोमूत्रिका ।
पूलउ पूलकः ।
पुडउ पुटकः ।
दाणउ दानकः ।
सींगउ श्रृङ्गकम् ।
किवाडी कपाटिका ।
कांवडी कंवाष्ठिका ।
सउणी शकुनिकः ।

पावटउ पादावर्त्तः ।
गदहिला गर्दभिल्लाः ।
लात लत्ता ।
सेरी सेरिका ।
सीरवी सीरपतिः ।
नाहर नाखरः ।
रोझ रोह्यः ।
आखलउ आस्खलकः ।
निसरावउ निश्रावः ।
डहर दहरः ।
मुजल मुखजलम् ।
महुआल मधुजालम् ।
सिलावटउ शिलावर्तकः ।
जाडउ जाड्यम् ।
मुखास मुखास्या ।
दंतूसल दन्तमुसलः ।
रती रक्तिका ।
बीयउ बीजकः ।
अंकोडउ अंकुटकः ।
लट्टू लट्वा ।
वडी वटिः ।
धणिया धनीयम् ।
कहाणी कथानिका ।
खटमल खट्वामल्लः ।
भडिथ भडित्रम् ।
डाकर डात्कारः ।
लींडी लिण्डिका ।
पाणी पानीयम् ।
पाण पानम् ।
जडी जटी, जटिका ।
सीअल शीतलिका ।
पाइणि पद्मिनी ।
पमोडी पद्मकर्कटी ।

वही वहिका ।
पान्हउ प्रस्रवः ।
आलावउ आलापकः ।
अदेसउ उद्देशकः ।
रतांजणी रक्तचन्दनम् ।
खीरणी क्षीरिका ।
पतंग पत्राङ्गं पतङ्गं वा ।
कूंभट कुब्जकण्टकः ।
बहेडउ बहेटिकः, विभेदको वा ।
धामण धर्मणः ।
लेसूडउ लेखशाटकः ।
गोखरू गोक्षुरः ।
कांडी कण्डी ।
भांखडी भक्षटः ।
मरूअउ मरुबकः ।
एलियउ ऐलेयम् ।
बेल बेला ।
खरहडी खरकाष्ठिका ।
देवालि देवताली ।
कासुंदउ कासमर्दः ।
संद स्यन्दः ।
बीजाबोल बीजकब्रोलः ।
सातपरिया सप्तपर्यायाः ।
पवित्री पवित्रकम् ।
मुहछण मुखक्षणः ।
हाक हक्का ।
हासी हासिका ।
नवारसउ नवायसम् ।
चीलहसाग चिल्लीशाकम् ।
पाइली पल्ली ।
कुंभी कुंभिका ।
कंसाल कंसालः ।
त्राकडीवेलउ तुलावेल्कः ।

कुंपी कुम्पिका ।

कचोलउ कच्चोलकम् ।

कांगउ कगः ।

ग्वालेर गोपालगिरिः ।

घिसि घृष्टिः ।

परसु परश्वः ।

जमवारउ जन्मवारकः ।

गिलगिली गिलद्गिलिका ।

बकोर बर्करिका ।

खयर वडी खदिरवटिका ।

धनागरउ धान्यनागरम् ।

काकडीरउ गिर कर्कट्या गिरः ।

कोरियउ पात्रउ कोरितं पात्रम् ।

कोरिवउ कोरवणम् ।

सूंहाली सुकुमारिका ।

चीठी चीष्ठिका ।

दसेआगलउ दशभिरर्गलः ।

गादी गद्दिका ।

धीया न पुत्ता धीदा न पुत्रः ।

चाथ(प्र० वाघ)रि च(प्र० व)स्तरी ।

तूणियउ कापडउ तूर्णित कर्पटम् ।

अढारइ नात्रा अष्टादशनात्रकाणि ।

नहरणी नखहरणी, नखरदनिका वा ।

नखांरउ समारिवउ नखाना समारणं समारचनं वा ।

सांजउ मात्राविना निरोध न करइ संयतो मात्रकं विना निरोधं न करोति ।

केलि कदली ।

केला कदलीफलानि ।

चपलांरी फली चपलकानां फल्यः ।

धोवणी धावनिका ।

जयणा यतना ।

सीलउ आहार वाइलउ हवइ शीतल आहारो वातलो भवति ।

वाछडउ गाइ धायउ वत्सको गां धावितवान् ।

पात्रांरउ काप पात्राणां कल्पः ।

मूठउ मुष्टः ।

रूठउ रुष्टः

तूठउ तुष्टः ।

राखडी रक्षाटिका ।

काकरउ कर्करः ।

संदेसउ संदेशकः ।

सोनारउ मणियउ सुवर्णस्य मणिकः ।

विरूयउ विरूपकम् ।

संथारउ संस्तारकः ।

पहिलउ आपइ पछइ बापइ प्रथममात्मनः पश्चाद्बप्पस्य ।

वरसोला वर्षोपलः ।

तको आयउ तकः आगतः ।

तका मुहपती तका मुखपोतिका ।

दाम करइ काम द्रम्मः करोति कर्म ।

गहिलउ घणुं उतावलउ हवइ ग्रहिलो घनमुत्तालो भवति ।

आगी वीझाई अग्निर्विध्यातः ।

गुल गुलियउ गुडो गुल्यः ।

साकर मीठी शर्करा मिष्टा ।

आखा त्रीज अक्षततृतीया ।

भाउ वीज भ्रातृद्वितीया ।

दीवाली दीपालिका ।

होली होलिका ।

आंवइरा मउरा आम्रस्य मयूरा. ।

लेसाल लेखशाला ।

पोसाल पोपधशाला ।

थांपणि स्थापनिका ।

बाउची बाकुची ।
घर गृहं घरो वा ।
ओवउ अपवरकः ।
अंतेउरी अन्तःपुरिका ।
पातली लोवडी प्रतला लोमपटी ।
ऊतारणउ अवतारणकम् ।
तंबोली ताम्बूलिकः ।
गांधी गान्धिकः ।
तेली तैलिकः ।
हेवउ हेवाकः ।
मिठाई मृष्टादिका ।
सूंखडी सुखादिका ।
ऊभउ ऊर्द्धः ।
बइठउ उपविष्टः ।
तंबोल बीडउ ताम्बूलबीटकम् ।
आलजाल बोलइ आलजालं ब्रवीति ।
सीकारा मूकइ सीत्कारान् मुञ्चति ।
पोईस पूतिकेशः ।
छानउ छन्नः ।
परतातिं परतप्तिः ।
राइणि राजादनी ।
कुंअरि कुमारी ।
गिलो गडूची ।
आंबारी कातली आम्रकर्त्तलिका ।
पुहुंक पृथुकम् ।
पहूआ पृथुकाः ।
टांक टङ्कः ।
मासउ माषकः ।
आक अर्कः ।
नींबू निम्बुकः ।
सिरघू शिग्रुः ।
छीकउ शिक्यम् ।
थूणी स्थूणी ।
थांभउ स्तम्भः ।
सीविवउ सीवनम् ।
सांडसउ संदंशः ।
मणिआर मणिकारः ।
आंबिली आम्लिकी ।
गाडी गन्त्री ।
डांस दंशः ।
मसउ मशकः ।
अरडूसउ अटरूषः ।
मोरसिखा मयूरशिखा ।
महुलेठी मधुयष्टिः ।
अरीठउ अरिष्टः ।
ल्हसण लशुनः ।
गाजर गृञ्जनम् ।
किरातउ किरातः ।
जीवापोता पुत्रजीवकः ।
थूथउ तुच्छम् ।
दीवडी दृतिः ।
भांगरउ भृङ्गराजः ।
अतिविस अतिविषा ।
धाणी धानाः ।
सातू सक्तवः ।
घररी जाली गृहस्य जालिका ।
गउख गवाक्षः ।
बाण संधियउ बाणः सन्धितः ।
ऊंचउ ऊछालियउ उच्चमुच्छालितः ।
फलहउ फलिहकः ।
झाड झाटः ।
सूआर सूपकारः ।
रसोई रसवती ।
सोनाररी मूस सुवर्णकारस्य मूषा ।
कुंभार हांडी घडइ कुम्भकारो हण्डिकां घटयति ।

सांखडि संखडिः संस्कृतिर्वा ।
वीवाहपगरण विवाहप्रकरणम् ।
पढमाली प्रथमालिका ।
कोठार कोष्ठागारम् ।
भंडार भाण्डागारम् ।
अरहट अरघट्टः ।
घरटी घरिट्टिका ।
घरट घरट्टः ।
चमार चर्मकारः ।
वाणही उपानत् ।
सूपडउ सूर्पकम् ।
चालणी चालनी ।
नीसा निश्रा ।
लोढउ लोष्टकः ।
ढल दलिः ।
नीसरणी निःश्रेणिः ।
पोली पोलिका ।
पूडा पूपकाः ।
वडी वटिका ।
वडा वटकाः ।
लाडू लड्डुकाः ।
खाजा खाद्यकानि ।
ऊकरडी उत्कुरुटिका ।
दुक्खइ करालियउ दुःखेन करालितः ।
साधुसंघाडउ साधुसंघाटकः ।
त्रेगति (डि) त्रिकाष्ठिका ।
तेरइ काठिया त्रयोदश काष्ठिकाः ।
सूतउ घोरइ सुप्तो घोरयति ।
सीयालउ शीतकालः ।
उन्हालउ उष्णकालः ।
घडियालउ घटिकालयः ।
घडी घटिका ।
पहर प्रहरः ।
दीह दिवसः ।
राति रात्रिः ।
वरसात वर्षारात्रः ।
रखवालउ रक्षपालः ।
वासउ वासकः ।
कोठउ कोष्ठकः ।
ओही वींट उपधिवेण्टलिका, उपधिवेष्टिका वा ।
वेसावाडउ वेश्यापाटकः ।
दंडाउंछणउ दण्डकपुञ्छनम् ।
घीरी तरी घृतस्य तरिका ।
ऊकुडउ उत्कुटुकः ।
ऊकडू (प्र०) उत्कुटकः ।
गिलोई गिरोलिका ।
गोआडइरउ खात्र गोवाटकस्य क्षात्रम् ।
पडजीभी प्रतिजिह्वा ।
फोडी स्फोटिका ।
आजिकाल्हि जतियांरउ घण ठाणउ छइं अद्यकल्ये यतीनां घनस्थानकमस्ति ।
दयामणउ दयामनकः ।
निसूग निःशूकः ।
ससूग सशूकः ।
निद्धंधस निर्द्धन्धसः ।
भाणउ भाजनम् ।
थाल स्थालम् ।
थाली स्थालिका ।
रांधणउ रन्धनम् ।
कातती कर्त्तन्ती ।
पींजती पिञ्जन्ती ।
पीसती पिंषन्ती ।
मूंदडी मुद्रिका ।
सांकली संकलिका ।
सरसवेल सर्षपतैलम् ।

अलसिवेल अतसीतैलम् ।
जावेल जात्यतैलम् ।
कडुछी कटुच्छिकिका ।
कडुछउ कटुच्छकः ।
उवाणउ ठाण उद्वानं स्थानम् ।
चेलउ कहियइ घेणू गाइ चेल्लकः कथ्यते घेनुर्गौः ।
वाउलि वातोली ।
लूणकयरा लवणकरीराणि ।
पाउंछणउ पादपुञ्छनकम् ।
ओघउ ओघः ।
निसेजा निषद्या ।
चोलवटउ चोलपट्टः ।
पछेवडी प्रच्छादपटी ।
पडघउ पतद्गृहम् ।
वींटणउ वेष्टनकम् ।
कीटी किट्टिका ।
वानी वर्णिका ।
वानगी वर्णिका ।
पलीवणउ प्रदीपनकम् ।
राजवी राजबीजी ।
काज नीवडियउ कार्यं निर्वर्टितम् ।
जोगवटउ योगपट्टः ।
नवकारवाली नमस्कारमालिका ।
जपमाली जपमालिका ।
ऊछीनउ उच्छिन्नम् ।
खत उपरि खार दीधउ क्षतस्योपरि क्षारो दत्तः ।
कडू कटुकम् ।
निसोत निःश्रोतः ।
वज वचा ।
तज त्वक् ।
राठऊड राष्ट्रकूटः ।
पमार परमारः ।
सोलंकी चौलुक्यः ।
पोरवाड प्राग्वाटः ।
भाट भट्टः ।
ऊड उड्रः ।
ओंड ओड्ड्रः ।
थूभ स्तूपम् ।
थडउ स्थलकम् ।
रूंख रुक्षः (वृक्षः ?)
वाडी वाटिका ।
देवदत्त अधूरउ पूरिसइ देवदत्तः अर्द्धं पूरयिष्यति ।
आठउ अष्टकः ।
लेव लेपः ।
घूंटउ घट्टकः ।
आंबाफाड आम्रफाली ।
पूगीफाड पूगीफलफाली ।
गवाणि गवादनी ।
रूतउ रुतः ।
कुपियउ कुपितः ।
ऊग्रहणी उद्ग्रहणिका ।
खींडी खण्डी ।
पुत्रि जायइ वधामणउ पुत्रे जाते वर्द्धमानकम् ।
घूघुरउ घुर्घुरः ।
सेई सेतिका ।
मुंडउ मुण्डकः ।
कूटणउ कुट्टनम् ।
पीटणउ पिट्टनम् ।
दीवाकाणउ दीपकाणः ।
फरलउ फरलः ।
कोटवाल कोट्टपालः ।
ऊघाडिवउ उद्घाटनम् ।

गुलपापडी गुडपर्प्पटिका ।
गुलधाणी गुडधानाः ।
वलउ वलकः ।
पीढी पीठी ।
छाजउ छाद्यकम् ।
देहरइ आमलसारउ
देवगृहे आमलसारकः ।
गजथर गजस्तरः ।
साभरमती साभ्रमती नदी ।
जउणा यमुना ।
पारस पाहाण स्पर्शपाषाणः ।
चित्रावेलि चित्रकवल्ली ।
गदगदवचन गद्गदवचनम् ।
मणमणउ मन्मनः ।
दादर दर्दरः ।
जाजरउ जर्जरः ।
झालरि झल्लरिका ।
मरमरसबद मर्मरशब्दः ।
तमक तमकः ।
राजान राजानकः ।
रोहीडउ रोहीतकः ।
नारिंग रूंख नारङ्ग रु(वृ ?)क्षः ।
धींगउ धींगः ।
अनाड अनाटः ।
ऊकरडउ उत्कुरुटः ।
अखोड अक्षोटः ।
भांड भण्डः ।
चोरडउ चोरटः ।
लउडउ लकुटः ।
चीकणउ चिक्कणः ।
मायउ मातः ।
गाह गाथा ।
सीथ सिक्थः ।

साथ सार्थः ।
पह पथः ।
माजणउ मज्जनम् ।
जुवान युवानः ।
पोथउ पुस्तकम् ।
त्रापउ तर्पः ।
रांपी रम्पा ।
वेढिमी वेष्टिमा ।
करंबउ करम्बः ।
खेडउ खेटकः ।
पाद्र पद्रम् ।
सीर सिरा ।
पांजरउ पञ्जरः ।
दोरउ दवरकः दोरो वा ।
छीतर छित्वरः ।
चोरइ खात्र पाड्यउ
चौरेण खात्रं पातितम् ।
मादल मर्दलः ।
बाउल बब्बूलः ।
हींडि हिण्डिः ।
कडणि कटिनिः ।
पापड पर्प्पटः ।
कारटउ कारटकम् ।
कारटियउ कारटिकः ।
धड धटः ।
खण क्षणः ।
डहरउ दहरः ।
पींडार पिण्डारः ।
खारउ क्षारम् ।
खप्पर खर्प्परम् ।
खापरउ खर्प्परः ।
चरू चरुः ।
गात्री गात्रिका ।

मई मदी ।
चीखल चिक्खल्लः ।
पाटउ पट्टः ।
राजारउ पटउ राज्ञः पट्टः ।
खाली खिल्ली (प्र० खल्ली)[1] ।
ताल तल्लः ।
गोलउ गोलकः ।
वाउल वातूलः ।
भमलि भृमलः, भ्रमिर्वा ।
कमलउ कामलः ।
हींगवणि हिङ्गुपर्णी ।
आरति अर्त्तिः ।
नीठि निष्ठा ।
धूआ ध्रुवा ।
ध्रू ध्रुवः ।
माणी मानिका ।
नीक नीका[2] ।
कणी कणिका ।
मजीठ मञ्जिष्ठा ।
ऊन ऊर्णा ।
प्रतीठ प्रतिष्ठा ।
पाज पद्या ।
सेस शेषा ।
ईस ईषा ।
भालि भल्लिः ।
पालि पल्लिः ।
चाचरि चच्चरिः ।
खली खलिः ।
तूली तूलिः ।
फूटी काकडी स्फुटिकर्कटी ।
कांबी कम्बिः ।
वेठि विष्टिः ।
गिरठि गृष्टिः ।
काणि कानिः ।
पासाकेवली पाशककेवली ।
संधूखण संधुक्षणम् ।
नाणउ नाणकम् ।
पींगाणउ पिंगाणम् ।
पिंगाणी पिङ्गाणिका ।
सयरइ वलि शरीरे वलिः ।
कुढि कुष्ठी ।
कुट्टि कुट्टी ।
हुडुक हुडुकः ।
मोगरउ मुद्गरम् ।
अंकोल अङ्कोठः ।
वाटि वर्त्तिः ।
आखउ अक्षतः ।
आखा अक्षताः ।
आबू अर्बुदः ।
खीरणी क्षीरिणी ।
क्यारउ केदारः ।
दीवमंदिर द्वीपमन्दिरः ।
पुडउ पुटः ।
पडल पटलम् ।
कांदउ कन्दः ।
डोडी दोडी ।
काठीहारउ काष्ठाहारकः ।
हींडिया हिण्डिकाः ।
राउलउ राजकुलम् ।
वाटली वर्त्तुलिका ।
थली स्थली ।
सालवी शालापतिः ।

प्रत्यन्तरे टिप्पणकम्—१ हस्तपादावमर्दनो रोगः । २ सारिणिः ।

जोडउ यौटकम् ।
अणहारउ अनुहारः ।
आंक अङ्कः ।
कोडिटंका भाडउ कोटिटंका भाटकम् ।
रांक रङ्कः ।
साग शाकम् ।
हरी हरितकम् ।
सूग शूका ।
वधूवर पुंखियउ वधूवरं पुंखितम् ।
सिघ शिखा ।
गूंद गोन्दः ।
खजूर खर्जूरम् ।
खजूरउ खर्जूरकः ।
राई राजिः ।
सांन सञ्ज्ञा ।
आटउ अट्टः ।
चून चूर्णम् ।
चूनउ चूर्णकः ।
कुंढ कुण्ठम् ।
कूड कूटम् ।
व्रणरउ पाटउ व्रणस्य पट्टः ।
सिलापट शिलापट्टः ।
मांचइरी वडी मञ्चकस्य वटी ।
वाटभोजन वाटभोजनम् ।
वाडि वृतिः ।
कूआकंठइ कूपकण्ठे ।
तपरी काष्ठा तपसः काष्ठा ।
कुंढगोठि कुण्ठगोष्ठी ।
कुंठसस्त्र कुण्ठं शस्त्रम् ।
कोठउ असुद्ध कोष्ठः अशुद्धः ।
निवायउ कोठउ निर्वातः कोष्ठः ।
नीठ कियउ निष्ठया कृतः ।
भली निष्टा भव्यनिष्ठा ।
छट्ठीलिखित षष्ठीलिखितम् ।
तापसरी कुण्डी तापसस्य कुण्डी ।
तीरथइ कुंड तीर्थे कुण्डः ।
खंडी थाली खण्डी स्थाली ।
खांडउ गोधउ खंडो गोधवः ।
पिण्डखजूर पिण्डीखर्जूरम् ।
प्रसादरा खण प्रासादस्य क्षणाः ।
कूंभीउपरि थांभउ कुम्भ्या उपरि स्तम्भः ।
वस्तुरी वाणि वस्तुनो वाणिः ।
जायउ पूत जातः पुत्रः ।
रातउ रक्तः ।
विरतउ विरक्तः ।
लोकांरी सोइ लोकानां श्रुतिर्वार्त्ता ।
वस्त्रगांठि वस्त्रग्रन्थिः ।
गलगांठी गलग्रन्थयः ।
मांदउ मन्दः ।
रांधउ धान रन्ध्यं धान्यम् ।
गंगेटी गङ्गेष्टिका ।
गाभरू गर्भरूपम् ।
वाछरू वत्सरूपाणि ।
वाछडा वत्सकाः ।
ठाणउ स्थानकम् ।
वणी वनी, ह्रस्वं वनम् ।
कांसीवाजउ कांस्यवाद्यम् ।
सीख शिक्षा ।
छुरउ छुरः ।
खुरउ क्षुरः ।
कुंभाररउ चाक कुम्भकारस्य चक्रम् ।
कपीलउ काम्पिल्यम् ।
टार टारः ।
धानघीरी तरी धान्यघृतस्य तरी अवस्था ।
सापरउ दर सर्पस्य दर. ।
डर दर. ।

नेत्रउ नेत्रम् ।
सीहरी फाल सिंहस्य फालः ।
फालरउ परिधान फालस्य परिधानम् ।
घररा वला गृहस्य वलयः ।
रूखउ रूक्षम् ।
पासउ पार्श्वम् ।
खाटकी खट्टिका ।
हाटडी हट्टिका ।
माथइ खोल मस्तके खोलक ।
सेजगंडूआ शय्यागण्डका ।
धणिया ओसड धनिका औषधम् ।
घरधणियाणी गृहधनिका ।
पाडउ पाटकः ।
साथियउ स्वस्तिकः ।
भस्मसूत भस्मसूतकम् ।
सूआ सूचका ।
बीजी भूमि द्वितीया भूमिका ।
भूमिका रचना ।
काकींडउ काकिंडः, काकपिण्डः ।
दोहडउ द्रोहाटः ।
चीपिडउ चिपिटः ।
गायांरउ चरउ गवां चरणम् ।
मकनउ हाथी मत्कुणो हस्ती ।
करमदउ करमर्दकः ।
घूघुरी घूर्घुरी ।
तिल पील्या तिलाः पीडिताः ।
गलहथउ गलहस्तः ।
गामरउ गोयरउ ग्रामस्य गोचरः ।
कुंआरीरी घाघरी कुमार्या घर्घरी ।
कुंमारउ सोनउ कुमारं सुवर्णम् ।
कूबडउ कूबरः ।
दादुर वाजउ दर्दुरवाद्यम् ।
नांगर नागरम् ।
उ० र० ४
देहरइरउ निकरउ देवगृहस्य निकरः ।
वालर काकडी वल्लरकर्कटी ।
कुचेल कुचेलः ।
पुप्फपडली पुष्पपटली ।
मयणहल मदनफलम् ।
खडगरउ पडीआर खड्गस्य प्रत्याकारः ।
वाहर व्याहरा ।
वाहरू व्याहारिकः ।
गुणाणी गुणनिका ।
घाघर नदी घर्घरिका नदी ।
चउपउ चतुष्पदम् ।
छीकणी छिक्किका ।
कसी कषीका, कशी वा ।
कुसि कुशा ।
समि कियउ समीकृतः ।
सिम कियउ सिमीकः ।
पालणउ पालनकम् ।
परचूरणि लेखउ प्रचूर्णि लेख्यकम् ।
बावनउ चंदन द्विपञ्चाशकं चन्दनम् ।
पादरियउ पाद्रिकः ।
गामडिउ ग्रामटिकः ।
धूणियउ धूनितम् ।
कुरुटतउ कुरुटन्, कुरुट धातुः ।
रुलियउ रुलितः, रुल धातुः ।
खेलणउ खेलनकम् ।
क्रयाणारी भरणी क्रयाणकानां भरणिका ।
वलतउ वलन् ।
ऊवलतउ उद्वलन् ।
गलहथियउ गलहस्तितः ।
लाहणउ लाभनकम् ।
हाडफूटि हड्डस्फोटिः ।
झामलउ ध्यामलम् ।
नीठियउ निष्ठितम् ।

कांठउ कण्ठकः ।
गोहूंरी थूली गोधूमानां स्थूला ।
खऊ खकः ।
पाजणी पर्यायणिका ।
अंधमूंधपणइ अन्धमुग्धिकया ।
वणवउ वयनम् ।
पहिरयउ परिहितम् ।
आधासीसी अर्द्धशीर्षी ।
काकडासींगी कर्कटशृङ्गिका ।
नासिवा करतउ नष्टुं कुर्वन् ।
मेथीरा लाडू मेथ्या लड्डुकानि ।
पीपलरी पीपी पिप्पलस्य पिप्पका ।
विहाणउ विभातम् ।
वहिरउ बधिरः ।
सिरीस शिरीषः ।
फूटरउ स्फुटतरः ।
जानीवासउ जन्यावासकः ।
ऊधंधलु उद्धूलिकम् ।
उसीआलु अस्पृष्टालयम् ।
घूंघटउ अवगुण्ठनम् ।
आहर जाहर एहिरे याहिरा ।
चांद्रिणु चन्द्रिकालयम् ।
धणीवउ धन्यवयाः ।
नीखणियामउ निःक्षणकर्मा ।
मेराईउ मेरायकम् ।
वादलउ वारिदपटलम् ।
अभोखउ अभ्युक्षणम् ।
ऑलखउ उदकोदञ्चनः ।
पछोकडउ पश्चादोकः ।
उपवासीउ उपोपितः ।
पोसहथउ पोपधस्थः ।
हियाविउं हृदयार्पितम् ।
फुईहाई पितृष्वस्रीयः ।
मासिहाई मातृष्वस्रीयः ।
मामउ मामकः ।
मामी मामकी ।
पाटूआली पादप्रहारिणी ।
अरत परत वाप सरीखउ
आकृत्या प्रकृत्या बप्पसदृशः ।
अंगीठउ अग्निपीठम् ।
ऊघड दूघडउ उद्घटदुर्घटम् ।
चीफाड चित्तस्फोटकः ।
निलखणउ निर्लक्षणः ।
अहीणुं अधेनुकम् ।
उपरि ठाई उपरिस्थायी ।
कांकसी कचाकर्षणी ।
हथीयार हस्ताधारः ।
कउसीसउ कपिशीर्षकम् ।
मुखामुखि मुखामुख्यता ।
गोगीडउ गोकीटः ।
ऑलउ उपालयः ।
नीकउ निष्कः ।
कल्होडउ कलभोत्कटः ।
आलीगारउ अलीककारः ।
पाटू पादघातः ।
दीवी दीपिका ।
भंजवाड भङ्गपातः ।
पडाई पताकिका ।
पेलावेलि प्रेराप्रेरि ।
वियारियउ विप्रतारितः ।
छेतरियउ छलान्तरितः ।
दडवडाइउ द्रवकघातितः ।
खाजहलउ खाद्यफलम् ।
पीजहलउ पेयफलम् ।
वाउलउ वार्त्तालयः ।
ऊजाणी उद्यानिका ।

भोगल भुजार्गला ।
मेहरू महत्तरः ।
देखाविखि दृष्टापेक्षा ।
वरांसियउ विपर्यस्तः ।
आज अद्य ।
कालिह कल्ये ।
परम परे द्यविः ।
अरीम अपरेद्युः । अन्यस्मिन्नहनि ।
अन्येद्युः ।
आजूणउ अद्यतनम् ।
काल्हणउ कल्यतनम्, ह्यस्तनम् ।
हिवडां इदानीम् ।
अहुण अधुना ।
हिवडांनुं आधुनिकम् ।
मुहिया मुधा ।
जिम यथा ।
तिम तथा ।
जां यावत् ।
तां तावत् ।
एकवार एकदा ।
सवइवार सर्वदा ।
जहियइ यदा ।
तहियइ तदा, तदानीम् ।
कहियइ कदा ।
अनेरीवार अन्यदा ।
किहां कुत्र, क्व ।
जिहां यत्र ।
तिहां तत्र ।
इहां अत्र ।
अनेतइ अन्यत्र ।
सगलइ सर्वत्र ।
झटकइ झटिति ।
जूउ युतः ।

ताहरुं त्वदीयम् ।
माहरुं मदीयम् ।
तुम्हारुं युष्मदीयम् ।
अम्हारुं अस्मदीयम् ।
किसउ कीदृशः ।
जिसउ यादृशः ।
तिसउ तादृशः ।
इसउ ईदृशः ।
अनेसउ अन्यादृशः ।
अम्हसरीपउ अस्मादृशः ।
तूंसरीपउ त्वादृशः ।
मूंसरीपउ मादृशः ।
तुम्हसरीपउ युष्मादृशः ।
जेतलुं यावन्मात्रम् ।
तेतलुं तावन्मात्रम् ।
एतलुं एतावन्मात्रम्, इयन्मात्रम् ।
केतलुं कियन्मात्रम् ।
ऑरहुं अर्वाक् ।
परहउ परतः ।
बाहिरि वहिः, बाह्ये ।
एकपरि एकधा ।
विहुंपरि द्विधा ।

इत्यादि ।

'जडपणउ' इत्यादौ भावे त-त्वौ यण् वा । जडता, जडत्वं, जाड्यम् ।
अहुण ऐषमः, परुः परुत् ।
एक एकत्वसंख्यायामित्येकः । 'तीशोली'ति कः ।
बि द्वौ पुमांसौ, स्त्रियौ, कुले च ।
दउढ द्व्यर्द्धः ।
अढी अर्द्धतृतीयः ।

त्रिण्ह त्रयः, तिस्रः, त्रीणि, पुमांसः, स्त्रियः, कुलानि वा। 'उभेर्द्वत्रौ' वेत्यनेन 'उभ पूरणे' इत्यस्मादिः प्रत्ययोऽस्य च द्वत्रेत्यादेशौ ।

चारि चत्वारः, चतस्रः, चत्वारि। 'चतेरुर्' इत्यनेन 'चतेग् याचने' इत्यस्मादुर्प्रत्ययः।

पांच पञ्च 'पचुङ् व्यक्तीकरणे' 'उक्षि-तक्षी'त्यन् प्रत्ययः।

छ षट् 'सहेः षष् च' इत्यनेन 'षहि मर्षणे' इत्यस्मात् क्विप्, षष् चास्यादेशः।

सात सप्त 'षप्यशौटिभ्यां तन्' इत्यनेन 'षप् समवाये' इत्यस्मात्तन् प्रत्ययः।

आठ अष्ट 'अशौटि व्याप्तौ' इत्यस्मात् 'षप्यशौटिभ्यां तन्' इत्यनेन तन् प्रत्ययः।

नव निधान, नव निधानानि, 'णुक् स्तुतौ' इत्यस्मात् 'उक्षितक्षी' त्यन्।

दस दश्यन्ते दश। 'लूपूयूवृषी'ति किदन्।

इग्यारइ एकादश।

बाइर द्वादश।

तेरइ त्रयोदश।

चउद चतुर्दश।

पनर पञ्चदश।

सोल षोडश।

सतर सप्तदश।

अढार अष्टादश।

इगुणवीस एकोनविंशतिः।

वीस द्वौ दशतो मानमेषां संख्येयानामस्य वा संख्यानस्य विंशतिः। 'विंशत्यादय' इत्यनेन द्वेर्दशदर्थे विभावः। शतिश्च प्रत्ययः।

इकवीस एकविंशतिः।

बावीस द्वाविंशतिः।

त्रेवीस त्रयोविंशतिः।

चउवीस चतुर्विंशतिः।

पंचवीस पञ्चविंशतिः।

छावीस षड्विंशतिः।

सत्तावीस सप्तविंशतिः।

अट्ठावीस अष्टाविंशतिः।

इगुणत्रीस एकोनत्रिंशत्।

त्रीस त्रयोदशतो[1] मानमेषां संख्येयानामस्य वा संख्यानस्य त्रिंशत्। 'विंशत्यादयः' इत्यनेन त्रेस्त्रिन् भावः। शच्च प्रत्ययः।

एकत्रीस एकत्रिंशत्।

बत्रीस द्वात्रिंशत्।

तेत्रीस त्रयस्त्रिंशत्।

चउत्रीस चतुस्त्रिंशत्।

पइंत्रीस पञ्चत्रिंशत्।

छत्रीस षड्त्रिंशत्।

सइंत्रीस सप्तत्रिंशत्।

अठत्रीस अष्टात्रिंशत्।

इगुण चालीस एकोनचत्वारिंशत्।

चालीस चत्वारो दशतो मानमेषां संख्येयानामस्य वा संख्यानस्य चत्वारिंशत्। 'विंशत्यादयः' इत्यनेन चतुरश्चत्वारि भावः शच्च प्रत्ययः।

---

१ त्रयो दशतः=त्रिवारदशतः=वारत्रयदशतः, इति भावः।

इगतालीस एकचत्वारिंशत् ।
बयालीस द्विचत्वारिंशत् ।
त्रनालीस त्रिचत्वारिंशत् ।
चउमालीस चतुश्चत्वारिंशत् ।
पचतालीस पञ्चचत्वारिंशत् ।
छयालीस षट्चत्वारिंशत् ।
सड़तालीस सप्तचत्वारिंशत् ।
अठतालीस अष्टचत्वारिंशत् ।
इगुणपचास एकोनपञ्चाशत् ।
पचास पञ्च दशतो मानमेषां संख्येयानामस्य वा संख्यानस्य पञ्चाशत्, 'विंशत्यादयः' इत्यनेन शत्प्रत्ययः, पञ्चन आत्वं च ।
इकावन एकपञ्चाशत् ।
बावन द्विपञ्चाशत् ।
त्रिपन त्रिपञ्चाशत् ।
चउपन चतुष्पञ्चाशत् ।
पंचावन पञ्चपञ्चाशत् ।
छपन षट्पञ्चाशत् ।
सत्तावन सप्तपञ्चाशत् ।
अठावन अष्टपञ्चाशत् ।
इगुणसठि एकोनषष्टिः ।
साठि षष्टिः । षट् दशतो मानमेषां संख्येयानामस्य वा संख्यानस्य षष्टिः, 'विंशत्यादयः' इत्यनेन षषस्तिः षश्च ।
इगसठि एकषष्टिः ।
बासठि द्वाषष्टिः ।
त्रेसठि त्रिषष्टिः ।
चउसठि चतुःषष्टिः ।
पइंसठि पञ्चषष्टिः ।
छासठि षट्षष्टिः ।
सतसठि सप्तषष्टिः ।
अडसठि अष्टषष्टिः ।
इगुणहत्तरि एकोनसप्ततिः ।
सत्तरि सप्त दशतो मानमेषां संख्येयानामस्य वा संख्यानस्य सप्ततिः । 'विंशत्यादयः' इत्यनेन सप्तनस्तिः ।
इगहत्तरि एकसप्ततिः ।
त्रिहत्तरि द्विसप्ततिः ।
त्रिहत्तरि त्रिसप्ततिः ।
चउहत्तरि चतुःसप्ततिः ।
पंचहत्तरि पञ्चसप्ततिः ।
छहत्तरि षट्सप्ततिः ।
सतहत्तरि सप्तसप्ततिः ।
अठहत्तरि अष्टसप्ततिः ।
इगुण्यासी एकोनाशीतिः ।
असी अष्टौ दशतो मानमेषां संख्येयानामस्य वा संख्यानस्य अशीतिः, 'विंशत्यादयः' इत्यनेन तिप्रत्ययः, अष्टनोऽशी च ।
इक्यासी एकाशीतिः ।
ब्यासी द्व्यशीतिः ।
त्र्यासी त्र्यशीतिः ।
चउरासी चतुरशीतिः ।
पंचासी पञ्चाशीतिः ।
छयासी षडशीतिः ।
सत्यासी सप्ताशीतिः ।
अठ्यासी अष्टाशीतिः ।
नव्यासी नवाशीतिः, एकोननवतिर्वा ।
निऊ नव दशतो मानमेषां संख्येयानामस्य वा संख्यानस्य

नवतिः विंशत्यादयः' इत्यनेन नवनस्तिः।

इकाणू **एकनवतिः।**

बाणू **द्विनवतिः।**

त्र्याणू **त्रिनवतिः।**

चउराणू **चतुर्नवतिः।**

पंचाणू **पञ्चनवतिः।**

छिन्नू **षण्णवतिः।**

सताणू **सप्तनवतिः।**

अठाणू **अष्टनवतिः।**

नवाणू **नवनवतिः।**

सउ **दश दशतो मानमेषां संख्येयानामस्य वा संख्यानस्य शतम्। 'विंशत्यादयः' इत्यनेन दशानां शभावः तश्च प्रत्ययः।**

एकोत्तर सउ **एकोत्तरं शतम्।**

बिडोत्तर सउ **द्व्युत्तरं शतम्।**

तिडोत्तर सउ **त्र्युत्तरं शतम्।**

चउडोत्तर सउ **चतुरुत्तरं शतम्, इत्यादि नवनवतिं यावत्पूर्वोक्तसंख्याशब्दा उत्तरशब्दपरा योज्याः।**

सहस सहस्रम्।

लाख लक्षम्।

कोडि कोटिः।

बीजउ द्वितीयः।

त्रीजउ तृतीयः।

चउथउ चतुर्थः।

पांचमउ पञ्चमः।

छट्ठउ षष्ठः।

सातमउ सप्तमः।

आठमउ अष्टमः।

नवमउ नवमः।

दसमउ दशमः।

इग्यारमउ एकादशः।

बारमउ द्वादशः।

तेरमउ त्रयोदशः।

चउदमउ चतुर्दशः।

पनरमउ पञ्चदशः।

सोलमउ षोडशः।

सतरमउ सप्तदशः।

अठारमउ अष्टादशः।

*

प्राच्यानां मते—**एकादशमः, द्वादशमः, त्रयोदशमः, चतुर्दशमः, पञ्चदशमः, षोडशमः, सप्तदशमः, अष्टादशमः, इति सपूर्वपदादपि नन्तादू मो भवति।**

इगुणीसमउ एकोनविंशतितमः, एकोनविंशो वा।　**वीसमउ** विंशतितमः, विंशो वा।

एकवीसमउ एकविंशतितमः एकविंशो वा।

एवं नवनवतिं यावत्सर्वत्र डट्-तमटौ पर्यायेण योज्यौ। षष्टिसप्तत्यशीतिनवतिशब्देभ्यः संख्यापूर्वपदेभ्यः संख्यापूरणे तमडेव, न डट्। षष्टितमः, सप्ततितमः, अशीतितमः, नवतितमः। सोपपदेभ्यस्तूभावपि एकषष्टितमः एकषष्टः, एकसप्ततितमः एकसप्ततः, एकाशीतितमः एकाशीतः, एकनवतितमः एकनवतः।

सउमउ शततमः ।
सहसमउ सहस्रतमः ।
लाखमउ लक्षतमः ।
कोडिमउ कोटिमः ।
मासमउ दिहाडउ मासतमं दिनम् ।
इग्यारमी एकादशी, एकादशमी वा ।
वीसमी विंशतितमी, विंशी वा ।
त्रिवायउ त्रिपादः ।
चारोली चारकुलिका ।
धाहडी धातकी ।
थीणउ घी स्त्यानं घृतम् ।
मकोडउ मत्कोटः ।
थुड स्थुडम् ।
उगमुगउ अवाग्मूकः ।
ईंडउ अण्डकः ।
ऑलखाणउ उपलक्षणम् ।
सामाई सामायिकम् ।
एकासणउ एकासनकम् ।
ब्यासणउ द्व्यासनकम् ।
आंबिल आचाम्लम् ।
निवी निर्विकृतम् ।
पाडिहारू प्रातिहारिकम् ।
नोहली नवफलिका ।
राइतउ राजिकातिक्तम् ।
केवलउ क केवलः क ।
कानइ का कर्णे का ।
पच्छिम कि पश्चिमायां कि ।
अग्गिम की अग्रिमायां की ।
लहुडइ कु लघुके कु ।
दीरघइ कू वृद्धौ कू ।
एमात्र के एकमात्रायां के ।
बिमात्र कै द्विमात्रयोः कै ।
कानमात को कर्णमात्रयोः को ।
त्रिमातकाना कौ द्विमात्रकर्णेषु कौ ।
मस्तकमींढइ कं मस्तकबिन्दौ कं ।
आगलमींढइ कः अग्रे बिन्द्वोः कः ।
पडिवा प्रतिपत् ।
बीज द्वितीया ।
तीज तृतीया ।
चउत्थि चतुर्थी ।
पांचमि पञ्चमी ।
छठि षष्ठी ।
सातमि सप्तमी ।
आठमि अष्टमी ।
नवमि नवमी ।
दसमि दशमी ।
अग्यारसि एकादशी ।
बारसि द्वादशी ।
तेरसि त्रयोदशी ।
चउदसि चतुर्दशी ।
पूनिम पूर्णिमा ।
अमावसि अमावास्या ।
जइ किम्हइ यदि कथमपि, चेत् ।
पछइ पश्चात् ।
पाछिलउ पाश्चात्यम् ।
साम्हउ संमुखम् ।
सूगामणउ शूकाजनकम् ।
परायउ परकीयम् ।
अजी अद्यापि ।
तांइ तथापि ।
सांझ सन्ध्या ।
पडूंचउ प्रातिभाव्यम् ।
चउघडिउ चतुर्घटिकम् ।
उसूर उत्सूरः ।
आधु अर्द्धः ।
पूरउ पूर्णः ।

उइलउ अर्वाचीनम् ।
परलउ पराचीनम् ।
अऊठ अर्द्धचतुर्थः ।
साढापांच सार्द्धपञ्चकम् ।
कांइ कुतः, कस्मात्, किम् वा ।
दूबलउ दुर्बलः ।
रलीयामणउ रतिजनकम् ।
उदेगामणउ उद्वेगजनकम् ।
सोहामणउ सौभाग्यवान् ।
अगेवाण अग्रानीकः ।
चउकीवट चतुष्कपट्टः ।
ऑरीसउ अवघर्षः ।
सालणउ शालनकम् ।
सिली शिलाका ।
पडसाल प्रतिशाला ।
आंगणउ अङ्गणम् ।
बारवट द्वारपट्टः ।
भारवट भारपट्टः ।
खूणउ कोणकम् ।
डेहली देहली ।
भीति भित्तिः ।
टीपणउ टिप्पनकम् ।
पाटी पट्टिका ।
पोथी पुस्तिका ।
छोह सुधा ।
भीतरउ अभ्यन्तरम् ।
चउगठि चतुष्काष्ठिका ।
पहिरणउ परिधानम् ।
आडण अङ्गमण्डनम् ।
पांगुरणउ प्रावरणम् ।
टीलउ तिलकः ।
वहुरखउ वाहुरक्षकः ।
मुंदडी मुद्रिका ।
कडिदोरउ कटीदवरकः ।
पग पदः ।
लीह रेषा ।
हीअउ हृदयम् ।
थण स्तनौ ।
रूं रोम ।
भूहिरउ भूमिगृहम् ।
पाइक पादातिकः ।
सागडी शकटिकः ।
दडउ कन्दुकः ।
तलाउ तटाकः ।
बहेडउ द्विघटकम् ।
चहुंटी चञ्चूपुटिका ।
कावडि कपोती ।
गरढउ गतार्धवयाः ।
वेगड विकटशृङ्गः ।
पयंतरउ प्रत्यन्तरम् ।
डोकरउ दोलत्करः ।
सीरामण शीताशनम् ।
सउडि संवृतिः ।
सीरख शीतरक्षिका ।
तुलाई तूलिका
मासी मातृष्वसा ।
फुई पितृष्वसा ।
भउजाई भ्रातृजाया ।
बिउणउ द्विगुणम् ।
तिउणउ त्रिगुणम् ।
चउगुणउ चतुर्गुणम् ।
वुहरउ व्यवहर्त्ता ।
कडव कणावा ।
दोटी द्विपटी ।
निद्रालखउ निद्रालक्षः ।
सांडसउ सदंशकः ।

भायडी भल्ला ।
खाट मञ्चिका ।
घडामांची घटमञ्चिका ।
आरती आरात्रिका ।
पोली प्रतोली ।
गंभारउ गर्भागारम् ।
देउली देवकुलिका ।
भमती भ्रमावर्ता ।
सूणहर शयनगृहम् ।
चाचर चत्वरम् ।
चउरी चतुरिका ।
चउसालउ चतुःशालम् ।
दारीवाडउ दारिकावाटकः ।
ऊवट उद्वर्त्म ।
रान अरण्यम् ।
वाफ वाष्पः ।
आधरण आघ्राणं, अधिश्रयणं वा ।
सेवंती शतपत्रिका ।
कणयर करवीरः ।
वेउल विचकिलः ।
पाउल पाटला ।
पुंआड प्रपुनाटः ।
जव यवः ।
कोठीभडउ कोष्ठभेदकः ।
मांडा मण्डका ।
साकुली शष्कुली ।
वालहली वल्लफलिका ।
खीच क्षिप्रः ।
खीचडी क्षिप्रचटिका ।
खारिक खाद्यारिका ।
टोपरउ टोपपरः ।
काढउ क्वाथः ।
तंगोटी तंगपटी ।
साथरउ स्रस्तरः ।
मांची मञ्चिका ।
नही नखिका ।
वइंगणु वृन्ताकम् ।
हलद हरिद्रा ।
आदउ आर्द्रकम् ।
चउरसउ चतुरस्रः ।
धोयण धावनम् ।
मोकलउ मुत्कलः ।
पिहुलउ पृथुलः ।
गाडरि गड्डरी ।
जुआरि युगन्धरी ।
पूअरउ पूतरकः ।
भइरव भैरवी ।
भीखारी भिक्षाचरः ।
दांतिलउ दन्तुरः ।
खोडउ खोडः ।
मातउ मत्तः ।
दोसी दौष्यिकः ।
सांवलउ शम्बलम् ।
प्राहुणउ प्राघुणः ।
लाज लज्जा ।
पजूसण पर्युषणा ।
चउमासउ चतुर्मासकम् ।
अठाही अष्टाह्निका ।
पाखखमण पक्षक्षपणम् ।
पोरसी पौरुषी ।
नवकारसही नमस्कारसहितम् ।
पचखाण प्रत्याख्यानम् ।
पडिकमणउ प्रतिक्रमणम् ।
पडिलेहण प्रतिलेखना ।
वांदणउ वन्दनकम् ।
खामणउ क्षामणकम् ।
काउसग कायोत्सर्गः ।
खमासण क्षमाश्रमणम् ।

वखाण व्याख्यानम् ।
पउंजणी प्रमार्जनिका ।
कम(व)ली कपरिका, कपलिका वा ।
ठवणी स्थापनी ।
पायठवणउ पात्रस्थापनकम् ।
गोछउ गोच्छकम् ।
पायकेसरी पात्रकेशरिका ।
पडलउ पटलकम् ।
रयताणउ रजस्त्राणम् ।
त्रिपणउ तर्पणकम् ।
कडहटउ कटाहटकम् ।
लेखणि लेखनी ।
मसीजणउ मषीभाजनम् ।
वेहणउ वेधनकम् ।
दांडी दण्डिका ।
आचार्यांस आचार्यमिश्राः ।
उपाध्यायांस उपाध्यायमिश्राः ।
वणारिस वाचनाचार्यः ।
पंड्यांस पण्डितमिश्रः ।
गणीस गणिमिश्रः ।
ओली आली ।
बोर बदरम् ।
नोमाली नवमालिका ।
फोफल पूगफलानि ।
मयगल मदकलः ।
अलसी अतसी ।
सालवाहन सातवाहनः ।
पलीवणउ प्रदीपनकम् ।
लाठि यष्टिः ।
कणियार कर्णिकारः ।
कानी कर्णिका ।
माटी मृत्तिका ।
विसंठुल विसंस्थुलः ।
उछाह उत्साहः ।
सींभ श्लेष्मा ।
पांभडी पक्ष्माटिका ।
आलाणथंभ आलानस्तम्भः ।
मरहठ महाराष्ट्रः ।
ताठउ त्रस्तः ।
सीख शिक्षा ।
जस यशः ।
विमासिवउ विमर्शनम् ।
डरयउ दरितः ।
चकयउ चकितः ।
पीपलीमूल पिप्पलीमूलम् ।
जोतिषी ज्योतिषिकः ।
निमित्ती नैमित्तिकः ।
ऊठिवउ उत्थानम् ।
ताली तालिका ।
तिलउ तिलकः ।
मसउ मषः ।
ऊवटणउ उद्वर्त्तनम् ।
सन्यासी सान्यासिकः ।
बांभण ब्राह्मणः ।
हुंछउ उञ्छः ।
पाथउ प्रस्थः ।
आढउ आढकः ।
हाथ हस्तः ।
एवाल जावालः ।
कुडुंबी कुटुम्बी ।
दात्रउ दात्रम् ।
सूंवरी वडी शुंवस्य वटी ।
सुंचल सौवर्चलम् ।
कुरुखेत कुरुक्षेत्रम् ।
कामरू कामरूपः ।
काछउ कच्छः ।
मालवउ मालवः ।
वंग वङ्गाः ।

अंग अङ्गा. ।
मारू मारवः ।
कसमीर कश्मीराः ।
कणउज कन्यकुब्जम् ।
कोसंबी कौशाम्बी ।
चांप चम्पा ।
कूडी कुडः ।
करवती करकपत्रिका ।
घांट घण्टा ।
थूथउ तुच्छम् ।
हीरउ हीरकः ।
वेलू वालुका ।
फुलिंग स्फुलिङ्गः ।
ताड तालः ।
पीलू पीलु ।
गूगल गुग्गुलुः ।
गलियार गलिः ।
विलाडउ बिडालः ।
मंजार मार्जारः ।
पाढ पाठः ।
टसर तसरः ।

साइणि शाकिनी ।
भुइफोड भूमिस्फोटः ।
ऑधाहूली अधःपुष्पी ।
संखाहोली शङ्खपुष्पी ।
सोवा शतपुष्पी ।
सु तद् सः ।
जो यद् यः ।
'तनित्यजियजिभ्यो डद्' इति डद् ।
अउ इदम्, अयम् ।
'इणो दमक्' इति दमक् ।
एह एतद् एषः 'इणस्तद' इति तद् ।
कुण किम्, कः ।
'को डिम' इति डिम् ।
तुं, तुम्हे युष्मद् – त्वम्, यूयम् ।
युपः सौत्रः सेवायाम् ।
हुं, अम्हे अस्मद् – अहं, वयम् ।
'असूच् क्षेपणे' 'युष्यसिभ्यां क्यद्' इति क्यद् ।
आणंद आनन्दः ।

अथ क्रियाविधिविभागः । त्रिविधो धातुः परस्मैपदी, आत्मनेपदी, उभयपदी चेति । तत्र परस्मैपदिधातोः कर्त्तरि परस्मैपदम्, आत्मनेपदिधातोः कर्त्तरि आत्मनेपदम्, उभयपदिधातोः कर्त्तरि उभयपदम् । कर्मणि भावे च त्रिभ्योऽप्यात्मनेपदमेव । प्रत्येकं विभक्तिप्राप्तिमाह –

'हवइ, दियइ, लियइ, करइ, इत्यादौ वर्त्तमानायाः परस्मैपदम् ।

'दीजइ, लीजइ, कीजइ' इत्यादौ कर्मणि वर्त्तमानाया आत्मनेपदम् ।

'देजे, लेजे, करिजे' इत्यादौ एकारान्तवचने सप्तमी ।

'देइ, लेइ, करि' इत्यादौ अनुमति पञ्चमी । क्रियासमभिहारे सर्वकालेषु पञ्चम्या मध्यमपुरुषैकवचनम् । क्रियासमभिहारः पौनःपुन्यं भृशार्थो वा । यथा माघकाव्ये – यो रावणः ।

'पुरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनं, मुषाण रत्नानि हरामराङ्गनाः ।'
अत्रातीते काले हि ।

'दीजउ, लीजउ, कीजउ' इत्यादौ कर्म्मणि पञ्चम्या आत्मनेपदम् ।

'दीधउ, लीधउ, कीधउ' इत्यादौ ह्यस्तन्यद्यतन्यौ परोक्षा च ।

'काल्हि दीधउ' इत्यादौ ह्यस्तन्येव, न परोक्षाद्यतन्यौ ।

'आज दीधउ, आज लीधउ' इत्यादौ अद्यतनी, न परोक्षाह्यस्तन्यौ ।

'म देइ, म लेइ, म करि, म देसि, म लेसि, म करिसि' इत्यादौ माशब्दयोगेऽद्यतनी, मास्म योगे ह्यस्तन्यद्यतन्यौ, माङ्योगे तु यथाप्राप्ते पञ्चमी भविष्यन्ती च ।

'म दीधु, म लीधु, म कीधु' इत्यादौ कर्मणि माशब्दयोगे अद्यतन्याः, मास्मयोगे ह्यस्तन्यद्यतन्योः, माङ्योगे तु पञ्चम्या आत्मनेपदम् ।

'जइ देत, जइ लेत, जइ करत' इत्यादौ क्रियातिपत्तिः ।

'जइ दीजत, जइ लीजत, जइ कीजत' इत्यादौ कर्म्मणि क्रियातिपत्तेरात्मनेपदम् ।

'देसिइ, लेसिइ, करिसिइ' इत्यादौ, 'नही दियइ, नही लियइ, नही करइ' इत्यादौ च भविष्यन्ती ।

'दीजिसिइ, लीजिसिइ, कीजिसिइ' इत्यादौ, 'नही दीजइ, नही लीजइ, नही कीजइ' इत्यादौ च कर्मणि भविष्यन्त्या आत्मनेपदम् ।

'काल्हि देसिइ, काल्हि लेसिइ' इत्यादौ श्वस्तनी ।

'वर्षशत जीविसिइ, वइरी जिणिसिइ' इत्यादौ आशीर्युक्ते भविष्यति काले आशीः ।

अथ कृत्प्रत्ययप्राप्तिमाह—

'देतउ, लेतउ, करतउ' इत्यादौ कर्त्तरि वर्तमाने शतृशानौ परस्मैपद्यात्मनेपदिनोः । उभयपदिन उभावपि ।

'दीजतउ, लीजतउ, कीजतउ' इत्यादौ कर्मणि शानः ।

देणहार, दायकः दाता; लेणहार, लायकः लाता; करणहार, कारकः कर्ता इत्यादौ वर्त्तमाने अकतृचौ ।

'दीधउ' दत्तः दत्तवान्; लीधउ, लातः लातवान्; कीधउ, कृतः कृतवान् इत्यादौ अतीते क्त-क्तवंतू; कर्मणि क्तः, कर्त्तरि क्तवन्तुः । गत्यर्थाकर्मकादिभ्यः कर्त्तरि क्तोऽपि । यथा—अयमागतः आगतवानपि । तथा परस्मैपदिनः क्वसुः, आत्मनेपदिनः कानः, उभयपदिन उभावपि ।

'देइउ, लेइउ, करीउ' इत्यादौ क्त्वा, 'देवा, लेवा, करिवा' इत्यादौ दातुमित्यादि शक्नुज्ञायोगे क्त्वा प्रत्ययोक्तौ तुम् । 'करी जाणुं, पढी सकउं' कर्त्तुं जानामि पठितुं शक्नोमि, इति ।

'देवउ, लेवउं, करिवउं' इत्यादौ कर्मणि तव्यानीयौ—दातव्यं दानीयम्, कर्त्तव्यं करणीयम् । क्वचित् क्यप् घ्यणावपि—कृत्यं, कार्यं चेति ।

'देणाहरु, लेणाहरु, करणाहरु' इत्यादौ भविष्यति काले तुमन्तात् काम-मनसौ, तुमो मलोपश्च । दातुकामः दातुमनाः, कर्त्तुकामः कर्त्तुमनाः ।

अथ क्रियापदानि—

हवइ भवति ।
कलइ कलयति ।
गिणइ गणयति ।
गुणइ गुणयति ।
चीत्रइ चित्रयति ।
दूपइ दूषयति ।
मूत्रइ मूत्रयति ।
रचइ रचयति ।
विरचइ विरचयति ।
वर्णवइ वर्णयति ।
कहइ कथयति ।
परूवइ प्ररूपयति ।
वांटइ वण्टयति ।
हींडोलइ हिंदोलयति ।
धमइ धमति ।
पियइ पिबति ।
जायइ याति ।
लियइ लाति ।
वायइ वाति ।
न्हायइ स्नाति ।
चिणइ चिनोति ।
ऊडइ उड्डयते ।
धूणइ धूनयति ।
करइ करोति, करति वा ।
जागइ जागर्त्ति ।
आदरइ आद्रियते ।
धरइ धरति ।
भरइ भरति ।
मरइ म्रियते ।
वरइ वृणुते ।
हरइ हरति ।
गिरइ गिरति ।
तरइ तरति ।
गायइ गायति ।
ध्यायइ ध्यायति ।
घ्रायइ घ्रायति ।
संकइ शङ्कते ।
हीकइ हिक्कति ।
लिखइ लिखति ।
मागइ मार्गयति ।
अरथइ अर्थति ।
लांघइ लङ्घते ।
अरचइ अर्चयति ।
संकुचइ संकुचति ।
चरचइ चर्चयति ।
पचइ पचति ।
लुंचइ लुञ्चति ।
वाचइ वाचयति ।
वंचइ वञ्चयते ।
सोचइ शोचति ।
सींचइ सिञ्चति ।
पूछइ पृच्छति ।
वांछइ वाञ्छति ।
उपारजइ उपार्जति ।
गाजइ गर्जति ।
आंजइ अनक्ति ।
गुंजइ गुञ्जति ।
कूजइ कूजति ।
तर्जइ तर्जति ।
तिजइ त्यजति ।
पींजइ पिञ्जयति ।
भांडइ भण्डयति ।
भांजइ भनक्ति ।
भाजइ भज्यते ।
मांजइ मार्ष्टि, मार्जति वा ।

लाजइ लज्जते ।
सरजइ सृजति ।
कूटइ कुट्टयति ।
खेडइ खेटयति ।
घटइ घटयति ।
चूंटइ चुण्टयति ।
तोडइ त्रोटयति ।
त्रूटइ त्रुटति ।
मोडइ मोटयति ।
लूटइ लुण्टयति ।
फोडइ स्फोटयति ।
फूटइ स्फुटति ।
लुठइ लुठति ।
ओलंडइ ओलण्डयति ।
क्रीडइ क्रीडति ।
खंडइ खण्डयति ।
जोडइ जोडयति ।
बूडइ ब्रुडति ।
मांडइ मण्डयति ।
पीडइ पीडति ।
कीर्त्तइ कीर्त्तयति ।
चींतवइ चिन्तयति ।
नाचइ नृत्यति ।
पडइ पतति ।
आपडइ आपतति ।
ऊपडइ उत्पतति ।
कुहइ कुथ्यति ।
मथइ मथ्नाति ।
आक्रंदइ आक्रन्दयति ।
कूदइ कूर्दते ।
खायइ खादति ।
निंदइ निन्दति ।
पादइ पर्दते ।
मर्दइ मृद्नाति ।
रोयइ रोदिति ।
वांदइ वन्दते ।
वेयइ वेत्ति ।
हगइ हदते ।
ऊपजइ उत्पद्यते ।
नीपजइ निष्पद्यते ।
संपजइ संपद्यते ।
बांधइ बध्नाति ।
बूझइ बुध्यते ।
झूझइ युध्यते ।
रूंधइ रुणद्धि ।
रांधइ राध्यति ।
आराधइ आराध्यति ।
सूझइ शुध्यति ।
सीझइ सिध्यति ।
साधइ साध्नोति ।
वींधइ विध्यति ।
खणइ खनति ।
जामइ जायते ।
मानइ मानति ।
हणइ हन्ति ।
आपइ अर्प्पयति ।
कुपइ कुप्यति ।
कांपइ कम्पते ।
कलपइ कल्पते ।
जपइ जपति ।
तपइ तपति ।
दीपइ दीप्यते ।
धूपइ धूपयति ।
लींपइ लिम्पयति ।
लोपइ लुम्पति ।
चुंबइ चुम्बति ।

विलंबइ विलम्बते ।
खुभइ क्षोभते ।
खोभइ क्षोभयति ।
लहइ लभते ।
सोभइ शोभते ।
खमइ क्षमते ।
जीमइ जेमति ।
नमइ नमति ।
दमइ दाम्यति ।
भमइ भ्रमति ।
रमइ रमते ।
वमइ वमति ।
कामइ कामयते ।
आक्रमइ आक्रमते ।
खिरइ क्षरति ।
विचारइ विचारयति ।
चोरइ चोरयति ।
पूरइ पूरयति ।
मंत्रइ मन्त्रयते ।
निजंत्रइ नियन्त्रयति ।
फुरइ स्फुरति ।
गालइ गालयते ।
गिलइ गिलति ।
टलइ टलति ।
फलइ फलति ।
आफलइ आस्फलति ।
हालइ हल्लति ।
हीलइ हीलयति ।
चावइ चर्वयति ।
जीवइ जीवति ।
धावइ पही धावति पथिकः ।
बालक मा नइ धावइ
वालको मातरं धावति ।

सीवइ सीव्यति ।
सेवइ सेवति ।
नासइ नश्यति ।
विणसइ विनश्यति ।
डसइ दशति ।
पइसइ प्रविशति ।
फरसइ स्पृशति ।
काढइ कर्षति ।
खसइ खपति ।
घसइ घर्षति ।
घोसइ घोषति ।
चूसइ चूषति ।
पोसइ पुष्यति ।
भखइ भक्षति ।
भीखइ भिक्षते ।
भाषइ भाषते ।
भषइ भषति ।
मुसइ मुष्णाति ।
रूसइ रुष्यति ।
राखइ रक्षति ।
हीसइ हेषति ।
लखइ लक्षयति ।
वरसइ वर्षति ।
सुसइ शुष्यति ।
सीखइ शिक्षते ।
हरषइ हृष्यति ।
तूसइ तूषति ।
खासइ कासते ।
त्रासइ त्रस्यति ।
निरभरछइ निर्भर्त्सयति ।
नीससइ निःश्वसिति ।
ऊससइ उच्छ्वसिति ।
प्रसंसइ प्रशंसति ।

ग्रहइ गृह्णाति ।
गरहइ गर्हति ।
दोहइ दोग्धि ।
दहइ दहति ।
मूझइ मुह्यति ।
वहइ वहति ।
नीसरइ निस्सरति ।
ओसरइ अपसरति ।
फाडइ पाटयति ।
ठंभीजइ स्तभ्यते ।
बजरइ कथयति ।
दुगुंछइ जुगुप्सते ।
सद्दहइ श्रद्धत्ते ।
उंघइ निद्राति ।
मिलायइ म्लायति ।
ढांकइ छादयति ।
दूमइ दावयति ।
धवलइ धवलयति ।
तोलइ तुलयति ।
मेलवइ मिश्रयति ।
भमाडइ भ्रमयति ।
नसावइ नाशयति ।
दाखवइ दर्शयति ।
ओंगालइ रोमन्थयति ।
प्रकासइ प्रकाशयति ।
कंपावइ कम्पयति ।
लुकइ निलीयते ।
नीवडइ पृथक् स्पष्टो वा भवतीत्यर्थः ।
आछोटइ आछोटयति ।
वीसरइ विस्मरति ।
महमहइ मालती मालतीगन्धः प्रसरति ।
साहरइ, संवरइ संवृणोति ।
समारइ समारचयति ।

छाजइ, रिजइ राजते ।
खूपइ मज्जति ।
पूंजइ पुञ्जयति ।
विढवइ अर्जयति ।
जूपइ युनक्ति ।
उखुडइ उलूरइ त्रुटति ।
घोलइ घूर्णति ।
विरोलइ मथ्नाति ।
ऊदलइ आच्छिदइ आछिनत्ति ।
फंदइ स्पन्दते ।
मलइ मृद्नाति ।
झूरइ, विसूरइ } खिद्यते ।
हाकइ निषेधते ।
झखइ संतपति ।
समाणइ समापयति ।
घातइ क्षिपति ।
लोटइ स्वपिति ।
बडबडइ विलपति ।
आढवइ आरभते ।
जंभाआइ जृम्भते ।
आभिडइ संगच्छते ।
फीटइ, भुल्लइ } भ्रंशते ।
देखइ पश्यति ।
छिवइ स्पृशति ।
ढंढोलइ गवेषयति ।
चोपडइ म्रक्षयति ।
डरइ त्रस्यति ।
पलोटइ पर्यस्यति ।
चडइ आरोहति ।
थाकइ थक्कति, नीचां गतिं करोति, विलम्बयति वा ।

विट्टालइ अस्पृश्यसंसर्गं करोति ।
चांपइ आक्रमति ।
पमावइ प्रमार्जयति ।
हाथी गुलगुलायइ हस्ती गुलगुलायते ।
ऊललियइ उल्लालयति ।
ढोकइ ढौकयति ।
पधारइ पादाऽवधार्यताम् ।
संभालइ संभालयति ।
पलाणइ पर्याणयति ।
लालइ लालयति ।
सांधइ संधयति, संधत्ते वा ।
हेरइ हेरयति ।
धीरवइ धीरयति ।
भलिसुं भलिष्ये ।
ऊछलइ उच्छलति ।
ऊछालइ उच्छालयति ।
साहइ साहयति ।
संवाहइ संवाहयति ।
कूकइ कूत्करोति कूर्वते वा ।
टूकइ टौकते ।
थांभइ स्तभ्नाति ।
ताकइ तर्कति ।
निर्घाटइ निर्घाटयति ।
ऊलडइ उल्लुडयति ।
विकुर्वइ विकुर्वति ।
पालइ पालयति ।
पायइ पाययति ।
वोलइ ब्रवीति ।
जीपइ जयति ।
जाणइ जानाति ।
आरंभइ आरभते ।
सांभरइ स्मरति ।
परीछइ परेरिपेः, परीच्छति ।
ग्रसइ ग्रसते ।
अभ्यसइ अभ्यस्यति ।
विमासइ विमृशति ।
पडीगइ प्रतिकरोति ।
छइ अस्ति ।
आखइ आख्याति ।
आवइ एति, आयाति वा ।
ऊगइ उदेति ।
आथमइ अस्तमेति ।
पूजइ पूजयति ।
नमस्करइ नमस्करोति ।
कुसणइ कुष्णाति ।
वीनवइ विज्ञपयति ।
वापरइ व्याप्रियते ।
पावइ प्रापति (प्राप्नोति ?)
पामइ प्रपूर्वोऽमिः प्राप्तौ, प्रामति ।
वीखरइ विकिरति ।
परिणइ परिणयति ।
वीवाहइ वीवाहयति ।
पूरइ पूर्यते ।
वीहइ बिभेति ।
वीहावइ भापयते ।
उल्लावइ उल्लवति ।
उल्लींचइ उल्लञ्चति ।
सूंघइ शिंघति ।
छांडइ छर्दयति ।
निरखइ निरीक्षते ।
परखइ परीक्षते ।
ऊवेखइ उपेक्षते ।
उभ्रकइ उद्रेकते ।
पडखइ प्रतीक्षते ।
समरइ स्मरति ।
बलइ ज्वलति ।

बालइ ज्वालयति ।
मोलइ मृदु लुनाति ।
विढइ विध्यति ।
माचइ माद्यति ।
दूमइ दुनोति ।
सुणइ शृणोति ।
दीखइ दीक्षते ।
सुहायइ सुखायति ।
विगोवइ विगोपयति, विगूयति ।
विगूयइ विगूप्यति ।
नरनरइ नदति ।
थवइ स्थगयति ।
करडइ, काटइ } कृन्तति ।
नांखइ निःक्षिपति ।
पखालइ प्रक्षालयति ।
धोअइ धावति ।
संधूखइ संधुक्षते ।
सांचइ संचिनोति ।
अउगनाइ अपकर्णयति ।
ऊजालइ उज्ज्वलयति ।
गांठइ ग्रन्थते (ग्रथ्नाति ?) ।
चूअइ चोतति ।
थीजइ स्त्यायते ।
वीझायइ विध्यायति ।
वीझावइ विध्यापयति ।
वाधइ वर्द्धते ।
खीलइ कीलति ।
ऊमटइ उन्मज्जति ।
पसवइ प्रसवति ।
मायइ माति ।
भणइ भणति ।
पढइ पठति ।
सूअइ स्वपिति ।
फेडइ स्फेटयति ।
पसीअइ प्रसीदति ।
ओंढइ अवगुण्ठते ।
प्रोअइ प्रवयति ।
वणइ वयते ।
प्रेरइ प्रेरयति ।
वलइ वलते ।
आलिंगइ आलिंगति ।
वाअइ वादयति ।
छायइ छादयति ।
लाडइ ललति ।
मनावइ मानयति ।
द्रउडइ द्रुताटयति ।
कुसइ क्रोशति ।
निउंजइ नियोजयति, नियन्त्रयति वा ।
कसइ कषति ।
लुणइ लुनाति ।
कींगायइ केकायते ।
खोडायइ खोडायते ।
विहडइ विघटते ।
मीचइ मीलति ।
ऊजाइ उद्याति ।
अवहथइ अपहस्तयति ।
मानइ मन्यते ।
वासइ वासयति ।
आलूजइ अलमुज्जति ।
पहिरइ परिदधाति ।
छेदइ छेदयति ।
पसीजइ प्रस्विद्यते ।
तीमइ तेमयति ।
अडवडइ अधःपतति, अधःपूर्वः पतः ।
सिणमिणइ शनैर्मिनोत्यम्बुदः ।

वसवसइ बहु स्यन्दति भूमिः ।
उंजइ उदञ्जयति ।
ऊघडइ उद्घटते ।
फीटइ रिफ्टते ।
सूकइ शुष्कति ।
खूंदइ क्षुन्ते, क्षुणत्ति वा ।
सींदाअइ सीदति ।
ऊगटइ उद्वर्त्तयति ।
भेदइ भिनत्ति ।
स्वरचइ श्रवति ।
खीजइ खिद्यते ।
विआरइ विप्रतारयति ।
विंहचइ विभजति ।
खडहडइ खटत्पतति ।
गलअलइ गलद्गिलति ।
पतीजइ प्रत्ययते, प्रत्येति, प्रतीयते वा ।
पवीत्रइ पवित्रयति ।
पालटइ परावर्त्तयति, परिवर्त्तयति वा ।
हडहडइ हटाद्धसति, हडहडयति वा ।
परीसइ परिवेषयति ।
वींटइ वेष्टते ।
ऊवेढइ उद्वेष्टते ।
समेटइ समेटयति ।
वीसमइ विश्राम्यति ।
चडइ चटति ।
अउलवइ अपलपति ।
आचमइ आचामति ।
ऊपणइ उत्पवते ।
वीकइ विक्रीणाति ।
ऊघडइ उद्घटते ।
ऊघाडइ उद्घाटयति ।
ऊठइ उत्तिष्ठति ।
नीठइ निस्तिष्ठति ।

अडइ अड्डति ।
वावइ वपति ।
छिवइ छुपते, स्पृशति वा ।
छूटइ छुट्टति ।
उखेलइ उत्कीलयति ।
खीलइ कीलति ।
वघारइ व्याघारयति ।
वखाणइ व्याख्यानयति ।
सकइ शक्नोति ।
दंभइ दभ्नोति ।
परचारइ प्रचारयति ।
वारइ वारयति ।
निवारइ निवारयति ।
वरांसीयइ विपर्यस्यति ।
पल्हालइ पर्याद्रवयति ।
पालवइ पल्लवयति ।
पचारइ प्रत्युच्चारयति ।
थाहरइ स्थानमाहरति ।
आयसइ आदिशति ।
टलवलइ टलद्वलति ।
कलकलइ कलकलयति ।
झणझणइ झणऽझणयति ।
वाधइ वर्द्धयति ।
हसइ हसति ।
सहइ सहते ।
आखुडइ आस्खलति ।
रंजइ रञ्जयति ।
सपइ शपति ।
फडफडइ पटपटायते ।
कडकडइ कटकटायते, चक्षुः ।
उदेगइ उद्वेगयति ।
हींडइ हिडते ।
ऊकदइ उत्कूदते ।

द्रमद्रमइ द्रमद्रमति ।
तडफडइ तटत्पटति, तडफडयति वा ।
त्रडत्रडइ तटत्त्रुटति ।
लोटइ लुट्यति, लोट्यति, लोटति वा ।
लेटइ लेट्यति ।
नाथइ नाथति, वृषं तु नस्तयति ।
धूंसइ ध्वंसते ।
पाठवइ प्रस्थापयति ।
ससइ श्वसिति ।
वीससइ विश्वसिति ।
गूंथइ ग्रन्थयति ।
मारइ मारयति ।
झंपावइ झम्पामाप्नोति ।
पीसइ पिनष्टि ।
गाहइ गाहते ।
विहाइ विभाति ।
आभिडइ आभ्यटति ।
बइसइ } उपविशति ।
उइसइ }
ऑलखइ उपलक्षयति ।
मोकलावइ मुत्कलापयति ।
गंधाअइ गन्धायते ।
पडूछइ प्रतिपृच्छति ।
ऑठंभइ अवष्टभ्नाति, अवष्टम्भते ।
पलाणइ पर्याणयति ।
सूजइ श्वयति ।
सूजवइ शोफयति ।
वाटइ वर्त्तयति ।
परतइ परिवर्त्तयति ।
खडखडइ खटत्करोति खडखडयनि वा ।
उपगरइ उपकरोति ।
निराकरइ निराकरोति ।
रहइ रहति ।
छेकइ छेत्करोति ।
छींकइ छीत्करोति ।
धडहडइ धटत्करोति ।
भडहडइ भटत्करोति, भडहडयति वा ।
हाकइ हात्करोति ।
फूंकइ फूत्करोति ।
चीचूअइ चीत्करोति ।
झाकइ झात्करोति ।
थूकइ थूत्करोति ।
चूकइ चूत्करोति ।
पुकारइ पूत्करोति ।
मागइ मार्गयति ।
याचइ याचते ।
घूमइ 'घूर्णयति'।
सरइ सरति ।
वधावइ वर्द्धयति ।

अथ कर्मकर्त्तरि –

राचइ रच्यते ।
पाचइ पच्यते ।
दाझइ दह्यते ।
वाजइ वाद्यते ।
खाजइ खाद्यते ।
लुणाइ लूयते ।
घसाइ घृष्यते ।
कराअइ क्रियते ।
जणाइ ज्ञायते ।
वधाअइ वर्ध्यते ।

॥ इति कतिचित् क्रियापदानि ॥

*

अथ प्रशस्तिः ।

*

राजन्वतीं श्रीजिनराजिसन्ततिं कुर्वत्सु शश्वज्जिनचन्द्रसूरिषु ।
सूरीकृतश्रीजिनसिंहसूरिषु युगप्रधानेषु महोगभस्तिषु ॥ १ ॥

खरतरगणपाथोराशिवृद्धौ मृगाङ्का,
यवनपतिसभायां ख्यापितार्हन्मताज्ञाः ।
प्रहतकुमतिदर्प्पाः पाठकाः साधुकीर्त्ति-
प्रवरसदभिधाना वादिसिंहा जयन्तु ॥ २ ॥

तेषां शास्त्रसहस्रसारविदुषां शिष्येण शिक्षाभृता
भक्तिस्थेन हि साधुसुन्दर इति प्रख्यातनाम्ना मया ।
ग्रन्थोऽयं विहितः कवीश्वरवचोबुद्ध्योक्तिरत्नाकरः
स्वान्यानां हितहेतवे बुधजनैर्मान्यश्चिरं नन्दतु ॥ ३ ॥

॥ इति पं० साधुसुन्दरगणिविरचित उक्तिरत्नाकरग्रन्थः सम्पूर्णः ॥



अज्ञातविद्वत्कर्तृक उक्तीयक

॥ ई ॥ श्रीशारदायै नमः ॥

*

आरोपइ आरोपयति ।
आरोहइ आरोहति ।
उन्मूलइ उन्मूलयति ।
ऊठइ उत्तिष्ठति ।
ऊठाडइ उत्थापयति ।
थापइ स्थापयति ।
स्पर्द्धइ स्पर्द्धति ।
ऊलालइ उल्लालयति ।
ऊललइ उल्ललति ।
ऊछालइ उच्छलति ।
ऊडइ उड्डीयते ।
आथमइ अस्तमेति, अस्तमयति, अस्तं गच्छति, अस्तं याति ।
प्रकासइ प्रकाशयति ।
सूझइ शुध्यति ।
सूझवइ शोधयति ।
दूहवइ दुनोति, दुःखीकरोति ।
आश्रइ आश्रयति, आश्रयते ।
षा(खा)सइ कासति ।
ष(ख)मइ क्षमते, सहते, क्षाम्यति ।
निंदइ निन्दति, जुगुप्सति ।
पडीगरइ चिकित्सति ।
षूं(खूं)दइ क्षुण्णति ।
पीसइ पिनष्टि ।
परिसीजइ परिश्रियति ।
दो[गुं]छइ निर्भर्त्सयति ।
त्रासवइ त्रासयति ।
त्रासइ त्रस्यति ।
कांपइ कंपते ।
फिरइ भ्रमति, परिभ्रमति ।
विहसइ विकसति ।
भेलइ मिश्रयति ।
रमइ रमते, क्रीडति ।
चुंकलइ तुदति ।
प्रेरइ प्रेरयति, नुदति ।
भुंजइ भृज्जति ।
वांछइ वाञ्छति, इच्छति, अभिलषते ।
नमस्करइ नमस्करोति, नमस्यति, प्रणमति ।
वांदइ वन्दते ।
पूजइ पूजयति, अर्चयति, महति ।
छांडइ त्यजति, जहाति, उज्झति ।
वीहइ बिभेति ।
नीकोलइ निःकुणाति ।
वीससइ विश्वसिति ।
ससइ स्वसति (श्वसिति ?) ।
नीससइ निःश्वस(सि)ति ।
वारइ वारयति ।
निवारइ निवारयति ।
निषेधइ निषेधयति ।
आलोचइ आलोचयति, पर्यालोचयति ।
जायइ गच्छति, याति ।
आवइ आगच्छति ।
नीकलइ निर्गच्छति, निःसरति, निर्याति ।
वोलइ ब्रूते, वदति, वक्ति ।
चालइ चलति ।
जीमइ जिमति, भुंक्ते, अत्ति ।
पीयइ पिबति ।

आस्वासइ आश्वाश्रयति (आश्वासयति)।
सूंघइ जिघ्रति।
सांभलइ शृणोति, आकर्णयति।
जोयइ पश्यति, ईक्षति (ते), विलोकयति।
दिषा(खा)डइ दर्शयति।
संभलावइ श्रावयति।
जिमाडइ जेमयति, भोजयति।
करइ करोति, कुरुते।
करावइ कारयति।
सर्ज्जइ सृजति।
लेइ लाति, गृह्णाति, गृह्णीते, आदत्ते।
लिवरावइ ग्राहयति।
दिइ ददाति, दत्ते, यच्छति, वितरति।
दिवरावइ दापयति।
जाणइ जानाति, अवगच्छति।
जणावइ ज्ञापयति।
कहइ कथयति, शंसति।
स्तवइ स्तौति, स्तवीति।
श्लाघइ श्लाघते।
वरइ वृणोति।
तरइ तरति।
तारइ तारयति।
विचारइ विचारयति।
विमासइ विमर्शति।
धरइ धरति।
धरावइ धारयति, अवधारयति।
वेचइ विक्रीणाति।
वेचावइ विक्रापयति।
विसाहइ विसाधयति।
लाभइ लभते, प्राप्नोति।
वंचइ वंचयति।
मरइ म्रियते, विपद्यते।

जीवइ जीवति।
वापरइ व्याप्रियते।
छइ अस्ति, वर्त्तते, विद्यते।
हुइ भवति।
जागइ जागर्ति।
जगाडइ जागरयति।
सूइ स्वपिति, शेते, निद्राति।
वइसइ उपविशति।
छींकइ क्षौति।
तेडइ आकारयति, आह्वयति, आह्वयते।
प्रीणइ प्रीणयति, पृणाति।
नांप(ख)इ विकीरति।
घालइ क्षिपति।
घलावइ क्षेपयति।
काढइ कर्षति।
आकर्षइ आकर्षति।
षे(खे)डइ कर्षति, कृषति।
संक्षेपइ संक्षिपति।
लिखइ लिखति।
लिषा(खा)वइ लेखयति।
उपकरइ उपकरोति, उपकुरुते, उपकरति।
घसइ घर्षति।
घसावइ घर्षयति।
आपइ अर्पयति।
कापइ कर्त्तति, कर्त्तयते।
मंडइ मण्डयति, भूषयति।
ढांकइ स्थगति, आच्छादयति, पिदधाति, पिधत्ते।
ऊवटइ उद्वर्त्तयति।
न्हाइ स्नाति।
न्हवारइ स्नपयति, स्नापयति।
वावइ वपति।
परिणइ परिणयति, विवाहयति।

हेजु करइ स्निह्यति ।
पहिरइ परिदधाति ।
पहिरावइ परिधापयति ।
ओटइ अवगुंठयति ।
पांगुरइ प्रावृणोति ।
पांगुरावइ प्रावारयति ।
वहइ वहति ।
वाहइ वाहयति ।
मारइ हन्ति ।
मरावइ घातयति ।
छेदइ छिन्दति ।
भांजइ भनक्ति ।
पडइ पतति ।
[पाडइ] पातयति ।
आपडइ आपतति ।
वारइ वारयति, निवारयति ।
[मूकइ] मुञ्चति ।
भणइ भणति, पठति, अध्येति ।
भणावइ भाणयति, पाठयति, अध्यापयति ।
आक्रमइ आक्रमते, पराक्रमते ।
ऑलखइ उपलक्ष्यते ।
गिणइ गणयति ।
गुणइ गुणयति ।
वषा(खा)णइ व्याख्याति ।
पूछइ पृच्छति ।
नाचइ नृत्यति ।
नचावइ नर्त्तयति ।
गाइ गायति ।
वाइ वादयति ।
वाजइ वादति ।
वीनवइ विज्ञपयति, विज्ञापयति ।
संदिसइ सन्दिशति, आदिशति ।
जोडइ युनक्ति, युंक्ते ।
प्रयुंजइ प्रयुंक्ते ।
सींचइ सिञ्चति, अभिपिञ्चति ।
वरसइ वर्षति ।
मानइ आमनति ।
बूझइ बुध्यते ।
मनावइ प्रसादयति ।
चोरइ चोरयते, अपहरति ।
ऑलवइ अपलपति, अपह्नुते ।
शापइ शपते, आक्रोशति ।
अपराधइ अपराध्यति, विराध्यति ।
तस्करइ तस्करयति ।
राष(ख)इ रक्षति, पाति, त्रायते, गोपायति
आणइ आनयति ।
अणावइ आना[य]यति ।
परिणावइ परिणाययति ।
चडइ चटति ।
ऊचाटइ उच्चाटयति ।
अवतरइ अवतरति, अवतारयति ।
चुंटइ चुण्टति, अवचिनोति ।
चिणइ चिनोति ।
लुणइ लुनाति ।
लुणावइ लावयति ।
घडइ घटते, घटयति ।
ऑलगइ अवलगति, सेवते ।
नासइ नश्यति, पलायते ।
अलंकरइ अलङ्करोति ।
बांधइ बध्नाति ।
छूटइ छुट्टति ।
फूटइ स्फुटति ।
विहरइ विहरति ।
हसइ हसति ।
हसावइ हासयति ।
मवइ मिनोति, माति ।

सीवइ सीवति ।
गूंथइ ग्रश्नाति ।
गूंफइ गुम्फति ।
ऊलसइ उल्लसति ।
हरषी(ष)इ हृष्यति, माद्यति, मोदते ।
शोचइ शोचते ।
कूपइ कुप्यति, क्रुध्यति ।
विलवइ विलपति ।
रोइ रोदिति ।
कूटइ कुट्यति ।
ताडइ ताड[य]ते, ताडयति ।
वर्त्तइ वर्त्तते ।
प्रसवइ प्रसूते, जनयति ।
ऊपजइ उत्पद्यते, जायते ।
ऊपजावइ उत्पादयति ।
दूषइ दूष्यति ।
पादइ पर्दते, कुश्नाति ।
हगइ हदते ।
पचइ पचति ।
भजइ भजते ।
शोभइ शोभते ।
जिणइ जयति, पराजयति ।
सूकइ शुष्यति ।
तपइ तपति, उत्तपति ।
उद्यमइ उद्यमते ।
रूंधइ रुणद्धि ।
भरइ भरति ।
फाडइ स्फाटयति ।
रुचइ रोचते ।
कल्पइ कल्पते ।
आकलइ आकलयति ।
वीहावइ भापयति ।
ष(ख)ईइ क्षीयते ।

उपचईइ उपचीयते ।
वाधइ वर्द्धते ।
वधारइ वर्द्धयति ।

॥ इति वर्त्तमानकालक्रिया ॥

आरोप्यउ आरोपितम् ।
आरुह्यउ आरूढः, चटितः ।
उन्मूल्यउ उन्मूलितः ।
रहिउ स्थितः ।
रहाविउ स्थापितः ।
ऊठिउ उत्थितः, उत्थितवान् ।
[ठिउ] तस्थिवान् ।
गयउ गतः, यातः ।
आव्यउ आगतः ।
नीकल्यउ निर्गतः ।
नीसरिउ निःसृतः ।
पइठउ प्रविष्टः ।
बइठउ उपविष्टः, निषण्णः, आसीनः ।
पूछिउ पृष्टः ।
दीठउ दृष्टः ।
जोइउ निरीक्षितः, अवलोकितः ।
जाण्यउ ज्ञातः, बुद्धः, अवगतः ।
निवारिउ निषेधितः, निराकृतः ।
सूतउ सुप्तः, शयितः, शयितवान् ।
जाग्यउ जागरितः, जागरितवान् ।
लाज्यउ लज्जितः ।
घ्राइउ घ्राणः ।
रमिउ रंतः (रतः), क्रीडितः, क्रीडितवान् ।
हूउ भूतः, भूतवान्, जातः, जातवान् ।
ऊतर्यउ अवतीर्णः ।
तर्यउ तीर्णः ।
निस्तर्यउ निस्तीर्णः ।
वापरिउ व्यापृतः ।
भागउ भग्नः ।

लागउ लग्नः।
साजउ सज्जः।
संपन्नउ सम्पन्नः।
जरिउ जीर्णः।
न्हाउ स्नातः
दाधउ दग्धः।
पडिउ पतितः।
हर्ष्यउ हृष्टः, आनंदितः।
विचारिउ विचारितम्।
विमासउ विमृष्टम्।
अवधारिउ अवधारितम्।
धरिउ धृतम्।
भरिउ भृतम्।
कीधुं कृतम्, कृतवान्।
लीधुं लातम्, गृहीतम्, आत्तम्।
दीधुं दत्तम्, दत्तवान्।
षा(खा)धुं अत्तम्, जग्धम्।
भष्य(ख्य)उ भक्षितम्, खादितम्।
जीमिउ जिमितम्, भुक्तम्।
पीधुं पीतम्।
सूंघ्यउ आघ्रातम्।
सांभल्यउ श्रुतम्, श्रुतवान्।
फरिस्यउ स्पृष्टः।
वेच्यउ विक्रीतम्।
विसाहिउ विसाधितम्, क्रीतम्।
आलोच्यउ आलोचितम्।
लाधउ लब्धम्।
पामिउ प्राप्तम्।
वंच्यउ वंचितः।
अपराध्यउ अपराद्धः।
मनाव्यउ प्रसादितः।
चार्‍यउ चारितम्।
नाठउ नष्टः।
लुंटिउ लुण्टितः।
मुस्यउ मुष्टः।
राषि(खि)उ रक्षितः।
आण्यउ आनीतम्।
अणाव्यउ आनायितम्।
मूंकिउं मुक्तम्।
त्यजिउ त्यक्तम्।
लुणिउ लुणितं, लूनम्।
रंग्यउ रञ्जितम्।
घडिउ घटितम्।
होमिउ हुतम्।
हकारिउ आकारितः।
ऑलग्यउ अवलगितः, सेवितः, निषेवितः।
वंछिउं इष्टम्, वांछितम्, अभिलषितम्।
बांधिउ बद्धः।
छोडिउ छोटितः।
जिण्यउ जितः, निर्जितः, पराजितः।
भण्यउ भणितः, पठितः, पठितवान्, अधीतः।
भणाव्यउ भाणितः, पाठितः, अध्यापितः।
पालिउ पालितः, लालितः।
ताडिउ ताडितः।
स्तविउ स्तुतः।
वीनव्यउ विज्ञप्तः।
आदिस्यउ आदिष्टः, संदिष्टः।
आथम्यउ अस्तमितः।
ऊगिउ उदितः।
त्राठउ त्रस्तः।
वीहिउ भीतः।
वीहाविउ भापितः।
[वासिउ] वासितः।
आक्रमिउ आक्रांतः।
ऑलखिउ उपलक्षितः।

गुणिउ गुणितम्, गणितम्।
वषा(खा)णिउ व्याख्यातम्।
नाचिउ नृत्तम्।
रोइउ रुदितम्, विलपितम्।
विलोइउ विलोडितम्, मर्दितम्, विलुरितम्।
दोही दुग्धा।
लीधी नीता।
आक्रुसिउ आक्रुष्टः, शप्तः।
प्रजूंजिउ प्रयुक्तः, नियुक्तः।
जोड्यउ योजितः।
परिण्यउ परिणीतः, विवाहितः।
चडिउ चटितः।
ऊचाटिउ उच्चाटितः।
चुंटिउ चुण्टितः।
चिणिउ चितः।
अलंकरिउ अलङ्कृतः, मण्डितः।
विहसिउ विकसितः।
फूटउ स्फुटितः।
हसिउ हसितः।
वमिउ वान्तः।
मविउ मातः।
सीव्यउ स्यूतः, सीवितः।
गूंथ्यउ ग्रथितः।
[गूंफिउ?] गुम्फितः।
भमिउ पर्यटितः।
थाकउ श्रान्तः।
वूठउ वृष्टः।
तूठउ तुष्टः।
संतोषिउ संतोषितः।
कुपिउ कुपितः, क्रुद्धः।
कूटिउ कुट्टितः।
मारिउ मारितः।
मूउ मृतः, विपन्नः।
त्रोडिउ त्रोडितः।
गोपिविउ गोपितः, गुप्तः।
वर्त्तिवउ वर्त्तितः, वर्त्तितवान्।
प्रसविउ प्रसूतः, जातः।
ऊपजाविउ उत्पादितः, जनितः।
कुहिउ कुथितम्, विनष्टम्।
फाड्यउ स्फाटितम्।
भेदिउ भेदितम्, भिन्नम्।
भेटिउ भेटितः।
सूकउ शुष्कः।
तपिउ तप्तः।
रुंधिउ रुद्धः।
वीसरिउं विस्मृतम्, विस्मारितम्।
विराध्यउ विराद्धः।
[आराध्यउ] आराद्धः।
वंदिउ वंदितः, नमस्कृतः, नतः।
शोभिउ शोभितः।
आकलिउ आकलितः।
परीसिउ परिवेषितम्।
छमकारिउ छमत्कारितम्।
वाधिउ वर्द्धितः।
क्षमिउ क्षान्तः।
शमिउ शान्तः, उपशान्तः।
सहिउ सोढः।
वहिउ व्यूढः।
ऑलविउ अपलपितम्।
[होमिउ] हुतम्।
परिसीनउ परिखिन्नः।
प्रेरिउ प्रेरितः, नोदितः।
ऊडिउ उड्डीतः, उत्पतितः।
कहिउ कथितम्, उक्तम्, उक्तवान्।
धोईउ धौतः, धौतवान्।
मेलिउ मेलितम्, मिश्रितम्।

पडिगरिउ प्रतिजागरितः, पटूकृतः, चिकित्सितः ।
विरासिउ विपर्यस्तः ।
मूंडिउ मुण्डितः ।
लिषि(खि)उ लिखितम् ।
चोपड्यउ मर्षितः ।
वलिउ ज्वलितः, दग्धः ।
चालिउ चलितः, प्रस्थितः ।
कांपिउ कम्पितः ।
चेतिउं चेतितम् ।
पांगुर्यउ प्रावृतः ।
पहिरिउ परिहितः ।
पहिराविउ परिधापितः ।
ढांकिउ स्थगितम्, छन्नम्, आच्छादितवान् ।
[ऊपनउ] उत्पन्नः ।
धमिउं धमितम् ।
तेजिउं उत्तेजितम् ।
खुभिउ क्षुब्धः ।
आपडिउ आपतितः ।
नांषि(खि)उ निक्षिप्तः ।
घालिउ क्षिप्तः ।
विषे(खे)रिउ विकीर्णम् ।
विदारिउ विदारितः, विदीर्णः ।
गालिउं गालितम्, छाणितम् ।
हणिउ हतः, घातितः ।
नहुतरिउ निमन्त्रितः ।
धाईउ धावितः ।
[श्लाघिउ] श्लाघितः ।
आश्लेषिउ आलिङ्गितः ।
आपिउ अर्पितम् ।
मागिउ मार्गितम्, याचितम्, प्रार्थितम् ।
धोईउ धौतः, धौतवान् ।
ऊवेषि(खि)उ उपेक्षितः ।
आरोपिवउ आरोपणीयम्, आरोपयितव्यम्, आरोप्यम् ।
आरोहिवउं आरोहणीयम्, आरोहितव्यम्, आरोह्यम् ।
करिवउं कर्त्तव्यम्, करणीयम्, कार्यम् ।
लेवूं ग्रहीतव्यम्, ग्रहणीयम्, ग्राह्यम् ।
देवूं दानीयम्, दातव्यम्, देयम् ।
रहिउं स्थातव्यम्, स्थानीयम्, स्थेयम् ।
[ऊपडिवूं] प्रस्थातव्यम्, [प्रस्थानीयम्, प्रस्थेयम्] ।
षा(खा)वउं भक्षितव्यम्, भक्षणीयम्, भक्ष्यम् ।
आस्वादिवूं आस्वादयितव्यम्, आस्वादनीयम् [आस्वाद्यम्] ।
पीवुं पातव्यम्, पानीयम्, पेयम् ।
रांधिवउं राधनीयम्, पक्तव्यम्, पचनीयम्, पाक्यं (पाच्यम्) ।
परीसिव्युं परिवेषणीयम्, परिवेषितव्यम्, परिवेषयितव्यम् ।
सूंघवुं घ्रातव्यम्, घ्राणीयम् ।
सांभलेव्युं श्रोतव्यम्, श्रवणीयम्, श्रव्यम्, आकर्णयितव्यम्, आकर्णनीयम् ।
देषि(खि)व्युं दर्शनीयम्, दर्शयितव्यम्, दृश्यम् ।
जोइवुं विलोकयितव्यम्, विलोकनीयम्, ईक्षितव्यम् ।
पहिरवुं परिधातव्यम्, परिधानीयम् ।
पांगुरिवुं प्रावरितव्यम्, प्रावरीतव्यम्, प्रावरणीयम्, प्रावृत्यम् ।
धरिवुं धर्त्तव्यम्, धरणीयम्, धार्यम्, धारयितव्यम् ।
वहिवूं वहनीयम्, वोढव्यम्, वाह्यम् ।

मूकिवुं मोक्तव्यम्, मोच्यम्।
छांडिवुं त्यक्तव्यम्, त्यजनीयम्।
हणिवुं हन्तव्यम्, हननीयम्।
भांजिवुं भंक्तव्यम्, भञ्जनीयम्।
भेदिव्युं भेदितव्यम्, भेत्तव्यम्, भेदनीयम्, भेद्यम्।
वारिवुं वारयितव्यम्, वारणीयम्, वार्यम्।
पडिवुं पतितव्यम्, पतनीयम्, पायम्, पातयितव्यम्, पातनीयम्।
नमस्करिव्युं नमस्कर्त्तव्यम्, नमस्करणीयम्, नमस्कृत्यम्।
वांदिवुं वन्दनीयम्, वन्दितव्यम्, वन्द्यम्।
श्लाघिवुं श्लाघनीयम्, श्लाघयितव्यम्, श्लाघ्यम्।
पूजिवुं पूजनीयम्, पूजितव्यम्, पूज्यम्। अर्चनीयम्, अर्चयितव्यम्, अर्च्यम्।
जिमिवुं भोक्तव्यम्, भोजनीयम्, भोज्यम्, भोजयितव्यम्।
पढिवुं पठितव्यम्, पठनीयम्, पाठ्यम्, अध्येतव्यम्, अध्ययनीयम्, अध्येयम्।
भणिवुं भणनीयम्, भणितव्यम्, भाण्यम्, भणयितव्यम्, पाठनीयम्, पाठयितव्यम्, अध्यापनीयम्, अध्यापयितव्यम्।
[गुणिवूं] गुणनीयम्, गुणयितव्यम्। गुण्यम्।
णिगवूं गणनीयम्, गणयितव्यम्, गण्यम्।
उलषि(खि)वुं उपलक्षणीयम्, उपलक्षितव्यम्, उपलक्ष्यम्।
परीषि(खि)वुं परीक्षितव्यम्, परीक्षणीयम्, परीक्षयितव्यम्।
वखाणिवुं व्याख्यातव्यम्, व्याख्यानीयम्, व्याख्येयम्।
[कहिवुं] कथयितव्यम्, कथनीयम्। कथ्यम्।
[निवेदिवुं] निवेदयितव्यम्, निवेदनीयम्, निवेद्यम्।
वीनविवुं विज्ञापयितव्यम्, विज्ञापनीयम्, विज्ञाप्यम्।
संदिसवुं सन्देष्टव्यम्, सन्देशनीयम्, सन्देश्यम्।
आदिशवुं आदेष्टव्यम्, आदेशनीयम्, आदेश्यम्।
बोलिवुं वक्तव्यम्, वचनीयम्, वाच्यम्, वदितव्यम्, वदनीयम्।
पूछिवुं प्रष्टव्यम्, पृच्छनीयम्, पृच्छयम्।
वाचिवुं वाचयितव्यम्, वाचनीयम्, वाच्यम्।
अउधारिवुं अवधारयितव्यम्, अवधारणीयम्, अवधार्यम्।
धरिवुं धरणीयम्, धारयितव्यम्, धार्यम्।
भरिवुं भरणीयम्, भरितव्यम्।
नियोजिवुं नियोजितव्यम्, नियोजनीयम्। नियोज्यम्।
जोडिवुं योजनीयम्, योजयितव्यम्, योज्यम्।
गाइवुं गातव्यम्, गानीयम्, गेयम्।
नाचिवुं नर्त्तनीयम्, नर्त्तितव्यम्, नृत्यम्।
वाइवुं वादयितव्यम्, वादनीयम्, वाद्यम्।
लिखिवुं लिखनीयम्, लिखितव्यम्, लेख्यम्, लेखनीयम्, लेखयितव्यम्।
मनाविवुं मन्तव्यम्, मननीयम्।
जाणिवुं ज्ञातव्यम्, ज्ञानीयम्, ज्ञेयम्, अवगन्तव्यम्, अवगमनीयम्, अवगम्यम्।
बूझिवुं बोधव्यम्, बोधनीयम्, बोध्यम्।
विमासिवुं विमर्शनीयम्, विमर्श्यम्।
तरिवुं तरितव्यम्, तरणीयम्, तार्यम्।

नाहिवुं स्नातव्यम्, स्नानीयम्, स्नेयम् ।
विचारिवुं विचारयितव्यम्, विचारणीयम्, विचार्यम् ।
वेचिवुं विक्रेतव्यम्, विक्र[य]णीयम्, विक्रेयम् ।
विसाहिवुं विसाधयितव्यम्, विसाधनीयम्, विसाध्यम् ।
लहिवुं लब्धव्यम्, लभनीयम्, लभ्यम् ।
पामिवुं प्राप्तव्यम्, प्रापणीयम्, प्राप्यम् ।
आपिवुं अर्पितव्यम्, अर्प्पणीयम्, अर्प्यम् ।
वंचिवुं वञ्चयितव्यम्, वञ्चनीयम्, वञ्चयम् ।
अपराधिवुं अपराधितव्यम्, अपराधनीयम्, अपराध्यम् ।
मनाविवुं प्रसादयितव्यम्, प्रसादनीयम्, प्रसाद्यम् ।
चोरिवुं चोरयितव्यम्, चोरणीयम्, चौर्यम्, अपहर्त्तव्यम्, अपहरणीयम्, अपहार्यम्, तस्करणीयम् ।
राषि(खि)वुं रक्षितव्यम्, रक्ष्यम्, [रक्षणीयम्] परित्रातव्यम् ।
पालिवुं पालयितव्यम्, पालनीयम्, पाल्यम्, गोपयितव्यम्, गोपनीयम्, गोप्यम् ।
आणिवुं आनेतव्यम्, आन[य]नीयम्, आनेयम्, आनाय्यम् ।
परिणवुं परिणेतव्यम्, परिण[य]नीयम्, परिणेयम्, परिणाय्यम्, उपयन्तव्यम्, उपयमनीयम्, उपयम्यम् ।
अवतरिवुं अवतरितव्यम्, अवतरणीयम्, अवतार्यम् ।
चुंटिवुं अवचेतव्यं, अवचयनीयम्, अवचेत्यम्,
चिणिवुं चेतव्यम्, चयनीयम्, चेयम् ।
लूणिवुं लवितव्यम्, लवनीयम्, लव्यम्, लाव्यम् ।
रमिवुं रंतव्यम्, रमणीयम्, क्रीडितव्यम्, क्रीडनीयम् ।
घडिवुं घटयितव्यम्, घटनीयम् ।
होमिवुं होतव्यम्, हवनीयम्, हव्यम् ।
ऑलगिवुं अवलगितव्यम्, अवलगनीयम्, सेवनीयम्, सेव्यम् ।
वांछिवुं वाञ्छितव्यम्, वाञ्छनीयम् ।
नासिवुं पलायितव्यम्, पलायनीयम्, नष्टव्यम् ।
अलंकरिवुं अलङ्कर्त्तव्यम्, अलङ्करणीयम्, अलङ्कार्यम् ।
विपराविवुं व्यापारयितव्यम्, व्यापारणीयम्, व्यापार्यम् ।
उच्छाहिवउ उत्साहनीयः, उत्साहयितव्यः, उत्साहाय्यः, प्रेरणीयः, प्रेरयितव्यम्, प्रेर्यः, नोदनीयः, नोदयितव्यः, नोद्यः ।
अनुमोदिवुं अनुमोदनीयम्, अनुमोदयितव्यः, अनुमोद्यः ।

*

क्रिया च कर्त्ता च तथा च कर्म,
अनुक्तमुक्तं पुरुषत्रयं च ।
संख्या परस्मैपदलिङ्गकानि,
तथात्मने कालविभक्तयश्च ॥ १
संख्याविभक्तिलिङ्गपुरुषत्रयश्च
यदुक्तं भवति तस्यैव ग्राह्यम् ।
क्रियाकर्त्तादिकं सर्वं
पूर्वश्लोकप्रदर्शितम् ।
सारस्वतमिताज्ञेयं
संस्कृतं ज्ञातुमिच्छता ॥ २

*

तुं हुं इत्यर्थे त्वं अहम् ।

तुम्हि तुम्हे अम्हि अम्हे इत्यर्थे यूयं वयम् ।

तइं मइं त्वया मया ।

तुम्हि अम्हि तुम्हे अम्हे इ कीजइ युष्माभिः अस्माभिः क्रियते ।

तूंहइ मूंहइ तव मम ।

तुम्हनइं अम्हनइं युष्माकम्, अस्माकम् ।

ताहरुं तावकम्, तावकीयम्, तावकीनम्, त्वदीयम् ।

माहरुं मदीयम्, मामकम्, मामकीनम्, मामकीयम् ।

तुम्हारुं युष्मदीयम्, यौष्माकम्, यौष्माकीनम् ।

अम्हारुं अस्मदीयम्, अस्माकीनम्, अस्माकम् ।

आपणूं आत्मीयम्, स्वयम्, निजम् ।

परायउ परकीयम् ।

तिहातणूं तत्रत्यम् ।

इहांतणूं अत्रत्यम् ।

जिहांतणूं यत्रत्यम् ।

किहांतणूं कुत्रत्यम् ।

वाहिरल्युं बाह्यम् ।

माहिल्युं मध्यवर्त्ति, आभ्यन्तरम् ।

छेहिलुं अन्त्यम्, अन्तिमम् ।

पहिलुं प्रथमम् ।

कांई किञ्चित्, किमपि ।

कोई कश्चित्, कोऽपि ।

पाछिलुं पाश्चात्यम् ।

पछइ पश्चात् ।

आगिलुं अग्रेतनम् ।

जिम यथा ।

तिम तथा ।

किम कथम् ।

किसउ किम् ।

एतलुं एतावत्, इयत् ।

जेतलुं यावत् ।

तेतलुं तावत् ।

जिसउ यादृक्, यादृशः, यादृक्षः ।

अनेरिसिउ अन्यादृग्, अन्यादृशः, अन्यादृक्षः ।

तुम्हासित युष्मादृशः, भवादृशः ।

अम्हासित अस्मादृशः ।

केतलउ कतिपयः; कति ।

केतलुं कियत् ।

इणि परि इत्थम्, अनया रीत्या ।

इम एवमेव ।

विणा, पाषइ विना, ऋते, अन्तरेण, व्यतिरेकेण ।

कहियइ कदा ।

जहियइ यदा ।

तहियइ तदा ।

अन्येरीवार अन्यदा ।

हिविडां अधुना, इदानीम्, सम्प्रति, साम्प्रतम् ।

आज अद्य ।

काल्हि कल्ये ।

परमइ परेद्युवि ।

अहूण ऐषमस्य ।

पुरु परुत् ।

किहां कुत्र ।

जिहां यत्र ।

तिहां तत्र ।

तउ तत् ।

जउ यत् ।

अउ इत्यर्थे असौ अयं एषः ।

जु, यो, ये यः ।
तु, सु, ते सः ।
आपइणी आत्मना, स्वयम् ।
तां तावत् ।
जां यावत् ।
उहरउं अंतर्धाकार ।
परहउ पराक् ।
आघउ अतस्ततः ।
तिरछउ आडउ, तिर्यक्, तिरश्चीनम् ।
एतला ऊपरूं अतः ऊर्द्ध्वम् ।
आजु लगइ अद्य प्रभृति ।
आजूनुं अद्यतनम् ।
काल्हनउं कल्यतनम् ।
ऊपरिलुं उपरितनम् ।
हेठिलुं अधस्तनम् ।
ऊपरि उपरि, उपरिष्टात् ।
वाहिर हुंतउ वहिस्तात् ।
विसिमिसि प्रतिस्पर्द्धा, अहमहमिका ।
माणसामउ मनुष्यात्मकः ।
सामुहु सन्मुखः ।
उपराठउ पराङ्मुखः ।
अनेरुं अन्यत्, अपि च, अपरं च ।
अजी अद्यापि ।
आगइ अग्रे, तत्पुरः ।
अग्रेतनु पुरः ।
सदा सर्वदा नित्यं प्रत्यहं निरन्तरं सततम् ।
तुहइ तदपि ।
जइ यद्यपि ।
तउ तर्हि ।
इ, ए इदम्, एतत्, अदः ।
अलजु उत्कण्ठा ।
ऊंचउं उच्चैः ।
नीचउं नीचैः ।

उंचानीचुं उच्चावचम् ।
लहुडुं लघु ।
भारी गुरु ।
वडउ वृद्धम् ।
अउंगउ मुगउ अवाक् मूकः(?) ।
कूका हेवाका ।
कन्हइ पासि पार्श्वे, समीपे, निकटे ।
माहि मध्ये ।
विचालुं अन्तरालम् ।
ठालउं रिक्तम् ।
भरिउं निचितम् ।
जिमणुं दक्षिणम् ।
डावउं वामम् ।
ढीलउं शिथिलम् ।
पालटिउ परावर्त्तः ।
वापडउ वराकः ।
नहींत नो वा ।
एह ठाम हुंतउ अमुष्मात्, अस्मात्, एतस्मात् स्थानात् ।
जेह ठाम हुंतउ यतः, यस्मात् स्थानात् ।
तेह ठाम हुंतउ ततः, तस्मात् स्थानात् ।
किहां हुंतउ कुतः, [कस्मात्] स्थानात् ।
अनेरी परि अन्यथा ।
सर्व परि सर्वथा ।
एक परि एकधा ।
विहुं परि द्विधा ।
त्रिहुं परि त्रिधा ।

सर्वत्र संख्याशब्देषु 'संख्यायाः प्रकारेण' इति सूत्रेण 'धा' प्रत्ययः ।

पहिलउ प्रथमः ।
वीजउ द्वितीयः ।
त्रीजउ तृतीयः ।

चउथउ चतुर्थः ।
पांचमउ पञ्चमः ।
छट्ठउ षष्ठः ।
सातमउ सप्तमः ।
आठमउ अष्टमः ।
नवमउ नवमः ।
दसमउ दशमः । इत्यादि ।
वीसमउ विंशतितमः ।
त्रीसमउ त्रिंशति(? त्)तमः ।
चालीसमउ चत्वारिंशति(त्?)नमः ।

विंशतिप्रभृतिशब्दात् 'तम' प्रत्ययः ।

पालउ पादचारः ।
जोहारः जोत्कारः ।
सोहिलुं सुखावहम् ।
दोहिलुं दुःखावहम् ।
लाई लम्पकः ।
रलियामणुं रतिजनकम् ।
उदेगामणुं उद्वेगजनकम् ।
जूउ भिन्नः, पृथक् ।
अरणइ अरतिः ।
किर किल ।
साधुपणूं साधुत्वम्, साधुता ।
निश्चयार्थे **एव** शब्दः ।
च समुच्चये
परिवारिउं प्रपारितम् ।
मउडइं २ शनैः २ मन्दम् २ ।
पुण पुण वारं वारम् ।
विलखउ विलक्षः, वक्रमयः, वक्रमयम् ।
लोहमूं लोहमयम् ।
अनेथि अन्यत्र ।
केवडूं कियन्मात्रम् ।
एक एकः ।
द्वि द्वौ ।
त्रिणि त्रयः ।
च्यारि चत्वारः ।
पांच पञ्च ।
छः षट् ।
सात सप्त ।
आठ अष्टौ ।
नव नव ।
दश दश
इग्यार एकादश ।
बार द्वादश ।
तेर त्रयोदश ।
चवदइ चतुर्दश ।
पनरइ पञ्चदश ।
सोल षोडश
सतर सप्तदश ।
अठार अष्टादश ।
उगणीस एकोनविंशति ।

विंशति, एकविंशति, द्वाविंशति, त्रयोविंशति, चतुर्विंशति, पञ्चविंशति, षड्विंशति, सप्तविंशति, अष्टाविंशति, एकोनविंश(? त्रिं)शत्, त्रिंशत्, एकत्रिंशत्, द्वात्रिंशत्, त्रयस्त्रिंशत्, चतुस्त्रिंशत्, पञ्चत्रिंशत्, षट्त्रिंशत्, सप्तत्रिंशत्, अष्टात्रिंशत्, एकोनचत्वारिंशत्, चत्वारिंशत्, एकचत्वारिंशत्, द्वाचत्वारिंशत्, त्रयश्चत्वारिंशत्, चतुश्चत्वारिंशत्, पञ्चचत्वारिंशत्, षट्चत्वारिंशत्, सप्तचत्वारिंशत्, अष्टाचत्वारिंशत्, एकोनपञ्चाशत्, पञ्चाशत्, एकपञ्चाशत्, द्वापञ्चाशत्, त्रिपञ्चाशत्, चतु[:]पञ्चा-

शत्, पञ्चपञ्चाशत्, षट्पञ्चाशत्, सप्तपञ्चाशत्, अष्टापञ्चाशत्, एकोनषष्टिः, षष्टिः, एकषष्टिः, द्वाषष्टिः, त्रिषष्टिः, चतु[ः]षष्टिः, पञ्चषष्टिः, षट्षष्टिः, सप्तषष्टिः, अष्टाषष्टिः, एकोनसप्ततिः, सप्ततिः, एकसप्ततिः, द्वासप्ततिः, त्रिसप्ततिः, चतुःसप्ततिः, पञ्चसप्ततिः, षट्सप्ततिः, सप्तसप्ततिः, अष्टासप्ततिः, एकोन[ा-]शीतिः, [अशीतिः], एकाशीतिः, द्वाशीतिः, त्रयोशीतिः, चतुरशीतिः, पञ्चाशीतिः, षडशीतिः, सप्ताशीतिः, अष्टाशीतिः, एकोननवतिः, नवतिः। नवनवतिः ।

॥ इत्यज्ञातविद्वत्कर्तृकमुक्तीयकं समाप्तमिति ॥

॥ शुभं भवतु ॥



अविज्ञातविद्वत्संगृहीतानि

पुरातन-औक्तिकपदानि

*

[कारकविचार]

अथ षट् कारकाणि लिख्यन्ते-

छ कारक, सातमउ संबंधु ।

कर्त्ता, कर्म्मु, करणु, संप्रदानु, संबंधु, अधिकरणु ।

जु करइ तु कर्त्ता ।

जं कीजइ तं कर्म्मु ।

जीण करी क्रिया कीजइ तं करणु ।

येह देवातणी वाञ्छा, येह रूषइ कांई, धरीइ कांई; तं कारकु संप्रदानसंज्ञकु हुइ ।

जेहतउ अपाय विश्लेषु हुइ, जेहतउ भयु हुइ, जेहतउ आदान ग्रहणु हुइ, तं कारकु अपादान संज्ञकु हुइ ।

जेह कन्हइ, जेह माझि, जेह पासि, जेह तणउ, जेह तणी, जेह तणउं, जेहरहिं इत्यर्थे संबंधु ।

गामि, पाद्रि, षलइ, क्षेत्रि, वनि, पर्वति, माझि, बाहिरि इत्यर्थे आधारु ।

कर्त्तौं प्रथमा ।

कर्म्मि द्वितीया ।

करणि तृतीया ।

संप्रदानि [चतुर्थी ।]

[अपादानि] पंचमी ।

संबंधि षष्ठी ।

अधिकरणि सप्तमी ।

जउ पाधरी उक्ति तउ उक्त कर्त्ता ।

उक्ते कर्त्तरि प्रथमा ।

अनुक्तुं कर्म ।

अनुक्ते कर्मणि द्वितीया ।

जु वांकी उक्ती तउ अनुक्त कर्ता, उक्तं कर्म ।

अनुक्ते कर्त्तरि तृतीया, उक्ते कर्मणि प्रथमा ।

कालि भावि सप्तमी । वेला, दीसु, पक्षु, मासु, वरसु, ऋतु इत्यादि **कालः ।** असुकइं हुंतइं असुकुं हौउं इत्यादि **भावः ।**

पाखइ, विना, किशा पाखइ, जेह, त्यहां-

विनायोगे द्वितीया-तृतीया-पञ्चम्यः । यावद्योगे द्वितीया । परितो योगे द्वितीया । अनभिप्रति योगे द्वितीया । प्रभृतियोगे पञ्चमी । अर्वाक् योगे पञ्चमी ।

एक आगलि एक वचनु, बिहुं आगलि द्वि वचनु, घणां आगलि बहु वचनु ।

त्रुटितप्रत्यन्तर प्राप्त पाठभेद । अथ षट् कारकमभिलिख्यते । यथा—छ कारक, सातमउ संबंध । कर्ता १, कर्म २, करण ३, संप्रदान ४, अपादान ५, संबंध ६, अधिकरण ७ । जे करइ ते कर्ता । जं कीजइ तं कर्म । जेणइ करी क्रिया कीजइ ते करण । जेह भणी धरीइ कांई तं कारक संप्रदान । जिह हुंतु अपाय विश्लेष हुइ जेह तु भय हुई जिह तु आदान ग्रहण कीजइ तं कारक अपादान । जिह कन्हइ, जिह माहि, जिह पासि, जिह तणूं, जिह तणी, जिह तणू, जिहनइ, जिहकिहि, इत्यादि संबंधः । गामि पाद्रि क्षेत्रि खलइ वनि पर्वति माहि वाहिरि इत्यादि आधार ।

कर्ताइं प्रथमा । कर्मि द्वितीया । करणि तृतीया । संप्रदानि चतुर्थी । अपादानि पंचमी । संबंधि षष्ठी । अधिकरणि सप्तमी ।

[शब्दसंग्रह]

[१]

कीधुं कृतम्।
लिधुं गृहीतम्।
दीधउं दत्तम्।
ग्यउं गतम्।
आव्यउं आगतम्।
आण्यउं आनीतम्।
पढिउं पठितम्।
बोल्यउं उक्तम्।
मारिउं हतम्।
जाणिउं ज्ञातम्।
यमिउं भुक्तम्।
रहिउं रहितम्।
थाकउं } स्थितम्।
थ्युउं } स्थितम्।
दीठउं दृष्टम्।
पूछिउं पृष्टम्।

[२]

करतउ कुर्वन्।
लेतु गृह्णन्।
देतउ ददन्।
जातउ गच्छन्।
आवतउ आगच्छन्।
आणतउ आनयन्।
पढतउ पठन्।
बोलतउ वदन्, जल्पन्।
मारतउ घ्नन्।
जाणतउ जानन्।
जिमतउ भुञ्जन्।
अछतउ } तिष्ठन्।
रहतउ } तिष्ठन्।
देखतउ पश्यन्।
पूछतउ पृच्छन्।

[३]

कीजतउं क्रियमाणम्।
लीजतउं गृह्यमाणं, लीयमानम्।
दीजतउं दीयमानम्।
जईतउं गम्यमानम्।
आवीतउं आगम्यमानम्।
आणीतउं आनीयमानम्।
पढीतउं पठ्यमानम्।
बोलीतउं उच्यमानम्।
मारीतउं हन्यमानम्।
जाणीतउं ज्ञायमानम्।
यमीतउं भुज्यमानम्।
रहितउं } स्थीयमानम्।
अछीउं } स्थीयमानम्।
दीसतउं दृश्यमानम्।
पूछीतउं पृच्छयमानम्।

---

[१]

कीधुं कृतम्।
लीधुं गृहीतम्।
दीधुं दत्तम्।
ग्यउं गतम्।
आव्यु आगतम्।
आण्युं आनीतम्।
पढ्यउं पठितम्।
बोल्युं उक्तम्।
जाण्युं ज्ञातम्।
जिम्युं भुक्तम्।
रहिउं थाकउ } रहितं
थिउं } स्थितं च
दीठउं दृष्टम्।
पूछ्युं पृष्टम्।

[२]

करतु कुर्वन्।
देतु ददन्।
खातु खादन्।
जातु गच्छन्।
आवतु आगच्छन्।
आणतु आनयन्।
पठतु पठन्।
बोलतु वदन्।
मारतु घ्नन्।
जिमतु भुञ्जानः। अशने तु आत्मनेपदीउ।
छतु रहितु तिष्ठन्।
देषतु पश्यन्।
पूछतु पृच्छन्।

[३]

कीजतूं क्रियमाणम्।
लीजतूं गृह्यमाणं नीयमानं वा।
दीजतूं दीयमानम्।
जईतूं गम्यमानम्।
आवीतूं आगम्यमानम्।
आणीतूं आनीयमानम्।
पढीतूं पठ्यमानम्।
बोलीतूं उच्यमानम्।
मारीतूं हन्यमानम्।
जाणीतूं ज्ञायमानम्।
जिमीतूं भुज्यमानम्।
रहीतूं स्थीयमानम्।
दीसतउं दृश्यमानम्।
पूछीतूं पृच्छ्यमानम्।

[४]
करी कृत्वा ।
लेई गृहीत्वा ।
देई दत्वा ।
जाई गत्वा ।
आवी आगत्य ।
आणी आनीय ।
पढी पठित्वा ।
बोली उक्त्वा ।
मारी हत्वा ।
जाणी ज्ञात्वा ।
यमी भुंक्त्वा ।
रही
थै } स्थित्वा ।
देखी दृष्ट्वा ।
पूछी पृष्ट्वा ।

[५]
करिवा कर्त्तुम् ।
लेवा ग्रहीतुम् ।
देवा दातुम् ।
जाइवा गन्तुम् ।
आविवा आगन्तुम् ।
आणिवा आनेतुम् ।
पढिवा पठितुम् ।
बोलिवा वक्तुम् ।
मारिवा हन्तुम् ।
जाणिवा ज्ञातुम् ।
यमिवा भोक्तुम् ।
रहीवा
अछिवा } स्थातुम् ।
देषिवा द्रष्टुम् ।
पूछिवा प्रष्टुम् ।

[६]
करणहारु कर्तुकामः ।
लेणहारु ग्रहीतुकामः ।
देणहारु दातुकामः ।
जाणहारु गन्तुकामः ।
आवणहारु आगन्तुकामः ।
आणनहारु आनेतुकामः ।
पठणहारु पठितुकामः ।
बोलणहारु वक्तुकामः ।
मारणहारु हन्तुकामः ।
जाणनहारु ज्ञातुकामः ।
पूछणहारु प्रष्टुकामः ।

[७]
करिवुं कर्त्तव्यम् ।
लेवउं ग्रहीतव्यम् ।
देवुं दातव्यम् ।

---

[४]
करी कृत्वा ।
लेईं गृहीत्वा, नीत्वा ।
देईं दत्त्वा ।
जई गत्वा ।
आवी आगत्य, एत्य ।
आणी आनीय ।
पढी पठित्वा ।
बोली उक्त्वा ।
मारी हत्वा ।
जाणी ज्ञात्वा ।
जिमी भुक्त्वा ।
खाई भक्षयित्वा ।
रही स्थित्वा ।
देषी दृष्ट्वा ।
पूछी पृष्ट्वा ।

[५]
करिवा कर्तुम् ।
लेवा ग्रहीतुम् ।
देवा दातुम् ।
जाइवा गन्तुम् ।
आविवा आगन्तुम् ।
पूछिवा प्रष्टुम् ।

[६]
करणहार कर्तुकाम ।
लेणहार हर्तुकाम ।
जाणहार गंन्तुकाम ।
आवणहार आगन्तुकामः ।
आणनहार आनेतुकामः ।
पठणहार पठितुकामः ।
बोलणहार वक्तुकामः ।
मारणहार हन्तुकाम· ।
जाणहार ज्ञातुकामः ।
पूछणहार प्रष्टुकामः ।

[७]
करिवूं कर्तव्यम् ।
लेवूं ग्रहीतव्यम् ।
देवूं दातव्यम् ।

जाइवउं गन्तव्यम् ।
आविवुं आगन्तव्यम् ।
आणिवउं आनेतव्यम् ।
पढिउं पठितव्यम् ।
बोलिवउं वक्तव्यम् ।
मारिवउं हन्तव्यम् ।
जाणिवउं ज्ञातव्यम् ।
यमिवउं भोक्तव्यम् ।
रहिवउं, अछिवउं — स्थातव्यम् ।
देषिवउं द्रष्टव्यम् ।
पूछिवउं प्रष्टव्यम् ।

*

कीधउं, लीधउं, दीधउं — इत्यादौ निष्ठाक्तः ।
करतुं, लेतुं, देतुं — इत्यादौ शतृङ् ।
कीजतुं, लीजतुं, दीजतुं — इत्यादौ आनश् ।
करी, लेई, देई — इत्यादौ क्त्वा ।
करिवा, लेवा, देवा — इत्यादौ तुम् ।

शक ज्ञा धातु प्रयोगे क्त्वास्थाने तुम्—
करी जाणउं कर्तुं जानामि ।
पढी सकुं पठितुं शक्नोमि ।
करणहारु, लेणहारु, देणहारु — इत्यादौ शतृ-कानशौ
करिवुं, लेवुं, देवुं — इत्यादौ तव्यानीयौ ।
आजु अद्य ।
कालि कल्ये ।
परम परेद्यवि ।
अरिरम अपरेद्युः ।
आजूणउं अद्यतनम् ।
कालूणउं कल्यतनम् ।
हवडां अधुना, इदानीं, सांप्रतं, संप्रति ।
हवडांनुं आधुनिकं, सांप्रतीनम् ।
नहीं तु नो वा, नो चेत् ।
लगइ प्रभृति, आरम्य ।
पाखइ विना, ऋते ।
मुहीयां मुधा ।
यिम यथा ।
तिम तथा ।
किम कथम् ।
ईणपरि इत्थम् ।
जहींय यदा ।

आविवूं आगन्तव्यम् ।
आणिवूं आनेतव्यम् ।
बोलिवूं वक्तव्यम् ।
मारिवूं हन्तव्यम् ।
जाणिवूं ज्ञातव्यम् ।
जिमिवूं भोक्तव्यम् ।
रहिवूं स्थातव्यम् ।
देपिवूं द्रष्टव्यम् ।
पूछिवूं प्रष्टव्यम् ।
पढिवूं पठितव्यम् ।
आज अद्य ।
काल्हि कल्ये ।
परम परद्यवि ।
अरीरम अपरेद्यवि ।
आजूनूं अद्यतनम् ।
कालूनूं कल्यतनम् ।
हवडांनूं आधुनिकं, साम्प्रतीनम् ।
हवडां अधुना, इदानीम्, सम्प्रति, साम्प्रतम् ।
नहि तु नो वा, नो चेत् ।
लगइ प्रभृति, आरभ्य ।
पापइ विना, ऋते ।
मुहीआं मुधा ।
जिम यथा ।
तिम तथा ।
किम कथम् ।
इणी परि इत्थम् ।
जहीइं यदा ।

तहींय तदा ।
कहींय कदा ।
अनेकवार अनेकधा ।
ज्यार अन्यदा ।
सवईवार सर्वदा, सदा ।
एकवार एककृत्वः ।
एवं वारस्य संख्यायाः कृत्वस् ।
एकपरि एकधा ।
व्यहु परि द्विधा, द्वैधम् ।
तृहु परि त्रेधा, त्रैध्यम् ।
च्यहु परि चतुर्धा ।
किहां कुत्र, क ।
यहां यत्र ।
तिहां तत्र ।
ईहां अत्र, इह ।
अनेति अन्यत्र ।
सघले सर्वत्र ।
वली व्याहृत्य ।
तिमइ तत्कालम् ।
झटकइं झटिति ।
जूउं पृथक् ।
ताहरुं तदीयम् ।
माहरउं मदीयम् ।
तम्हारउं युष्मदीयम् ।
अम्हारउं असमदीयम् ।
ताहरउ तावकः, तावकीनः ।
माहरउ मामकः, मामकीनः ।
जां यावत् ।
तां तावत् ।
जेतलुं यावन्मात्रम् ।
तेतलुं तावन्मात्रम् ।
एवडुं एतावन्मात्रम् ।
केतलउं कियत् ।
केवडुं कियन्मात्रम् ।
एतलउं इयत् ।
जु यदि, यतः ।
तु ततः ।
जं यत् ।
तं तत् ।
जइकिमइ यदि किमपि चेत् ।
इमै अन्यथा ।
इसुं इति ।
होउ एवम् ।
हवं अथ ।
हावलि प्रत्युत ।
पूठिं अनु ।
सामहु अभिमुखः ।
डाबउ वाम ।

कहीइं कदा ।
अनेकवार अनेकदा ।
ज्यार अन्यदा ।
सवई वार सर्वदा ।
एक वार एककृत्वः ।
बि वार द्विकृत्व. ।
त्रिणि वार त्रिकृत्वः ।
च्यारि वार चतुःकृत्वः ।
सउ वार शतकृत्वः ।
वारस्य सङ्ख्यायां कृत्वस् ।
एक परि एकधा ।
बिहु परि द्विधा ।
त्रिहुं परि त्रिधा ।
चिहुं परि चतुर्धा ।
किहां कुत्र ।
जिहां यत्र ।
तिहां तत्र ।
ईहां अत्र, इह ।
अनेथि अन्यत्र ।
सघलइ सर्वत्र ।
वली व्यावृत्य ।
झटकइं झटति ।
जूउ पृथक् ।
ताहरूं त्वदीयम् ।
माहरुं मदीयम् ।
तम्हारूं युष्मदीयम् ।
अम्हारूं अस्मदीयम् ।
याण यावत् ।
ताण तावत् ।
जेतलूं यावन्मात्रम् ।
तेतलूं तावन्मात्रम् ।
एतलूं एतावन्मात्रम्, इयत् ।
केतलूं कियत् ।
जु यदि ।
जईयइ किमइ यदि किमपि, यदि चेत् ।
ईमहइ अन्यथा ।
इस्यउं इति ।
हा एवम्, अथ ।
हावलि प्रत्युत ।
पूठि अनु ।
सामहु अभिमुख ।
डावउ वाम ।

यमणुं दक्षिणः ।
वांकउ कुटिलः ।
पाधरु ऋजु, सरलः ।
लांबउ दीर्घः ।
हेठि अधः ।
ऊपरि उपरि ।
आडउ तिर्यक् ।
तिरछउ तिरश्चीनः ।
आगिलुं अग्रे, पुरः ।
पाछिलु पाश्चात्यः ।
सरीषउ सदृक्, समानः, सदृक्षः ।
किसउ कीदृग्, कीदृशः, कीदृक्षः ।
इसउ ईदृक्, ईदृश, ईदृक्षः ।
यसउ यादृक्, यादृशः, यादृक्षः ।
तिसउ तादृक्, तादृशः, तादृक्षः ।
अनेसउ अन्यसदृक्, अन्यसदृशः, अन्यसदृक्षः ।
तूंसरीषउ त्वादृशः ।
मूंसरीषउ मादृशः ।
तम्हंसरीषउ युष्मादृशः ।
अम्हंसरीषउ अस्मादृशः ।
अरहु अर्व्वाक् ।
परहु पराक् ।
पाखलि परितः, सर्वतः, विष्वक्, समन्तात्, समन्ततः ।
उगउमुगउ अवाङ्मूकः ।
झलझांषसउ चलद्ध्वांक्षम् ।
ऊधांधलुं उद्धूलिकम् ।
सूगामणउं शूकाजनकम् ।
अहिवा अधवा, विधवा ।
सूहव सुधवा ।
ऊतरिण्यु उत्तारिततृणम् ।
पढ्ढु प्रतिभूः ।
पढ्ढुचउं प्रतिभाव्यम् ।
ऊपरीयामणु उत्कटिकाकुलं रणरणकं वा ।
ओल्यउ अर्वाचीनः ।
पयलु पराचीनः ।
विलखउ विलक्षः ।
द्रहद्रहवार जयद्रथवेला ।
तांगणी तनुगमनिका ।
गोई गोसली गोप्यसिलाका ।
ऊकरडी अवकरोत्करिका ।
पूंजउ अवकर ।

जिमणउ दक्षिण ।
वांकु कुटिल ।
पाधरु ऋजु, सरल ।
लांवउ दीर्घः ।
हेठि अधः ।
ऊपरि उपरि ।
आडु तिर्यक् ।
तिरिछउ तिरश्चीनः ।
आगलि अग्रे, पुरः ।
आगिलउ अग्रेसरः ।
पाछिलउ पाश्चात्यः ।
सरीषु सदृक्, समानः, सदृशः, सदृक्षः ।
किसउ कीदृशः, कीदृक् ।
जिसउ यादृक्, यादृशः, यादृक्षः ।
तिसउ तादृशः, तादृक्, तादृक्षः ।
ईसउ ईदृक्, ईदृशः, ईदृक्षः ।
अन्यसरीषउ अन्यसदृक्, अन्यसदृशः ।
[तुम्हसरीषउ ?] भवादृशः, भवादृक्षः ।
तूंसरीषउ त्वादृशः ।
मूंसरीषउ मादृशः ।
तम्हसरीषु युष्मादृशः ।
अम्हसरीषउ अस्मादृशः ।
उरहु अर्वाक् ।
परहु पराक् ।
पाषलि परितः, सर्वतः, विष्वक्, समन्तात् ।
उगमूगउ अवाङ्मूकः ।
झलझांखसउ चलत(द्)ध्वाङ्क्षम् ।
ऊधाधलं उद्धूलिकम् ।
सूगामणउं सूकाजननम् ।
पींप नही क्षेम क्षितिर्न हि ।
अहिवा अधवा ।
सूहव सुधवा ।
उत्तराणउं उत्तारिततृणम् ।
पढ्ढ प्रतिभूः, लग्नकः ।
पढ्ढचूं प्रतिभाव्यम् ।
ऊफिरीयामणू उत्कलिकाकुलं रणरणकं वा ।
उरलिउं अर्वाचीनम् ।
पइलउ पराचीनः ।
विलखउ विलक्षः ।
द्रहद्रहवार जयद्रथवेला ।
तांगणी तनुगमनिका ।
गोईगोसली गोप्यसि(श)लाका ।
उकरडी अवकरोत्करिका ।
पुंजउ अवकरः सङ्करश्च ।

उक्ति च्यह्व प्रकारि—कर्त्ता, कर्म्मि, भावि, कर्मकर्त्ता। जउ उक्ति पाधरी हुइ—उक्तिमाहि कर्त्ता कर्मु हुइ ते उक्ति कर्त्ता जाणिवी। जु वांकी उक्ति हुइ तु माहि कर्त्ता हुइ, कर्मु न हुइं तउ ते उक्ति भावि जाणिवी। जु कर्म्म फीटी कर्त्ता आविउ हुइ, ते उक्ति कर्म्मकर्त्ता जाणिवी। कर्त्ता परस्मै पद दीजइ। कर्म्मि भावि आत्मनेपद दीजइ।

पुरुष केता? ३। कुण कुण? प्रथमु, मध्यमु, उत्तमु। नामि बोलावीय ते प्रथमपुरुष। तुं तम्हि मध्यम पुरुषु हुइ। हुं अम्हि उत्तम पुरुष।

काल केता? ३। कुण कुण? वर्त्तमानु, अतीतु, भविष्यु। वर्त्तइ वर्त्तमानु, वर्त्युं अतीतु, वर्त्तसिइ भविष्यु। वर्त्तमानकालि ३ विभक्ति हुइ—वर्त्तमाना, सप्तमी, पंचमी। अतीत कालि ४ विभक्ति—ह्यस्तनी, अद्यतनी, परोक्षा, स्म संयोगि वर्त्तमाना। भविष्यकालि ३ विभक्ति—भविष्यन्ति, आशिः, श्वस्तनी।

करइ, लिइ, दिइ; करत, ल्यथ [दथ?]; करुं ल्युं, धुं, इसइ बोलि वर्त्तमान कालु। वर्त्तमानानुं परस्मैपदु दीजइ।

कीजइ, लीजइ, दीजइ; कीज, लीज, दीज; कीजुं, दीजुं, लीजुं; इसइ बोलि वर्त्तमानु कालु। वर्त्तमानानुं आत्मनेपदु दीजइ।

करिजे, लेजे, देजे; इसइ बोलि वर्त्तमानु कालु। सप्तमीनुं परस्मैपद दीजइ।

कीजिजे, लीजिजे, दीजिजे; इसइ बोलि वर्त्तमानु कालु। सप्तमीनुं आत्मनेपदु दीजइ।

करइ, लिइ, दिइ; करउ, लिउ, दिउ; इसइ बोलिवइ वर्त्तमानु कालु। पंचमीनुं परस्मैपदु दीजइ।

कीजउ, लीजउ, दीजउ; इसइ बोलि वर्त्तमानु कालु। पंचमीनुं आत्मनेपदु दीजइ।

करतउ, लेतउ, देतउ; करता, लेता, देता; करती, लेती, देती; करतउं, लेतउं, देतउं; इसइ बोलिवइ अतीत कालु। ह्यस्तनी अद्यतनी परोक्षानुं परस्मैपदु दीजइ।

कीधुं, लीधुं, दीधुं; कीधा, लीधा दीधा; कीधी, लीधी, दीधी; इसइ बोलिवइ अतीत कालु। ह्यस्तनी अद्यतनी परोक्षानुं आत्मनेपद दीजइ।

करिसिइ, लेसिइ, देसिइ; करसुं, लेसुं, देसुं; करिस्यउं, लेस्यउं, देस्यउं; इसइ बोलिवइ भविष्यु कालु। भविष्यन्तीनुं परस्मैपदु दीजइ।

करीसिइ, लीजसिइ, दीजसिइ; इसइ बोलि भविष्य कालु। भविष्यन्तीनुं आत्मनेपदु दीजइ।

भविष्यकालि आशीर्वादयोगी आशीर्विभक्ति हुइ; अनइ भविष्य कालि योगि श्वस्तनी विभक्ति दीजइ। भविष्यंतीनी वाणी बोलीइ।

जउ—जु करत, जु लेत; जु देत; इसिइ बोलिवइ अतीत कालु। क्रियातिपत्तीनउं परस्मैपद दीजिइ।

जु कीजत, जु दीजत, जु लीजत; इसिइ बोलिवइ अतीत कालु। क्रियातिपत्तिनउं आत्मनेपद दीजइ। कर्ता परस्मैपद दीजइ, कर्म्मि आत्मनेपदु दीजइ।

अथ त्यादि विभक्ति केती? १०। कुण कुण? वर्त्तमाना १, सप्तमी २, पंचमी ३, ह्यस्तनी ४, अद्यतनी ५, परोक्षा ६, श्वस्तनी ७, आशीः ८, भविष्यन्ती ९, क्रियातिपत्ती १०। अकेकी विभक्ति १८ वचन—९ परस्मैपद तणां, ९ आत्मनेपद तणां।

ति, तस्, अन्ति; सि, थस, थ; मि, वस्, मस्, इं नव परस्मैपद तणा। **ते, आते, अन्ते, से, आथे, ध्वे; ए, वहे महे;** इं नव आत्मनेपद तणां।

ति तस्, अन्ति; इति प्रथमपुरुषः।
सि, थस्, थ; इति मध्यमपुरुषः।

मि, वस्, मस्; इति उत्तमपुरुषः। ते, आते, अन्ते; इति प्रथमपुरुषः। से, आथे, ध्वे; इति मध्यमपुरुषः। ए वहे, महे; इति उत्तमपुरुषः।

ति, एक वचनु; तस्, द्विवचनु; अन्ति वहुवचनु। सि, एकवचनु; थस्, द्विवचनु; थ, बहुवचनु। मि, एकवचनु; वस्, द्विवचनु; मस्, वहुवचनु। एवं सर्वत्र।

जु कर्त्ता प्रथम पुरुप हुइ तु क्रियां प्रथम पुरुष हुइ। जु कर्त्ता मध्यम पुरुप हुइ तु क्रियां मध्यम पुरुप हुइ। जुकर्त्ता उत्तम पुरुप हुइ तु क्रियां उत्तम पुरुप हुइ।

जु कर्त्ता आगलि एक वचनु हुइ, तु क्रिया आगलि एक वचनु। जु कर्त्ता आगलि द्विवचनु, तु क्रिया आगलि द्विवचनु। जु कर्त्ता आगलि वहुवचनु, तु क्रिया आगलि वहुवचनु।

जु कर्त्ता उक्ति हुइ तु [क्रिया आगलि ?] कर्त्तानी अपेक्षां विभक्ति दीजइ। जु कर्म्मि उक्ति हुइ तु क्रिया आगलि कर्मनी अपेक्षां विभक्ति दीजइ।

[शब्द संग्रह]

चउकीवटु चतुष्कपट्ट।
वटवालनुं वर्त्मपालनम्।
वेहडउं द्विघटम्।
गुढउं गुदगूढम्।
खिसरहंडी क्षिप्रसरहिंडिका।
ओरसु अवघर्षः।
घरट्टु घर्षकः।
वेसरु द्विशरीरः।
अरतपरत बापसरीषउ आकृत्या प्रकृत्या च पितृसदृशः।
अग्गेवाणु अग्रानीकम्।
पाछेवाणु पश्चादनीकम्।
मौ मार्गौकाः, मुक्तौकाः।
वेगडि विकटशृङ्गी।
मींढी मिलितशृङ्गी।
फाडी प्रसृतशृङ्गी।
कुंढली कंटलितशृङ्गी।
मुहषायी परोक्षवादः।
लिपसणउं लिप्स्यायनम्।
वहलि वीतवेत्रा।
पटांतरं प्रत्यन्तरम्।
विज्जाहरी विजयगृही।
कोठउ कोष्ठक।
डोकरु डोलत्करः।
छींडणि छिद्राटनी।
छेकडि छिद्रकरी।
सीरामणु शीताशनं, शरीराप्यायनकं वा।
सउडि संवृत्तपटी।

चउकीवटा चतुष्कपट.। वाटवालणूं वर्त्मपालनम्। वेहडूं द्विघटम्। गुढउं गुदगूढम्। पिसरहिंडी क्षिप्रसरहीण्डिका। ओरस अवघर्षक। घरट घर्षक.। वेसर द्विशरीरः। अरत परत वाप सरीषउ आकृत्या प्रकृत्या पित्रा सदृशः। खीसउ क्षिप्तस्वक। कोथली कोशस्थली। अग्गेवाणू अग्र्यानीकम्। पाछेवाणूं पश्चादनीकम्। वूसट [च]पेटा। चुहुटली चञ्चुपुटिका। कावजि कायाटनी, कायावाल्लिनी वा। गरढउ गतार्धवयाः। वछीयायित वस्तुवित्तः। नीक नीरक्ता। ऊसलसीधुं उल्लासितसन्धिकम्, उत गलंध्रं वा। मऊ मार्गौकाः, [मुक्तौका वा] वेगडी विकटशृङ्गी। मींढी मिलितशृङ्गी। फाडी प्रसृतशृङ्गी। मुहुखाई परोक्षवादी। लिपसणूं लिप्सायिकम्। वरहलि वीतवेत्रा। वरसवियारणि समासमीना। पटांतरूं प्रत्यन्तरम्। [विज्जाहरी] विजयगृहा। कोठउ कोष्टक। डोकरउ डोलत्करः। छीडणि छिद्राटिनी।

सीरष शीतरक्षा ।
तुलाई तूलिका ।
ऊसीसउं उपधानम् ।
शलाटु शिलाघटकः ।
मडि मड्डिका ।
खंडायितु खड्गवित्तः ।
भथायितु तृणवित्तः, भस्त्रवित्तो वा ।
पूर्णी पिचुमर्दी ।
आंगडणु अंगमंडनम् ।
कागु काकः, वायसो वा ।
वावि वापी ।
कूउ कूपः, अन्धुः ।
तलागु तडाग, जलाधारः ।
खडोखली दीर्घिकाः
...... पङ्ककरणम् ।
वगाई जृंभिका ।
चीपडीउ चिपटः ।
गूंहली गोमुखा ।
कोसींटउ कोपसमृद्धः ।
कालियु कालिकः ।
व(च?)णहडीउ चणकवर्त्तकः ।
लुंकडि लोमकटिका ।
सवार सवेला ।
मांकुण मत्कुणः ।
कालाखरिउ कालाक्षरितः, दाणी ।
धणिउ झणितः ।
दीवाली दीपालिनी, दीपोत्सवो वा ।
त्रुटी त्रिपुटी ।
धुलहडी धूलिपटिका, धूलितटी, रजोत्सवो वा ।
थूंकु निष्ठीव ।
आभूयानुं उद्भिद्यमानम् ।
झगडउ उद्वदः ।
छयकारु गेयकारु ।
चिणोठी चित्रपृष्ठा, गुंजा, कृष्णलवा ।
ओंडक अपराख्या ।
ढांकणउं स्थागनकम् ।
सूणहरउं शयनगृहम् ।
पथरणउं प्रस्तरणम् ।
ओढणउं आच्छादनम् ।
नणंद ननन्दा ।
नणदोई ननान्दृपतिः ।
जमाई जामाता ।
नाणिद्रउ ननान्दृसुतः ।
भत्रीजउ भ्रातृजः, भ्रातृसुतः ।
परीयटु निर्णेजकः ।
छीपउ रजकः ।
कुतिगीउ कौतुकिकः ।
अणगुक अनग्निपक्वः ।
फिरक स्फुरितचक्रिका ।
पाटूआली पादप्रहारवती ।
षाणीकणउं षा(खा)दनपरम् ।
परमूणउं परमदिवसीयम् ।
पुरोकउं प्राक्वर्षीयम् ।
सरलउ दीर्घः, प्रलंबः ।
ऊघडदूघडउ उद्घटदुर्घटः ।
कहूआलउ कोलाहलः ।
देसानी छायाकरः ।
मोलीउं } मूर्द्धवेष्टनम्,
मोसंधीयुं } उष्णीषं वा ।
निलाड ललाट, निटिलं वा ।
पोठीउ पृष्ठवाहक ।
अरणइ अरति ।
राजगुल राजत्कुलम् ।
किरि किल ।
बिमणउं द्विगुणम् ।

त्रिगुणु त्रिगुणम्।
चउगुणउं चतुर्गुणः।
चीषलालुं कर्दमाकुलं, पङ्किलं वा।
परिवारयुं प्रपारितम्।
मुडइं मन्दं मन्दम्।
वली वली पुनः पुनः।
पालटउ परिवर्त्तः।
पालटिउ परिवर्तितः।
वापडउ वराकः।
विहरउ व्यतिकरः।
लागु लग्नः।
लगाडिउ लगितः।
पाटलउ पाटचारः।
जुहारु नमस्कारः।
सोहिलउं सुखावहम्।
दोहिलउं दुःखावहम्।
रुलीयामणउं रतिजनकम्।
ऊदेगामणउं उद्वेगजनकम्।
राउताई राजपुत्रता।
राउत राजपुत्र।
द्रम्मामु द्रम्ममय।
असुणिउ अपशकुनिक।
सुण शकुन।
स(सु)णउं स्वप्नम्।
अंबोडउ धम्मिल्ल।
वीणि वेणि।
मांडहिय बलात्कारेण, हठाद्वा।
घायिंसउं सहसैव।
देहरासरु देवतावसरः।
आरतीयासरु आरात्रिकावसरः।
सर्वोसरु सर्वावसरः।
मोटउ स्थूल।
नान्हउ लघु, ह्रस्व।
कडब कणीम्बा।
आरती आरात्रिका।
धूपधाणउं धूपधाम, धूपदहनपात्रम्।
वरांसिउ विपर्यस्त।
वरांसउ विपर्यास।
आखुडिउ अवस्खलित।
घोडाहडि वाजिशाला, अश्वकुटी वा।
रसोयि रसवती, पाकस्थानं, महानसं वा।
भंडारु भांडागारः, कोशो वा।
मंत्रासरु [मंत्रावसरः]।
हथसाल हस्तिशाला, गजसदनं वा।
श्रीगरणु श्रीकरणम्।
वयगरणउ व्ययकरणम्।
घडांमंची घटमञ्चिका।
दावडउं जलयंत्रम्।
अरहट्टु अरघट्टक।
परव प्रपा।
छमकाव्यउं छमत्कारितम्।
अवाडूउ प्रतिकूल।
सवाडूउ सानुकूलः।
पडीसारउ प्रतीसारक।
गुडिउ गुडितः।
पाव(ख?)रिउ प्रक्षरितः।
कु जि को जानाति।
वलहि वालदधि, वालहिता वा।
वरगडु वराकर्षक।
जानुत्र यज्ञयात्रा।
जानावासउ यज्ञावासक।
एकउडउ एकपटिक।
घूघटिउ अवगुण्ठन।
गमाणि गवादिनी।

आहरजाहर आगमनगमनिका ।
खाजलु खाद्यफलम् ।
पीजहलु पेयफलम् ।
मसाहणी महासाधनिक ।
आखउंडली अंक्षपटलिका ।
नलवलीउ वाचाल, वावदूक ।
मेरायीयुं मेराद्यकम् ।
अभोखणुं अभ्युक्षणम् ।
ऊलिषउ उदकोल्लञ्चन ।
पच्छोकडु पश्चादोकस्तटम् ।
पडोसु प्रत्योकस् ।
उपवासी उपोषित ।
फुई पितृष्वसा ।
मासी मातृष्वसा ।
बहिन स्वसा ।
मु(माउ?)लाणि मातुलपत्नी ।
भुजाई भ्रातृजाया ।
सासू श्वश्रू ।
पीत्राणी पितृव्यपत्नी ।
पीत्रीयु पितृव्यक ।
माउलउ मातुल ।
फुईहायी पितृस्वस्रीय ।
माईय (°हायी) } मातृष्वस्रीय ।
मास्याही
मा[उ?]लाही मातुलीय ।
देशांतरी देशान्तरिक ।
पलवटि परिवलितपटी ।
पिराणउ प्रतोदः, प्राजिनं, तोत्रं, प्रवयणं वा ।
चंदौउ चंद्रोदय, उल्लोच ।
परीयच्छि तिरस्करिणी ।
बाउलु बव्बूल ।
आंबिली चिंचा, चिञ्चिणी वा ।
दीवटीउ दीपवर्त्तिक ।
चांद्रिणानी लांप चंद्रायलिप्सा ।
धातखायु धातुखादकः ।
साध (थ?) संस्था ।
आद्रहणु अधिश्रयणम् ।
अहिनाणु अभिज्ञानम् ।
हराविउ पराजित ।
विदाणउ वितानप्रभात्र ।
कोटीलउ कुट्टनक ।
परालु पलालम् ।
अरडकमल्लु अर्यटक[म?]ल्ल ।
सूआडि सूतिकागृहम् ।
भोलउ मुग्धः ।
पाहरी प्राहरिकः ।
गउखु गवाक्ष ।
नीद्रालूखउ निद्रारुद्धक ।
ऊंडहणुं उद्वहनकम् ।
खोडउ खञ्जः ।
पलेवलउं प्रदीपकम् ।
न्युंजणउं नियन्त्रकम् ।
गउंछणउं गुच्छनकम् ।
न्युंछणउं न्युञ्छनकम् ।
छाणावलि कारीषावली ।
ऊदेही उद्वेदिका ।
आडाबंग तिर्यक्सूत्रिका ।
ऊटाटीयुं उट्टीकनम् ।
कूडछी कूर्मोच्छ्रयिका ।
जोत्रु योक्त्रम् ।
जूंसरू युगम् ।
तीन्हउं तीक्ष्णम् ।
कोटडउं प्राकारम् ।
गढु दुर्गः ।

अथ क्रियावचनानि

मांजइ प्रमार्ष्टि ।
जागइ जागर्त्ति ।
गायइ गायति ।
होमइ जुहोति ।
गूंथइ गुथ्यति ।
करइ करोति, कुरुते, विदधाति, विधत्ते ।
धरइ दधाति, धत्ते, धरति, धारयति ।
दि यच्छति, राति, दत्ते, दाति ।
लि नयति, आदत्ते, गृह्णाति, विगृह्णाति ।
ऊडइ उत्पतति, उड्डीयते ।
आचरइ आचरति ।
पवित्रइ पवित्रयति, पुनाति ।
ऊपणइ उत्पुनाति ।
धूपइ धूपायति ।
क्षरइ क्षरति ।
वीकइ विक्रीणाति, विक्रीते ।
मर्दइ मुद्राति (मृद्राति ?) ।
मिलइ मिलते ।
अडइ अड्डते ।
छूटइ छुट्यति ।
ऊठइ उत्तिष्ठति ।
नीठइ निस्तिष्ठति ।
किरगिरइ किरगिराति ।
वषाणइ व्याख्यानयति ।
छिछ(प ?)इ छुपति, मृशति ।
वावइ वपति ।
चोरइ मुष्णाति, चोरयति ।
ऊखेडइ उत्कीलयति ।
डांभइ दभ्नाति ।
वारइ वारयति, निवारयति, निषेधयति ।
पल्हालइ प्रक्लिद्यति ।
पालुइ पल्लवयति ।
थाकइ स्थानमाहरति, स्थानयति ।
फूटइ स्फुटति ।
पतीजइ प्रत्येति, प्रत्ययति, प्रतीयते ।
वरासीयि विपर्यस्यते ।
जाम(य?)इ जायते ।
हुइ भवति ।
खाजइ कण्डूयति ।
ऑलंभइ उपालभते ।
ऊटंटइ उद्बन्धयति ।
क्रमइ क्रामति ।
आयसिइ आदिशति ।
वाधइ वर्द्धते ।
निबीजइ निर्विज्यते ।
कुपइ कुप्यते, क्रुध्यति, रुष्यति ।
तोलइ तूलयति ।
सहइ क्षमति, तितिक्षति, सहते, क्षाम्यति, मृष्यति ।
मरइ म्रियते, विपद्यते ।
आषुडइ आस्खलति ।
फडफडइ फटफटायते ।
शपइ शपति, शप्यते इत्यादि ।

तिष्ठति गम्ल दश्ज्वलौ
स्पृहस् पृच्छति नी पचक् पठौ ।
क्षिप् भणौ विश मुंच् षिच् कृषौ
त्यज दहौ तरति स्तु चल त्रमौ ॥ १
लिखन् मोखन् जिघ्रति वर्षे
पिव् पतेऽथ जि जीव परस्मै ।
यज् वपौ वद् वेञ् वसौ
वहत्युभयमाह भ्वादिगणानाम् ॥ २
वर्तते च रमते वृधूव्यथौ
याचते च लभते च शोभते ।
कंपते च घटते सुखायते
प्रारभते सहते तदात्मने ॥ ३

अद् हन् इण् भा खा शास्ति वा जागृ
माति स्वप रुद वच वायाम्नात्यदादिः परस्मै।
दुह लिह च दा धत्ते भयं स्तुङ्ग भी ह्री
निगदित इह लोके आत्मने पूङ्‌ धातुः ॥ ४
व्यध् हृषौ कुप् तृप्यनशो मुष
म्लिप् दुषौ क्लिन्न शाम्यति तुष्यति।
भ्रम कुपौ च दिवादि परस्मै
तम विदौ गदौ गदितस्तु किलात्मा ॥ ५
विञ् वृञ् किल दुञ शकापौ
खादिगा निगदितास्तु परस्मै।
रुदभिदा छिद भुंजयुजौ वा
भुजयुता उभयं च रुधादिः ॥ ६ ॥
तनोति डुकृञ भयं तनादिः
स्तृप् ग्रह ह्री मुप लूड विक्री।
क्रियादयः पार्युभयं च चिंति
लोके सभाजिश्चुरताडि भिक्षौ॥ ७
अत्विकरण कर्त्तरि। दिवादेर्यत्। नु स्वादेः। तनादेरुः। ना क्र्यादेः। चुरादेश्च। इमानि सर्वाणि विकरणसूत्राणि।
परस्मैपदे ह्यस्तनीं यावत्। आत्मनेपदे सर्वत्र सार्वधातुके यण्।
लज्जासत्तास्थितिजागरणं
वृद्धिक्षयभयजीवितमरणम्।
शयनक्रीडारुचिदीप्त्यर्था
धातव एते कर्मविहीनाः ॥ १

[कर्मणि वाक्य]

ईणं लाजीइ अनेन ह्रीयते।
तइं भलइं हुईइ त्वया भव्येन भूयते।
मइं रहीइ मया स्थीयते।
पाहरीं जागीइ यामकेन जागर्यते।
एयु वाधइ असौ वर्द्धते।
एयु जीवइ असौ जीवति।
वयरी मरीइ अरिणा म्रियते।
त्वया सुप्यते। बालेन रम्यते। दानिना शोभ्यते। कर्त्तरि कर्म्मण्यपि कर्म्म नागच्छति।

अथ द्विकर्म्मको भावः।

दुहि याचि रुधि प्रच्छि भिक्ष
चिञानुपयोगिनिमित्तमपूर्वविधौ।
भ्रुवि शासिगणेन च यत्सते (?)
तदकीर्त्तितमाचरितं कविना ॥ १
जयत्यर्थयती मन्थि चतुर्थो दण्डयत्यपि।
एभिः सह बुधैर्ज्ञेया द्वादशैव दुहादयः ॥ २
नीवह्योर्हृकृपोश्चापि गत्यर्थानां तथैव च।
द्विकर्म्मकेषु ग्रहणं ण्यन्ते कर्म च कर्मणः ॥ ३
असौ गां दोग्धि पयः। विप्रो राजानं गां याचते। असौ गामवरुणद्धि व्रजम्। पान्थश्छात्रं पन्थानं पृच्छति। असौ वृक्षमवचिनोति फलानि। विप्रः शिष्यं धर्मं ब्रूते। पण्डितः शिष्यं धर्ममनुशास्ति। कोऽपि बुद्ध्या ग्रामं छात्रशतं जयति। प्रार्थयति राजानं ग्रामं गुरुः। मथ्नन्ति स्म जलधिं देवासुराः।

[द्विकर्मक वाक्य]

एयु देवदत्तु गर्गानुं सउ दंडइ असौ देवदत्तो गर्गान् शतं दण्डयति।
ए छाली गासि लिइ अजां नयति ग्रामम्।
ए कुंभतणु भारु हरइ असौ कुंभं भारं हरते। वहति ग्रामं भारं देवदत्तः। कर्षति शाखां ग्रामं देवदत्तः।
इनन्तेऽपि द्विकर्म्मका भवन्ति—
भोजयति पायसं छात्रं कश्चित्।
बोधयति बटुं ग्रन्थं गुरुः।
वाचयति श्लोकं पुत्रं पिता।
कर्म्मण्यपि द्विकर्म्मका भवन्ति—
दुह्यते गौः पयो गोपालेन।
याच्यते राजा गां विप्रेण।

रुद्ध्यते गौर्व्रजं गोपालकेन ।
पृच्छयते छात्रः पंथानं पान्थेन ।
अवचीयते वृक्षः फलानि पुरुषेण ।
अनुशिष्यते छात्रो धर्म्मं पण्डितेन ।
प्रार्थ्यते राजा ग्रामं गुरुणा ।
एवं सर्वत्र ।

पूर्वकर्त्तरि षष्ठी, कर्म्मणि षष्ठी, करणषष्ठी, संप्रदानषष्ठी, अपादानषष्ठी, संबंधिषष्ठी, निर्द्धारणषष्ठी, काले भावे षष्ठी, अधिकरणषष्ठी—एते षष्ठीभेदाः । सर्वत्र षष्ठीबाधकानि कारकाणि ।

तइं गामि जाइवउं गन्तव्यं ते ग्रामे ।
मइ घरि रहिवउं मम गृहे स्थातव्यम् ।
कृत्यानां कर्त्तरि वा षष्ठी—
एयु शास्त्र वाचणहारु असौ शास्त्राणां वाचयिता ।
एयु वेद पढणहारु असौ वेदानामध्येता ।
णकृतृचोः कर्मणि षष्ठी, इतरेषां द्वितीया ।
एयु अन्नि ध्रायु असौ अन्नानां तृप्तः ।
विसनरु काष्टि न ध्रायु अग्निः काष्ठानां न तृप्यति ।
पाणी भरिउं सरोवर जलस्य पूर्ण तडागम् ।
कोठउ कणि भरिउ कणानां पूर्णोऽयं कोष्ठकः ।
इत्यर्थे पूरिसुहितार्थानां करणे षष्ठी ।
एयु प्रधानरहि लांच भइसि दि असावमात्यस्य लञ्चया महिषीं ददाति ।
एयु पोष्यवर्गरहिं यावज्जीवु भरणु पोषणु दि असौ पोष्यवर्गस्य यावज्जीवं भरणपोषणं ददाति ।

ऐहिकफलार्थसंप्रदाने षष्ठी, पारलोके च चतुर्थी । यथा—कश्चित् ब्राह्मणेभ्यो गां ददाति, असौ ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां वितरति, इत्यर्थे पारलौकिके निःस्पृहे चतुर्थी ।

भूतंतउ प्राणीया भला भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः ।
प्राणीयां तु मतिजीवी भला प्राणिनां मतिजीविनः श्रेष्ठाः ।
इत्यर्थे अपादाने ।
निर्द्धारणे षष्ठी, सप्तमी च भवति—
मनुष्यमाहि ब्राह्मण श्रेष्ठ मनुष्येषु ब्राह्मणाः श्रेष्ठाः ।
गाईमाहि काली गाइ घणु दूधु गोषु कृष्णा संपन्नक्षीरा गौः ।
इति सप्तमी च भवति ।
बांभणनउं घरु ब्राह्मणस्य गृहम् ।
व्यासनउं ग्रामु व्यासस्य ग्रामः ।
इति संबंधिषष्ठी ।
लोक विक्रमादित्यु राउ स्मरइ लोको विक्रमादित्यराज्ञः स्मरति ।
एयु बोल्या प्रयोग संभारतउ श्लोक नींपजावइ असावुक्तानां प्रयोगानां स्मरन् श्लोकान् निष्पादयति ।
श्रीवासुदेव दैत्य मारइ श्रीवासुदेवो दैत्यानां निहन्ति ।
राउ बांभणना वयरि मारइ राजा विप्राणां वैरिणां घ्नाति (हन्ति) ।
इत्यर्थे स्मरणहिंसार्थानां प्रयोगे कर्मणि षष्ठी ।
एयु देवतणइ अर्थि फूलपत्री मेलइ असौ देवताभ्यः पुष्पपत्राणामुपस्कुरुते ।
एयु श्राद्धतणइ अर्थि चोषा मुग मेलइ असौ श्राद्धाय तन्दुलमुद्गानामुपस्कुरुते ।
इति करोतेः प्रतियत्ने कर्मणि षष्ठी ।

एयु दोरी सापु भणी जाणइ असौ रज्जुं सर्पस्य जानीते ।

एयु तेलु घीउ भणी जाणइ असौ तैलं घृतस्य जानीते ।

एयु एकलउ विदेशि जातउ भयतउ षीलउ पुरुषभणी जाणइ असौ एकाकी विदेशं व्रजन् भयात् कीलकं नरस्य जानीते ।

इत्यर्थे संभ्रान्तिज्ञाने जानातेः कर्म्मणि षष्ठी।

सुखदुःखाभ्यां करणे द्वितीया—

एयु सुखिहिं दीहाडा नींगमइ असौ सुखं दिनानि निर्गमयति ।

एयु दुःखिं द्रव्यु उपार्जइ असौ दुःखं द्रव्यमुपार्जयति ।

हेत्वर्थे तृतीया—

राउ लोकपाहिं करसणु करावइ राजा लोकैः कर्षणं कारयति ।

ब्राह्मणु शिष्यपाहिं पोथउं लिखावइ विप्रः शिष्येण पुस्तकं लेखयति ।

इति हेतु कर्त्ता ।

कालाध्वभावदेशानां कर्म्मसंज्ञा—

वैष्णवु रातिं च्यारइ पुहुर जागइ रजन्याश्चतुरो यामान् जागर्त्ति वैष्णवः ।

सात मसवाडा नइ वहइ सप्तमासान्नदी वहति ।

क्वापि कृतो हीने कर्म्मणि प्रधानक्रियापेक्षया द्वितीया न भवति—

तइं वयरी आणी बांधीवउ त्वया रिपुरानीय बध्यताम् ।

'विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम् ।'

ईणं हु व्यारीउ द्रव्यु लीधउ अनेनाऽहं विप्रतार्य द्रव्यं गृहीतः ।

उ० र० १०

गत्यर्थकर्मणि चतुर्थी वा—

ग्रामं गच्छति, ग्रामाय गच्छति असौ ।

कर्मप्रवचनीयैश्च । अनु-अभि-प्रति एते कर्म्मप्रवचनीयाः । एषां योगे द्वितीया ।

अनुशब्दः पृष्ठे अभिज्ञाने मध्ये सन्मुखे समीपे सहार्थे—

तु पूठि त्वामनु ।

पर्वतनइ अहिनाणि गामु वसइ पर्वतमनु नगरं वसति ।

आंबामाहि कोइलि वासइ सहकारमनु-कोकिला कूजति ।

वृक्ष सामहुं आभउं वृक्षमन्वभ्रपटलम् ।

देवालय कन्हलि तीर्थु छइ देवालयमनु तीर्थं तिष्ठति ।

तइसउं वात करइ त्वामनु वार्त्ता करोति।

गुरु साम्हु ऊठइ असौ गुरुमभ्युत्तिष्ठति।

ग्रामि दीहाडी प्रतिं एकु द्रम्मु लहइ ग्रामे प्रतिदिनं द्रम्मैकं लभते ।

एयु ब्राह्मणप्रतिं भक्ति बोलइ असौ प्रतिविप्रं भक्तिं जल्पति ।

उभयतः परितः सर्वतो योगे द्वितीया—

देवालय बिहुंगमे वड दीसइं देवालयमुभयतो न्यग्रोधो दृश्यते ।

घरपाषलि वाडि करइ गृहं परितो वृतिं करोति ।

गाम सविहुं गमा क्षेत्र वाव्यां ग्रामं सर्वतः क्षेत्राण्युप्तानि ।

उपर्यधोऽधीनां सामीप्य एव कर्म्मद्वित्वे—

ऊपरि ऊपरि गामु उपर्य्युपरि ग्रामम् ।

हेठलि हेठलि नगरु अधो अधो नगरम् ।

अदूरे एनोऽपञ्चम्याः, एनप्रत्ययान्तयोगे द्वितीया—

गाम दाहिण गमइ ढूकडी वाडी ग्रामं दक्षिणेन निकटं वाटिका ।

गाम बिहुं विच्चि नदी गामद्वयमन्तरा नदी।

नगरनइं उत्तर गमइं ढूकडउ पर्वतु नगरमुत्तरेण निकषा पर्वतः।

समयाहाधिगन्तरान्तरेण युक्ता द्वितीया–

तू कन्हलि त्वां समया।

एयु भुंडउ एनं धिग्।

तू पाषइ त्वामन्तरेण।

मूं पाषइ मामन्तरेण।

[समास प्रकरण]

द्विगुर्द्वन्द्वोऽव्ययीभावः कर्मधारय एव च।
तत्पुरुपो वहुव्रीहिः पट् समासाः प्रकीर्त्तिताः॥

पदे तुल्याधिकरणे विज्ञेयः कर्मधारयः।

(१) **जीणं समासि वि पद तुल्याधिकरण हुइं सु समासु कर्मधारयसंज्ञिक हुइ।**

नीलं उत्पलं–नीलोत्पलम्। उत्तमः पुरुपः–उत्तमपुरुपः।

[संख्यापूर्वो द्विगुरिति ज्ञेयः]

(२) **जीणइं समासि संख्या गणितु पूर्वपदि वोलाइ ते समास द्विगु जाणिवउ।**

सप्तऋपयः। पञ्चाम्राः। पञ्चानां मूलानां समाहारः–पञ्चमूली।

विभक्तयो द्वितीयाद्या नाम्ना परपदेन तु।
समस्यन्ते, समासो हि ज्ञेयस्तत्पुरुपस्य च॥

(३) **जीणं समासि द्वितीयालगइ छ विभक्ति आगिलइं पदि सरसी मेलीयि सु समासु तत्पुरुषु जाणिवउ।**

ग्रामं गतः– ग्राम गतः, नखैर्निर्भिन्नः–नखनिर्भिन्नः। ब्राह्मणाय देयं–ब्राह्मणदेयम्। मञ्चात्पतितः–मञ्चपतितः। राज्ञः पुरुपः–राजपुरुपः। अक्षेपु शौण्डः–अक्षशौण्डः।

स्यातां यदि पदे द्वे तु, यदि वास्य बहून्यपि
तान्यन्यस्य पदस्यार्थे बहुव्रीहिः समस्यते॥

(४) **जीणइं समासि बि पद अथ घणां पद अनेरा पद तणइ अर्थि मेलाइं तेयु समासु ब्रहुव्रीहि जाणिवउ; अनइ बहुव्रीहि समासि यद् शब्द छेहि प्रयुंजीइ।**

(क) **घणउ गुड छइ जीण लाडू** प्रभूतो गुडो यस्मिन् मोदके स प्रभूतगुडो मोदकः।

(का) **सदाचार बांभणु जीणइं गामि** सदाचारा विप्रा यस्मिन् ग्रामे स सदाचारविप्रो ग्रामः।

(कि) **घणां निर्मलां पाणी जीणं नदि** प्रभूतानि निर्मलानि उदकानि यस्यां नद्यां सा प्रभूतनिर्मलोदका नदी।

(की) **पामी विद्या जेहि पुरुषि** संप्राप्ता विद्या यैर्नरैः ते संप्राप्तविद्या नराः।

(कु) **निर्मलवुद्धि विप्र वैद्य सुभट अछइं जीण राज भुवनि** निर्मलबुद्धिका विप्रा वैद्याः सुभटा यस्मिन् राजभुवने तद् निर्मलबुद्धिविप्रवैद्यसुभटं राजभुवनम्।

(कू) **रुलीयायित कीधा जीणं वांभण** तोपिता विप्रा येन स तोपितविप्रः।

(के) **ऊगिउ वृक्षु जीणइं क्षेत्रि** प्ररूढो वृक्षो यस्मिन् क्षेत्रे तत् प्ररूढवृक्षं क्षेत्रम्।

(कै) **ढूकडी गंगा जीणइं देशि** आसन्ना गंगा यस्मिन् देशे स आसन्नगंगो देशः।

(को) **सरीपउं नामुं जेहनउं** सदृशं नाम यस्य स सनामा।

(कौ) **सरीषउं गोत्रु जेहनउं** सदृशं गोत्रं यस्य स सगोत्रः।

द्वन्द्वसमुच्चयो नाम्नोर्बहूनां वापि यो भवेत्।

(५) जीणं समासि बिहुं नामनउ समुच्चयु; अथ घणां नामनउ समुच्चयु ते समासु द्वंद्व जाणिवउ।

नरश्च नारायणश्च—नरनारायणौ। पीठं च छत्रं च उपानच्च पीठछत्रोपानहम्।

ब्राह्मणाश्च क्षत्रियाश्च वैश्याश्च शूद्राश्च ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः।

—चकारबहुलो द्वंद्वः।

पूर्वं वाच्यं भवेद्यस्य सोऽव्ययीभाव इष्यते॥

(६) जीणं समासि अव्ययपदसंयुक्त पूर्वपद वाच्यु हुइ सु समासु अव्ययीभाव जाणिवु।

गामनइ पाषइ अधिकरी प्रवर्तइ अधिग्रामं नरः।

सामीप्ये अव्ययीभावः—

घर कन्हलि वृक्षु उपगृहं वृक्षः।

वृक्ष कन्हलि घरु उपवृक्षं गृहम्।

बांभणनउ अभावु ब्राह्मणानामभावः अब्राह्मणम्।

माषीनउ अभावु मक्षिकानामभावो निर्म्मक्षिकम्।

अनुयोगः पश्चादर्थे—

बांभण पाछलि शिष्य अनुविप्रं शिष्यः।

राजा पाछलि सेना अनुराजं सेना।

वर पाछलि गीत गाती स्त्री अनुवरं गानगायन्त्यो नार्यः।

केदारसमीपि सरस्वती अनुकेदारं सरस्वती।

ये ये वडा ते ते मान लहइं यथावृद्धं मानं लभन्ते।

ये ये लहुडा ते ते यमिवा बइसइं यथालघु भोक्तुमुपविशन्ति।

एयु जेतला बांभण तेतला निर्वाप दिइ असौ यावद्विप्रं निर्वापान् ददाति।

जेतलां खांडां तेतला राजपुत्र यावत्खड्गं राजपुत्राः।

जेतला छात्र तेतला पोथां यावच्छात्रं पुस्तकानि।

ब्राह्मणसिउं जाइ सविप्रो याति।

साकरसिउं दूध पीइं सशर्करं पयः पिबति।

पुत्रसिउं यमइ सपुत्रो भुङ्क्ते।

अव्ययीभावे सहशब्दस्य सभावः।

पारे मध्ये अन्ते योगे द्वितीया—

समुद्रमाहि रत्न नीपजइं मध्येसमुद्रं रत्नानि निष्पद्यन्ते।

नइमाहि माछा हींडइं मध्येनदीं मत्स्या विचरन्ति।

पाणीनइ पारि देवालयु पारेजलं देवालयानि।

पाणीनइ छेहि वृक्षु अन्तेजलं वृक्षः।

तलाव विचि देहरउं अन्तस्तडागं देवगृहम्।

गाम विचि वडु मध्येग्रामं वटः।

परिशब्दो वर्ज्जने—

पाटण टाली किहां वसीइ परिपत्तनं कापि नोष्यते।

नास्तिक टाली कुण पापीउ परिनास्तिकं कोऽपि न पापी।

आङ् यावदर्थे मर्यादाभिविधौ—आ गृहं यावद्गृहम्, आ ग्रामं यावद्ग्रामम्।

एवं अव्ययीभाव समास नपुंसकलिंगीयु जाणिवउ।

अथ तद्धितप्रत्यया लिख्यन्ते—

मजीठ राती साडी माञ्जीष्ठा साटिका ।

हलद्रूआं वडां हारिद्राणि वटकानि । इति रागयोगात् अण् ।

मघाभियुक्ता रात्रिः दिनं मासो वा—माघी रात्रिः, माघं दिनम्, माघो मासः ।

फागुण मासतणी पूनिम फाल्गुनी पूर्णिमा ।

एवं सर्वत्र नक्षत्रयोगे अण् ।

लाष रातउ कांबलउ लाक्षिकः कम्बलः ।

.... लाक्षिकी साडी ।

इति लाक्षारक्तार्थे इकण् ।

कागनउं टोलउं वायसं वृन्दम् ।

अंगनानउं वृंदु आगनं वृन्दम् ।

पुरुषतणुं समवायु पौरुषम् ।

इति समूहे अण् ।

पुरुषात् समूहे एयण्—

पुरुषतणउ समूहु पौरुषेयम् ।

स्त्रीतणउ समूहु स्त्रैणं वृन्दम् ।

स्त्रीनी सभा स्त्रैणी परिषत् ।

स्त्रीनुं धनु स्त्रैणं धनम् ।

पुरुषनउं वृंदु पौंस्नं वृन्दम् ।

स्त्रीपुंसाभ्यां नण्-स्नणौ ।

उष्ट्र उक्ष राजन्य राजन् वत्स मनुष्याणां समूहेऽकण्—

ऊंटनउ समूहु औष्ट्रकम् ।

वृषभनउ समूहु औक्षकम् ।

रायतणउ समूहु राजन्यकं, राजकम् ।

वत्सनु समूहु वात्सकम् ।

मनुष्यनउ समूहु मानुष्यकम् ।

ग्रामजनवन्धुसहायानां समूहे तल्—

ग्रामतणु समूहु ग्रामता ।

जननउ समूहु जनता ।

वंधुनउ समूहु वन्धुता ।

सहायीयांनउ समूहु सहायता ।

गजात् समूहे घटा—

हाथीयांनउ समूहु गजघटा ।

धेनुहस्तिशब्दात् समूहे कण्—

धेनुनउ समूहु धैनुकम् ।

हाथीयांनउ समूहु हास्तिकम् ।

गुणतत्त्वभूतेन्द्रियविषयशब्दास्त्रकरणानां समूहे ग्रामो वक्तव्यः—

गुणनु समूहु गुणग्रामः । एवं तत्त्वग्रामः, भूतग्रामः, इंद्रियग्रामः, विषयग्रामः, शब्दग्रामः, अस्त्रग्रामः, करणग्रामः, केशशब्दात् समूहे हस्तपक्षपाशा भवन्ति—

केशनउ समूहु केशहस्तः, केशपक्षः, केशपाशः ।

तरुपद्मिनीकुसुदकमलादिभ्यः समूहे खण्डो वक्तव्यः । समस्तवृक्षतृणगुल्मजातिभ्योऽपि—

तरूनउ समूहु तरुखण्डम् । [एवं] पद्मिनीखण्डम्, कुमुदखण्डम्, कमलखण्डम् ।

कर्म्मदूर्वादितृणादिभ्यः काण्डो वक्तव्यः—

कर्मनउ समूहु कर्मकाण्डम् ।

दूर्वानउ समूहु दूर्वाकाण्डम् ।

तृणानु समूहु तृणकाण्डम् ।

आदिग्रहणात्—

अंधारानउ समूहु तमस्काण्डम् ।

गणिकानां समूहे यण्—

गणिकानु समूहु गाणिक्यम् ।

अश्वानां समूहे ईयः–

अश्वनउ समूहु अश्वीयः ।

प्रमाणे अर्थे द्वयसट् दघ्नट् मात्रट् प्रत्यया भवन्ति–

कडि समा गहूं कटिदघ्ना गोधूमाः ।

गूडां समी षाइ जानुद्वयसी परिखा ।

कांध समुं पाणी स्कन्धद्वयसं जलं स्कन्धमात्रं वा ।

पदन्त्यात् इति अदितिभ्यो यण् । दैत्यानां समूहो दैत्यम्, आदित्यानां समूह आदित्यम् ।

एयु व्याकरणु जाणइ इत्यर्थे वैयाकरणः ।

सूत्रपुराणन्यायमीमांसेतिहासवेदेभ्यो वेत्त्य-धीतेऽर्थे इकण्–

सूत्रु पढइ जाणइ असौ सूत्रिकः । एवं पौराणिकः, नैयायिकः, मैमांसिकः, ऐतिहासिकः, वैदिकः ।

सुवर्णनां आभरण सौवर्णान्याभरणानि ।

रूपानां पात्र राजतानि पात्राणि ।

कर्प्पासनां वस्त्र कार्प्पासानि वस्त्राणि ।

हरिणनउं चांबडउं हारिणं चर्म्म ।

मृगतणउं मांसु मार्ग्गं मांसम् ।

वाघतणां पद वैयाघ्राणि पदानि ।

तस्येदमर्थेऽण् ।

विकृतिवाचिनः प्रकृतावभिधेयायां हितेऽर्थे ईयो यश्च–

अंगाररहिं हितूउं काष्ठ अंगारीयाणि काष्ठानि ।

पीला योग्य हितूउं लाकडउं शङ्कव्यं दारु ।

वाणरहिं हितूउ शरकड इषव्यः शरः-काण्डः ।

कूडीरहिं हितूउं चर्म कुतव्यं चर्म्म ।

प्रासाद योग्य हितूई ईंट प्रासादीया इष्टिकाः ।

भाणा योग्य हितूउं कांसउं भाजनीयं कांस्यम् ।

गाडा योग्यु हितूउं लोहडउं शाकटीयं लोहम् ।

करवतरहिं हितूउं चर्म्मु ... ... ।

विसनररहिं हितूउं काष्ठ कृशानव्यं काष्ठम् ।

षांड योग्य हितूई सेलडी खण्डव्या इक्षुः ।

इति उवर्णान्तशब्दात् यः हितेऽर्थे ।

अन्यत्र ईयः–

वत्सरहिं हितूउ वत्सीयः ।

घोडारहिं हितूउ अश्वीयः ।

पुरुषु राजानीं परि दीसइ इत्यर्थे उप-माने वति, पुरुषो राजवत् दृश्यते ।

चपलपणउं इत्यर्थे तत्त्वौ भावे चपलता, चपलत्वं, चापल्यम् ।

अभिव्याप्तौ संपद्यतौ च सातिर्वा देये त्रा च–

राजा गामु बांभणायतुं करइ राजा ग्रामं श्रोत्रियसात्करोति ।

देव आयतुं करइ देवत्राकरोति ।

वरुआयती कन्या संपजइ वरत्रासंप-द्यते कन्या ।

क्षेत्रु बिमणइ त्रिमणइ [करइ] द्विगुणा-करोति त्रिगुणाकरोति क्षेत्रं–इत्यर्थे डाच् ।

दाडिमु नींकोलइ निःकुला करोति दाडि-मम् ।

मृगु वींधइ सपत्राकरोति मृगम् ।

महिषु वाणि आहणइ निष्पत्राकरोति महिषम् ।

कणनउ संचकारु आपइ सत्याकरोति कणान् ।
आंषिं ग्रहियि रूपु चाक्षुषं रूपम् ।
कानि सांभलीयि शब्दु श्रावणः शब्दः ।
पाहणि पीस्या सातू दार्षदाः सक्तवः ।
ऊखलि षांड्या मुग औदूखला मुद्गाः ।
घोडे वहीयि रथु आश्वो रथः ।
च्युहु वहीयि गाडुं चातुरं शकटम् ।
चौदसिं दीसइ राक्षसु चातुर्दशं रक्षः । इत्यर्थेऽण् ।
गामेचउ ग्राम्यः, ग्रामेयः, ग्रामीणः ।
नदीनउं जलु नादेयं जलम् ।
दक्षिणदिशिउ दाक्षिणात्यः ।
पश्चिमीउ पाश्चिमात्यः ।
पूर्वीयु पौरस्त्यः ।
अहांनउ इहत्यः ।
तिहांनउ तत्रत्यः ।
किहांनउ कुत्रत्यः ।
यहांनउ यत्रत्यः ।
.... पार्वतीयानि जलानि
वर्षाकालनउ मेघु प्रावृषेण्यो मेघः ।
शरत्कालनउ तिडकउ शारदिक आतपः ।
हैमंतनु वायु हैमनः पवनः ।
सांझूणउं सायंतनम् ।
घणदीहुं चिरन्तनम् ।
घणे दिहाडे आव्यु चिरेणागतः ।
थोडे दिहाडे आविउ अचिरेणागतः ।
वडी वार लगाडइ विलम्बते ।
साहइ अवलम्बते ।
म दीधु, म लीधु, म कीधु आक्षेपनायोगे शतृडानशौ ।
मा योगेऽन्याक्रोशे इति सूत्रम्, मा कुर्वन् मा कुर्वाणः, मा ददत्, मा ददानः ।

जु करत, जु लेत, जु देत इत्यर्थे क्रियातिपत्तिः ।
यद्-यदि-चेद्योगे क्रियातिपत्तिः । पाते वा सप्तमी ।
जु किमइ हुं घरि जात, तु एयु मइं गामि न मोकलत यदि अहं गृहं यायां तदयं मां ग्रामं न प्रस्थापयेत् ।
जु किमइ एयु गामि न जात, [तु] चोरु बलद न लयेत यदि असौ ग्रामं न गच्छेत् ततश्चौरो बलीवर्दान्न हरेत् ।
जे किमइ एयु [गहुं?] लेत, तु द्राम न पडत असौ गोधूमाश्चेद् गृह्णीयात् द्रम्मास्ततो न ।
अतीते स्मृत्युक्तौ अभिज्ञा भविष्यन्ती—
जाण अहो पुरुष आपणि लहुडा थ्या [......] वस्त्र पहिरता स्मरसि पुरुष वयं लघुत्वे बहुमूल्यानि वासांसि परिधास्यामः ।
पुरअहे दीहाडे मिष्टान्न यमता [....] मिष्टान्नं भोक्ष्यामः ।
ननु शब्दयोगे पृष्टप्रतिवचनोत्तरे अद्यतनी पूर्वादेः उत्तरपदे वर्त्तमानाभावात् । हस्तलेख्यं अकार्षीत् । ननु करोमि भोः । कथं ब्राह्मणं शूद्रान्नं भोजयेत् । अन्यायमेव । क्रियासमभिहारे सर्वत्र हि-स्वौ भवतः ।
ब्राह्मण यमिसिं यमिसिं ब्राह्मणा भुंक्ष्व भुंक्ष्व ।
तम्हि कहउ कहउ आपणी वात यूयं कथय कथय निजां वार्त्ताम् ।
अम्हि गामि जास्युं जास्युं वयं ग्रामं गच्छ गच्छ (?) ।
कालपुरुषत्रयेऽप्येवम् । क्रियासमुच्चयेऽप्येवम् । नाम्न आत्मेच्छायायां यन् काम्य च गृहीते । गृहकाम्यति ।

दासी वहूवत् मानइ वधूयति दासीं नरः।

एयु लहुडउ लघीयान् लघिष्ठः। इत्यर्थे गुणादिष्टे गुण्यसौ वा पृथ्वादिभ्यो भावेऽर्थे इमनु वा।

एयु अति पुहुलउ असौ प्रथीयान्, प्रथिष्ठः, प्रथिमा।

एयु अति कूंअलउ असौ म्रदीयान्, म्रदिष्ठः, म्रदिमा। एवं लघिमा अणिमा महिमा वरिमा गरिमा द्रढिमा कालिमा मलिनिमा।

[1]इष्ठ ईयस् ईमनु वा प्रत्यये प्रशस्यस्य श्रो[1] भवति। वृद्धस्य च ज्य[2]। अन्तिकबाढयोर्नेद-साधौ[3]। युवाल्पयोः कन्य[वौ][4]। स्थूलदूरयुवक्षि-प्रक्षुद्राणां अन्तस्थादेर्लोपो गुणश्च[5]। वहोर्लोपि भू च[6]। प्रियस्थिरस्फिरोरुगुरुवहुलतृप्रदीर्घह्रस्ववृद्ध-वृन्दारकाणां प्रस्थस्फवरगबंहत्रपूद्राघह्रस्वर्षवृन्दाः[7]।

तद्वदिष्ठेमेयस्य बहुलं प्रत्ययादिलोपश्च।

एयु अति प्रशस्यु असौ श्रेयान्, श्रेष्ठः, श्रेमा।

एयु अति वडउ असौ ज्यायान्, ज्येष्ठः, ज्यायिमा।

एयु अति ढूकडउ असौ नेदीयान्, नेदिष्ठः, नेदिमा।

एउ अति गाढउ साधीयान्, साधिष्ठः, साधिमा।

एउ अति लहुडउ अति थोडउ असौ कनीयान्, कनिष्ठः, कनिमा।

एयु अति मोटउ असौ स्थवीयान्, स्थविष्ठः, स्थविमा।

एयु अति वेगलउ असौ दवीयान्, दविष्ठः, दविमा।

एयु अति लहुडउ असौ यवीयान्, यविष्ठः, यविमा।

एयु अति वहिलउ असौ क्षेपीयान्, क्षेपिष्ठः, क्षेपिमा।

एयु अति क्षुद्र असौ क्षोदियान्, क्षोदिष्ठः, क्षोदिमा।

एयु अति घणउ असौ भूयान्, भूयिष्ठः, भूयिमा।

एयु अति प्रियु प्रेयनुं हुयिवुं असौ प्रेयान्, [प्रेष्ठः], प्रेमा।

एयु अति स्थिरु असौ स्थेयान्, स्थेष्ठः, स्थेमा।

एयु [अति] गरूउ वरीयान्, वरिष्ठः, वरिमा। गरीयान्, गरीष्ठः, गरिमा।

एयु अति वहुलु असौ वंहीयान्, वंहिष्ठः, [वंहिमा]।

एयु अति लज्जालु असौ त्रपीयान्, त्रपिष्ठः, [त्रपिमा]।

एयु अति दीर्घु दीर्घनउं हुयिवउं असौ द्राघीयान्, द्राघिष्ठः, द्राघिमा।

एयु ह्रस्वु असौ ह्रसीयान्, ह्रसिष्ठः, ह्रसिमा।

अति वृद्धु वर्षीयान्, वर्षिष्ठः।

एकस्वराणामदन्तानां च आपागमः।

एयु प्रशस्यु कहइ......।

...... असौ श्रापयति।

---

[1]एतद्वाक्यसंवादकानि पाणिनिव्याकरण-गतान्यमूनि सूत्राणि—

१ प्रशस्यस्य श्रः। ५–३–६०.

२ वृद्धस्य च। ५–३–६२.

३ ५–३–६३.

४ युवाल्पयोः कनन्यतरस्यां ५–३–६४.

५ स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादिपरं पूर्वस्य च गुणः। ६–४–१५६.

६ वहोर्लोपो भू च वहोः। ६–४–१५८.

७ प्रियस्थिरस्फिरोरुवहुलगुरुवृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्बंहिगर्वर्षित्रप्द्राघिवृन्दाः, ६–४–१५७.

एयु वडु कहइ असौ स्थापयति ।
एयु ढूकडउ कहइ असौ नेदयति ।
एयु गाढउ कहइ असौ साधयति ।
एयु तरुणउ कहइ असौ यवयति कनयति ।
अतिहिं हुइ बोभूयते, वोभूवीति, बोभोति ।
अतिहिं जाइ, वली वली जाइ जङ्गम्यते, जङ्गमीति, जङ्गन्ति ।
अतिहिं ज्वलइ जाज्वल्यते, जाज्वलीति, जाज्वलित ।
अतिहिं हसइ जाहस्यते, जाहसीति, जाहस्ति ।
अतिहिं रहइ तेष्ठीयते, तास्थायते ।
अतिहिं देषइं दरीदृश्यते, दरीदृशीति, दरीदृष्टि ।
रीस्थाने लुकि रिरौ वा दरिदृष्टि, दर्दृष्टि ।
अतिहिं नाचइ नरीनृत्यते, नरीनृतीति, नरीनर्त्ति, नर्नर्त्ति ।
अतिहिं वरसइ वरीवृपीति, वरीवृष्टि, वरिवर्ष्टि, वर्वर्ष्टि ।
अतिहिं पूछइ परीपृच्छ्यते, परीपृच्छीति परिपर्ष्टि, पर्पर्ष्टि ।
अतिहिं जाइ सरीस्रियते, सरीसरीति, सरीसर्त्ति, सर्सर्त्ति ।
अतिहिं मरइ मरीम्रियते, मरीमरीति, मरीमर्ति, मर्मर्त्ति ।
अतिहिं लिइ नेनीयते, नेनेति ।
अतिहिं पचइ पापच्यते, पापचीति, पापक्ति ।
अतिहिं पढइ पापठ्यते, पापठीति, पापट्टि ।
अतिहिं भणइ वंभण्यते, वभणीति, वभण्टि ।
अतिहिं प्रेरइ चेक्षिप्यते, चेक्षिपीति, चेक्षिप्ति ।
अतिहिं लिखइ वावश्यते, वावशीति, वावष्टि ।
अतिहिं मूकइ मोमुच्यते, मोमुचीति, मोमोक्ति ।
अतिहिं सींचइ सेसिच्यते, सेसिचीति, सेसेक्ति ।
अतिहिं छांडइ तात्यज्यते, तात्यजीति, तात्यक्ति ।
अतिहिं दहइ दन्दह्यते, दन्दहीति, दन्दग्धि ।
अतिहिं जपइ जञ्जप्यते, जञ्जपीति, जञ्जप्ति ।
अतिहिं दोहइ दोदुह्यते, दोदुहीति, दोदोग्धि ।
अतिहिं गात्रु नामइ जञ्जभ्यते, जञ्जभीति, जञ्जब्धि ।
अतिहिं रमइ रंरम्यते, रंरमीति, रंरन्ति ।
अतिहिं नमइ नंनम्यते, नंनमीति, नंनन्ति ।
अतिहिं तरइ तेतीर्यते, तेतरीति, तेतर्ति ।
अतिहिं षिसइ शनीश्रस्यते, शनीश्रसीति, शनीश्रस्ति ।
अतिहिं पडइ पनीपत्यते, पनीपतीति, पनीपत्ति ।
अतिहिं लाइ पनीपद्यते, पनीपदीति, पनीपत्ति ।
अतीहिं सूकइ चनीस्कद्यते, चनीस्कन्दीति, चनीस्कन्ति ।
अतिहिं चूंटइ, विणइ, चिणइ चेकीयते, चेकीयति, चेकेति ।

हुइवा वांछइ बुभूषति ।
रहिवा थाकिवा थाइवा [वांछइ] तिष्ठासति ।
जाइवा वांछइ जिगमिषति ।
देषिवा ,, दिदृक्षति ।
बलिवा ,, जिज्वलिषति ।
हसिवा ,, जिहसिषति ।
लेवा ,, निनीषति ।
पचिवा ,, पिपक्षति ।
पढिवा ,, पिपठिषति ।
लाषिवा ,, चिक्षिप्सति ।
भणिवा ,, बिभणिषति ।
पइसिवा ,, प्रविविक्षति ।
मेल्हिवा ,, मुमुक्षति ।
सीचिवा ,, सिसिक्षति ।
छांडिवा ,, तित्यक्षति ।
दहिवा ,, दिधक्षति ।
तरिवा ,, तितीर्षति ।
सांभलिवा ,, शुश्रूषति ।
चालिवा ,, चिचलिषति ।
फिरिवा ,, बिभ्रमिषति ।
लिखिवा ,, लिलिखिषति ।
चरिवा ,, चुचूर्षति ।
पूछिवा ,, पिप्रच्छिषति ।
धरिवा ,, दिधरिषति ।
रमिवा ,, रिरंसति ।
मारिवा ,, जिघांसति ।
नाहिवा ,, सिष्णासति ।
कहिवा ,, चिख्यासति ।
बोलिवा ,, विवक्षति ।

वायिवा वांछइ विवासति ।
आश्रयिवा ,, आशिश्रीषति ।
सूयिवा ,, शिशयिषति ।
दोहिवा ,, दुधुक्षति ।
चाटिवा ,, लिलिक्षति ।
बीहिवा ,, बिभीषति ।
लाजिवा ,, जिह्रीषति ।
जूझिवा ,, युयुत्सति ।
सुकिवा ,, शुशुक्षति ।
नमिवा ,, निनंसति ।
खणिवा ,, चिखास(चिखनिष)ति ? ।
सूंघिवा ,, जिघ्रासति ।
पीवा ,, पिपासति ।
जीपिवा ,, जिगीषति ।
जीविवा ,, जिजीविषति ।
मरिवा ,, मुमूर्षति ।
देवा ,, दित्सति ।
धरिवा ,, धित्सति ।
आरंभिवा ,, आरिप्सति ।
लहिवा ,, लिप्सति ।
सेकिवा ,, सिसिक्षति ।
पडिवा ,, पिपतिषति ।
पामिवा ,, ईप्सति ।
फाडिवा ,, बिभित्सति ।
जमिवा ,, बुभुक्षति ।
लेवा ,, जिघृक्षति ।
पूजिवा ,, अर्चिचिषति ।
निकोलिवा वांछइ निश्चुकोपिषति ।

रोयिवा वांछइ रुरुदिषति ।
जाणिवा ,, विविदिषति ।
चोरिवा ,, मुमुषिषति ।
चिणिवा ,, चिचीषति ।
चूटिवा ,, ,, ।
वीणिवा ,, ,, ।
तुणिवा वांछइ लुलूषति ।
पवित्रु करवा वांछइ पुपूषति ।
स्तविवा वांछइ तुष्टूषति ।
स्मारिवा वांछइ सुस्मूर्षति ।

करिवा वांछइ चिकीर्षति, चिकीर्षितवान्, चिकीर्षन्, चिकीर्षमाणः, चिकीर्षिता, चिकीर्षितुम्, चिकीर्षणाय, चिकीर्षितुकामः, चिकीर्षितुमनाः, चिकीर्षिता, चिकीर्षकः, चिकीर्षितव्यम्, चिकीर्षणीयम्, चिकीर्ष्यम् ।

अतिहि होउ बोभूयितः, बोभूयितवान्, बोभूयमानम्, बोभूयते, बोभूयमानः, बोभूयिता, बोभूयितुम्, बोभूयितुकामः, बोभूयितुमनाः, बोभूयिषति, बोभूयितव्यम् । एवं सर्वत्र ।

॥ अविज्ञातविद्वत्संगृहीतानि औक्तिकपदानि समाप्तानि ॥

॥ शुभं भवतु ॥

*

उक्तिरत्नाकरादि अन्तर्गत शब्दानुक्रम ।



ग

छ

न

फ

य

व

ह

* * *